गुरु गोविन्द सिंह प्रणीत
ज़फ़रनामा
विजयपत्रम्
ظفرنامہ
ZAFARNAMA
A Saint's reply to an Emperor
The Classic Sikh Literature
in four languages
Original Text in Persian Verse
Transliteration and Translation in HINDI
and verse to verse translation
in
SANSKRIT & ENGLISH
( DUAL LANGUAGE SYSTEM )
अनुवादक
आचार्य धर्मेन्द्रनाथ
भूमिका
डा० ज़ाकिर हुसैन
निखिल भारतीय भाषापीठ प्रकाशन, जयपुर
Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

# ज़फ़रनामा ظفرنامہ
# विजयपत्रम् ZAFARNAMA

A Saint's reply to an Emperor
The Classic Sikh Literature
in four languages

Original Text in Persian Verse
Transliteration and Translation in HINDI
and verse to verse translation
in
SANSKRIT & ENGLISH

( DUAL LANGUAGE SYSTEM )

अनुवादक
आचार्य धर्मेन्द्रनाथ

भूमिका
डा० ज़ाकिर हुसेन

निखिल भारतीय भाषापीठ प्रकाशन, जयपुर

गुरु गोविन्द सिंह फाउन्डेशन राजस्थान यूनिट के सहयोग से–
**निखिल भारतीय भाषापीठ,**
चौड़ा रास्ता, जयपुर–३ द्वारा प्रकाशित



**मूल्य २० रुपया अथवा ३ डालर मात्र**

प्रथम संस्करण : ३,००० प्रतियां

( प्रथम संस्करण की समस्त आय निखिल भारतीय भाषापीठ के प्रस्तावित भवन निर्माण कोष के निमित्त संकल्पित है। )

मुद्रक :
रवि मुद्रक एवं प्रकाशक सहकारी समिति लि०
फिल्म कॉलोनी, जयपुर–३

Chandigarh
19.6.1970.

राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली-४
**Rashtrapati Bhawan, New Delhi-4**
जुलाई १७, १९६७

आचार्य धर्मेन्द्र जी ने, कुछ दिन हुए, मुझे अपना वह काम दिखाया था जो उन्होंने गुरु गोविन्द सिंह जी के "ज़फरनामा" पर किया है। आचार्य जी ने फ़ारसी शेरों का अनुवाद बड़ी ख़ूबी से हिन्दी में भी किया है और संस्कृत में भी। बड़े विद्वान् भी इससे लाभ उठा सकेंगे और हम जैसे संस्कृत न जानने वाले भी।

मुझे उम्मीद है कि आचार्य जी की इस बेहतरीन और अनमोल किताब की हर हिन्दी भाषा-भाषी दिल से क़दर करेगा और हमेशा इनका आभारी रहेगा कि इन्होंने एक ऐसी अच्छी चीज़ से हमारी क़ौमी भाषा को मालामाल किया।

ज़ाकिर हुसैन

# गुरु गोविन्द सिंह

शिष्य और शास्ता (गुरु) का सम्बन्ध चिरन्तन मानव सभ्यता के प्रादुर्भाव से आरम्भ होता है। शिष्य अपने शास्ता का शासन मानता है– परिश्रम और साधना करता है और गुरु के माध्यम से अपने परम लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। इसलिये शिष्य का स्थान शास्ता से पहले आता है। शिष्य ही शास्ता को महान् बनाता है और अपनी श्रद्धा से उसको देवत्व प्रदान करता है। शिष्य की इस महानता के दर्शन हमको तब होते हैं जबकि दशम गुरु गोविन्दराय स्वयं अपने शिष्यों (पंजप्यारों) से अमृत-पान कराने के लिये उनके सामने शिष्य भाव से विनीत होते हैं और शिष्य उनका नया नामकरण करते हैं 'गोविन्दसिंह।" इस प्रकार दशम गुरु ने दिखा दिया कि वास्तव में जो स्वयं शिष्य नहीं बना वह शास्त्रहीन है और उसे शास्ता होने का अधिकार नहीं है।

शिष्य धर्म अथवा सिख धर्म प्रारम्भ होता है ३० मार्च सन् १६९९ से। इस दिन वैशाखी का पर्व था और अपने गुरु के दर्शन करने शिष्य और भक्त लोग आनन्दपुर में आने लगे। यह दिन श्रद्धा और भक्ति का दिन था और श्रद्धालु गृहस्थ लोग आज के दिन अपने गुरु को अपनी श्रद्धा के अनुसार अन्न, धन, वस्त्र आदि के उपहार देकर और गुरु से आशीर्वाद लेकर विदा हो जाते थे। गुरु नानकदेव के समय से जिन संगतों की परम्परा चली आ रही थी उनमें वैशाखी की संगत सबसे बड़ी और समारोह पूर्ण हुआ करती थी।

कोई और अवसर होता तो यह संगत भी उपहारों और आशीर्वादों के आदान-प्रदान के पश्चात् हंसी खुशी समाप्त हो जाती। लेकिन आज

का दिन पहली संगतों से भिन्न था। आज के दिन को इतिहास में अमर होना था। यह वह दिन था जिसके लिये पहले नौ गुरुओं ने दो सौ वर्षों तक तैयारी की थी। इसी शुभ दिन की तैयारी के लिये गुरु तेगबहादुर ने अपना सिर दिया था। और इसी पवित्र दिन की तैयारी में अन्य गुरुओं ने अपनी जान की बाज़ी लगाई थी।

यह तैयारी क्या थी और इसका क्या उद्देश्य था? हज़ारों सालों से पंजाब शेष भारत की सांस्कृतिक चेतना का अग्रदूत रहा था। वैदिक काल का ऋषि जब अपनी सप्तसिन्धुओं (काबुल, हेलमन्द, सतलुज, व्यास, रावी, चिनाव, झेलम) की भूमि को निहारता था तो उसे उसमें अपनी माता के दर्शन होते थे। वैदिक ऋषि एक परमात्मा को अपना पिता मानता था और भूमि को अपनी माता। न उसके लिये कोई छोटा था और न कोई बड़ा।

समय बदला और वेदों के उपदेश भारतीय भूल गये। उनमें जाति-पांति, ऊंच-नीच आदि की बीमारियाँ पैदा हो गईं। इस्लाम के प्रादुर्भाव के बाद जब सप्तसिन्धु प्रदेश में से काबुल और हेलमन्द नदियों की घाटी का अफगान प्रदेश कट गया और पांच नदियों वाला मैदानी पंजाब प्रदेश अलग हो गया तब बाहर से आने वाला हर आक्रमणकारी पंजाब को रोंदने लगा। पंजाब असंगठित था और उसकी इज्जत खुले बन्दों उछाली जाती थी। न कोई उनकी कहीं दाद सुनता था और न कोई उनका नेता था। ऋषिकल्प आदि गुरु नानकदेव ने यह दुर्दशा देखकर पंजाब को एक परमात्मा की उपासना का उपदेश दिया और बताया कि वह अनादि और अजन्मा है। जाति-पांति झूठी है। न कोई बड़ा है और न कोई छोटा। परमात्मा की नज़रों में सब बराबर हैं।

ज़मीन तैयार न थी। लोगों ने उपदेश सुने। कुछ ने आचरण भी किया—शिष्यत्व भी स्वीकार किया लेकिन दुर्दशा न टली। उनके उपरान्त गुरु अंगददेव अवतीर्ण हुए। आपने गुरुमुखी लिपि का आविष्कार

किया और इस प्रकार उस प्रभाव से जनमानस को मुक्त किया कि ब्राह्मण ईश्वर का मुख है और संस्कृत ईश्वर की वाणी। लेकिन इतने पर भी जाति-पाँति और ऊंच-नाच कम न हुयी। तृतीय और चतुर्थ गुरुओं ने चारों दिशाओं में अनेक मसन्द या धर्म प्रचारक भेजे और यही सन्देश सब को सुनवाया कि परमात्मा के राज्य में न कोई छोटा है और न बड़ा। लोगों में चेतना तो आई लेकिन संगठन का लक्ष्य अभी दूर था। चतुर्थ गुरु रामदास ने अमृतसर में उपासना के लिये स्वर्ण मन्दिर बनवाया और पांचवें गुरु अर्जुनदेव ने गुरुवाणी का संग्रह और सम्पादन किया। लेकिन अभी तक पन्थ संगठित होकर जालिमों से टक्कर लेने में असमर्थ था। छटवें गुरु हरगोविन्द ने अपने शिष्यों को शस्त्र धारण करने का उपदेश दिया। मुग़लों से उनके सिखों ने लोहा भी लिया। लेकिन संगठित होकर विदेशियों का हटाना अभी दूर की बात थी। सातवें और आठवें गुरु हर-राय और गुरु हरकिशन भी शिष्य संगठन को वैसा नहीं बना सके जैसा बनाने की उस युग में अपेक्षा थी। विदेशी शासन के अत्याचार बढ़ते गये। हिन्दुओं को बेकसूर पकड़वा मंगाया जाता था और झूठे आरोप लगाकर खुले आम कहा जाता था कि या तो अपना धर्म छोड़कर इस्लाम कबूल करो या मौत कबूल करो। मरने के डर से जो अपना धर्म छोड़ देते उन्हें पुरस्कार दिया जाता और जो धर्म छोड़ने से इन्कार करते उन्हें जलील होकर कुत्ते की मौत मरना पड़ता। हिन्दू अपने घर में ही परायों के द्वारा सताये जा रहे थे। समाज की दशा एक ऐसे ग़ाफ़िल की सी थी जो सताया जाता था लेकिन जिसे होश नहीं आता था। ज़माने के थप्पड़ उस पर पड़ते थे लेकिन वह संगठित नहीं होता था। ऐसे समय जरूरत थी एक ऐसी चोट की जिससे बिखरा हुआ समाज एक हो सके।

समाज पर यह चोट पड़ी नवें गुरु तेग बहादुर के बलिदान के द्वारा। काश्मीर के सताये हुए हिन्दुओं ने गुरुजी को अपना रक्षक मानकर आनन्दपुर साहब में उनसे फरियाद की कि उनको अपना धर्म छोड़ने के लिये

शासन की ओर से लगातार प्रलोभन और धमकियां दी जा रही हैं। गुरु तो सर्वज्ञ थे। समझ गये कि बलिदान का समय अब आ गया है। जब तक कोई समर्थ आत्मा अपना पुनः बलिदान नहीं देगी तब तक अत्याचारी के विरुद्ध लोकमत नहीं जागेगा। आपने अपने तेजस्वी पुत्र के पूछने पर कहा भी कि "धर्म संकट में है। इसके लिये किसी वीर को अपना बलिदान देना होगा।" भारत का भावी निर्माता उस समय केवल नौ वर्ष का बालक था। उसने भविष्य द्रष्टा की भाँति कहा—"आपसे बढ़कर वीर कौन होगा।" सुनकर गुरु ने अपना कर्तव्य स्थिर कर लिया।

गुरु ने सिर दिया पर सार नहीं दिया यह देखकर हिन्दू समाज में चेतना की लहर दौड़ गयी। परम शोक के समय आत्म-चिन्तन के क्षण ही मानव जीवन में इन्क़लाब लाते हैं। हिन्दुओं को इस बलिदान से यह बात तो समझ में आई कि उनका धर्म किसी से कम नहीं है। तभी तो गुरुजी परायी जन्नत को हेच समझकर अपने धर्म और संस्कृति की रक्षा के लियेमौत को गले लगा गये। लेकिन समाज को एक बात और सीखनी थी कि दुनिया के सामने बराबरी चाहने वालों को आपस में भी बराबर होना चाहिये। जिनमें आपस में ऊँच–नीच रहेगी वे कभी दूसरे के सामने बराबरी के हक़दार नहीं हो सकते।

दशम गुरु गोविन्दसिंह स्वयं तो इस सत्य का साक्षात्कार कर चुके थे, किन्तु समाज को इससे कैसे परिचित कराया जाय! और समाज भी कैसा, जो हजारों साल से रूढियों में बंधा था। जहां जन्म लेते समय ही कोई आदमी कुल परम्परा से सबका पूज्य बन जाता था तो उसी दिन उसके साथ ही जन्म लेने वाला उसका साथी सारी उमर भर नीच कहलाता था। यह एक ऐसी व्यवस्था थी जिसे धर्म का समर्थन भी प्राप्त था। इस समाज की रचना में दोष था—यह अन्याय पर आधारित थी। इस व्यवस्था में किसी को जरूरत से ज्यादा अधिकार मिले हुए थे और किसी को उसके मानवीय अधिकारों से अकारण ही वंचित कर दिया गया

था । चूंकि यह व्यवस्था पैदाइश के ग्राधार पर थी इसलिये इससे समाज में बँधापन ग्रौर सड़ापन ग्रा गया था । किसी ग्रादमी को ग्रपना पेशा या जाति बदलने का ग्रधिकार नहीं था । इसलिये उसे ग्रपने ही पेशे में लगे रहना पड़ता था । ब्राह्मरण का बच्चा बिना पढ़े भी पैदाइश के ग्राधार पर सबका ग्रादर पाये तो वह क्यों पढ़े ? ग्रौर शूद्र का बालक यदि पढ़ भी जाये तो भी उसे वह सम्मान नहीं मिल सकता था जो कि बिना पढ़े ऊंची जाति वाले बालक को मिलता था । परिणाम यह होता था कि एक दूसरे से ग्रागे बढ़ने की होड़, जो कि दुनिया में उन्नति की पहली शर्त है, इस व्यवस्था के ग्रन्दर खत्म हो जाती थी । हर एक जाति ग्रपने ही ग्रन्दर सिमट गयी थी । लड़ने का काम क्षत्रिय का था । यह काम समाज के ग्रन्दर एक छोटी सी जाति को सौंप दिया गया था । जब विदेशो हमलावर हमला करते तो इस जाति के लोग उनका मुकाबला करने के लिये निकलते थे । लेकिन विदेशियों को हमारा मुल्क फतह करने में कभी कठिनाई नहीं हुई । क्योंकि बाहर से ग्राने वालों के समाज में तो सभी लड़ते थे जबकि हमारे यहां सिर्फ क्षत्रिय ही लड़ सकते थे । शेष ब्राह्मरण बनिया या शूद्र को लड़ने से कोई सरोकार न था । बाहरी हमले के समय ब्राह्मरण सिर्फ रामदुहाई दे सकता था । हमारा बनिया दोनों पक्षों से व्यापार करता था । शूद्र दोनों की खिदमत करने को तैयार था । चूंकि विदेशी समाज में ऊंचनीच का कोई भेद नहीं था । इसलिये जिन जातियों को हमारे समाज की व्यवस्था में न्याय नहीं मिलता था वह हमलावरों के धर्म में दीक्षित होकर हमारे समाज को ज्यादा से ज्यादा नुकसान पहुंचाती थीं ।

तो यह थी भारतीय समाज की हालत जिसमें दशम गुरु को पेश ग्राना था । पिता जालिमों की भेंट चढ़ चुके थे । ग्रौर देश की हालत ऐसी थी । संकट के समय हर समझदार सेनापति ग्राक्रमरण से पहले ग्रपनी रक्षापंक्ति को मजबूत बनाता है । किशोर गुरु ग्रपने ग्रध्ययन ग्रौर

कसरत के साथ-साथ समाज की रक्षापंक्ति मज़बूत करने के लिये ऊँच-नीच के भेदभाव को हटाकर ऐसे समाज की रचना करने का उपाय सोचते रहते जिससे देश मज़बूत बने, विदेशी हमलावरों से टक्कर ले सके, और जिसके अन्दर लोग रूहानी और जिस्मानी तौर पर ताकतवर बनें।

किशोर गुरु को गद्दी पर बैठे तेरह वर्ष बीत चुके थे। मुग्ध किशोरावस्था सधी हुई जवानी में बदल चुकी थी। जीवन का लक्ष्य स्थिर हो चुका था और जिस उद्देश्य को पूरा करने के लिये पूर्ववर्ती गुरु अभिलाषा करते थे उसकी साइत आ पहुंची थी।

आज वैशाख संक्रान्ति सम्वत् १७५५ तदनुसार ३० मार्च, १६६६ थी। गुरुजी सदा की भांति सुबह जल्दी ही उठ गये और ध्यान में बैठ गये। उसके बाद आपने अपने वस्त्र पहिने, अस्त्र–शस्त्र धारण किये और आनन्दपुर में आयी हुई संगत के सामने प्रकट हुए। हजारों लोग आपको देखते ही जय–जयकार करने लगे। अनेकों को आपके पूज्य पिताजी गुरु तेगबहादुर का स्मरण हो आया और चारों ओर पहले गुरुओं के तेज और तपस्या की चर्चा होने लगी। आज गुरुजी की जिह्वा पर सरस्वती का और आंखों में चण्डी का वास था। गुरु ने ईश्वरीय प्रेरणा से बोलना शुरू किया और अपना हृदय संगत के सामने खोलकर रख दिया। आपके एक-एक शब्द पर वर्षों के चिन्तन की छाप थी, युग की पुकार थी। संगत मुग्ध हो गयी। लोहा तप चुका था, अब उसे शक्ल अख्तियार करने के लिये चतुर लुहार की चोट का इन्तज़ार था। गुरुजी ने सहसा अपनी तलवार निकाल ली और हवा में लहराकर उसे सिर से उपर तान लिया। "चण्डी प्यासी है—है कोई धर्मी जो अपना शीश देकर धर्म की रक्षा करे।" इस स्पष्ट आह्वान पर कनरसिये शिष्यों की बोलती बन्द हो गयी। गुरु ने फिर दोबारा दहाड़ कर पूछा—"है कोई धर्मी जो शीश देकर धर्म की रक्षा करे?" सन्नाटा छा गया। धर्मी लोगों की कमी नहीं थी, लेकिन शेष समाज के साथ-साथ उन्होंने भी चुप्पी साध ली थी।

पहले कौन बोले ? हजारों साल की निष्क्रियता को युग का अन्यतम पुरुष ललकार रहा था और मानव मेदिनी मौन बैठी थी। और कोई पुरुष होता तो निराशा से ढह जाता। लेकिन दशम गुरु तो किसी और ही धातु के बने थे। उन्हें पता था कि पहले गुरुओं की त्याग तपस्या और बलिदान व्यर्थ नहीं गये हैं। फौलाद से हथियार बनाने के लिये एक दो चोट ही काफी नहीं है। तपे फौलाद पर तब तक प्रहार करना होगा जब तक कि उसमें से हथियार की रूपरेखा स्पष्ट नहीं होने लग जाती। एक और ललकार पड़ी। "है कोई धर्मी जो शीष देकर धर्म की रक्षा करे ?" और फौलाद ने हथियार की शक्ल अख्तियार करली। युगों पुरानी ग़फ़लत टूट गयी। लोगों ने देखा कि लाहौर का दयाराम खत्री हाथ जोड़े खड़ा है और कह रहा है कि मेरा सिर हाजिर है। गुरुजी को अपना प्रथम प्यारा शिष्य मिल गया था।

गुरुजी ने दयाराम का हाथ पकड़ा और उसे अपने साथ बराबर के तम्बू में ले गये। थोड़ी देर बाद गुरुजी जब बाहर आये तो उनकी तलवार से टपकता हुआ लहू देखकर शिष्यों के मुख पीले पड़ गये। गुरुजी ने फिर खांड़ा हवा में लहरा कर आवाज दी। 'कौन अपना सीस देता है।" कुछ लोग उठे, लेकिन वे गुरु की ओर मुखातिब होने की बजाय माता के पास शिकायत करने पहुँचे कि आज गुरुजी पर क्या पागलपन सवार हुआ है। माता तो गुरुजी की प्रकृति से परिचित थी ही। चुप रह गयी। उधर हस्तिनापुर दिल्ली का एक जाट धरमदास खड़ा होकर गुरुजी से प्रार्थना करने लगा कि "मेरा भी सीस हाज़िर है।" गुरुजी उसे भी साथ तम्बू में ले गये और थोड़ी देर बाद वे तम्बू से निकले तो उनकी तलवार से फिर पहले जैसा ताज़ा खून टपक रहा था। आपने फिर सीस देने वालों को आवाज़ दी तो अबकी बार द्वारिकापुरी का (मुहकमचंद) धोबी खड़ा हो गया। गुरुजी उसे भी अपने साथ ले गये। अबकी बार आपकी आवाज़ पर हिम्मत नामक धीवर आगे आया। उसे भी आप अन्दर ले गये।

इसके बाद आपके आह्वान पर बीदर का साहिब चंद नामक नाई सामने आया। गुरुजी उसे भी अपने साथ ही तम्बू में ले गये। इस बार जब गुरुजी बाहर आये तो आप अकेले नहीं थे बल्कि नये कपड़े पहने पांचों वीर भी आपके साथ थे। लोगों ने जय-जयकार किया।

गुरुजी ने पांचों वीरों को "पंज प्यारा" कहकर पुकारा। आपने इन पांच प्यारों का पहला खालसा सजाया और उन्हें अमृत छकने को कहा। अमृत छकाने के लिये पहले आपने लोहे के बर्तन में सतलुज का जल डाला और उसे अपने दुधारे खांड़े से काटा। फिर गुरुपत्नी ने उसमें बताशे डालकर उसे मीठा किया। इसके पश्चात् गुरुजी ने पांच वाणियों का पाठ किया। यह वाणियां थी जपजी साहब, जाप साहब, दस सवैये, चौपाई और आनन्द साहब।

इस समारोह के द्वारा गुरुजी ने बताया कि ज्ञान ही अमृत है। शास्त्रों में कहा भी है कि "विद्ययाऽमृतमश्नुते" (विद्या-ज्ञान से ही अमृत पान हो सकता है) गुरुजी ने मामूली नदी के जल को लेकर उसकी मनुष्यों की आत्मा से उपमा दिखाई। महाभारतकार भी आत्मा की तुलना नदी से करते हैं—"आत्मा नदी सयम पुण्य तीर्था ........." फिर आपने अपने खांड़े से उसको काटकर अलग जातियों में पैदा हुए लोगों को दिखाया कि जिस प्रकार खांड़े से काटने पर जल फिर मिल जाता है उसी प्रकार आत्मा-आत्मा से भेद-भाव करना गलत है। वाणियों के पाठ से आपने बताया कि आत्मा को आध्यात्मिक वाणियों से अभिमंत्रित करने से आत्मा में पवित्रता आती है। और माता जीतो ने उसमें मिठास घोल-कर बताया कि शिष्यों की आत्मा में मधुरता का वास होना चाहिये। इसके उपरान्त गुरुजी ने उस अमृत को सबसे पहले अपने नवदीक्षित पांच प्यारों को छकाया। शिष्य और संगत निहाल हो गयी। इस घटना से गुरुजी ने बताया कि शिष्य यदि वास्तव में शिष्य हो और गुरु की आज्ञा में मरने का भी डर न करे तो अमृत छकने का उसका अधिकार गुरु से

भी पहले है। इसके बाद आपने शिष्यों के द्वारा स्वयं दीक्षित होकर, शिष्यों का शिष्य बनकर अमृत छकने की विनती की। शिष्यों ने आपको भी अमृत छकाया और आपका नाम गुरु गोविन्द राय से बदलकर गुरु गोविन्द सिंह रखा।

उपर्युक्त घटना विश्व के आध्यात्मिक इतिहास में अनूठी है। इस समारोह के द्वारा गुरुजी ने शिष्य धर्म की नींव डाली। जहां एक ओर इसके द्वारा आपने गुरु के प्रसाद से ज्ञान अर्थात् अमरता की प्राप्ति की बात बताई वहां दूसरी ओर आपने लोहे के कड़ाह के प्रयोग के द्वारा सादगी और वीरता पर भी जोर दिया। आपने शिष्यों को पंच ककार धारण करने की व्यवस्था दी। केश, कंघा, कृपाण, कच्छा और कड़ा। इसमें प्रत्येक वस्तु की आज्ञा देने के पीछे गुरुजी का वर्षों पुराना चिन्तन था। आप देख चुके थे कि गुरु तेग बहादुर ने जब दिल्ली में जहांगीर के सामने अपना सिर दिया था तब शाही फरमान के द्वारा कहा गया था कि जो गुरु का शिष्य हो वह गुरु की देह ले जाय। गुरुजीके आस पास उस समय भी शिष्यों की कमी न थी लेकिन शाही कोप के डर से किसी ने उनका शिष्य होना कबूल न किया। केवल जेता नामक रंगरेटा सिख ने जो बहुत ही छोटी जाति का माना जाता था गुरु का शिष्य होना क़बूल किया और उसी ने आनन्दपुर में गुरु का सीस लाकर दिया। बाल गुरु पर दो-दो विपत्तियां आ पड़ी। पिता का वियोग और शिष्यों की कायरता। गुरु तो धर्म के नाम पर सीस दे दे और शिष्य जान बचा जायं, तो देश और पन्थ की प्रतिष्ठा कैसे बचेगी? गुरुजी ने तभी विचार कर लिया था कि मैं अबसे शिष्यों को ऐसा बनाऊँगा कि वे शिष्य होने से मुकर न सकें; और आज का दिन उसी पुराने संकल्प की पूर्ति का दिन था। आपकी पहली आज्ञा थी कि भविष्य में कोई भी शिष्य सिर या दाढ़ी मूंछ के बाल न कटाये। केशों का जटा जूट ठीक उसी प्रकार पुरुष का प्राकृतिक श्रृङ्गार है जैसे कि केसरी सिंह का केसर, या मोर का बर्हभार।

मर्दानगी की शोभा को ज्यों का त्यों रखने का आदेश देकर गुरुजी ने अपने शिष्यों को प्रकृति के निकट रहने का आदेश दिया। यह शिष्य की पहली पहचान होगी। केशों के साथ ही आपने कंघा रखना भी फर्ज बताया ताकि केशजाल–जंजाल न हो जाय। इसके साथ ही आपने कच्छा धारण करने का आदेश इसलिये दिया कि आप अपने शिष्यों का लंगोट का पक्का तथा चुस्त देखना चाहते थे। कच्छा या निकर फौजी क़वायद वालों के लिये आज भी अनिवार्य माना जाता है। कृपाण धारण आपने दीनों की रक्षा के लिए जरूरी समझ कर हुक्म फ़रमाया और लोहे का कड़ा इसलिये कि तलवार के हमले के समय इससे नगे हाथों तलवार का वार बचाया जा सके।

गुरुजी की आज्ञाओं में अनेक गूढ अर्थ अनेक सिख विद्वानों ने निकाले हैं। लेकिन ये सब आदेश सिख या शिष्य को खालसा या निराला बनाने के लिए ही गुरुजी ने फ़रमाये हैं इसमें सब एकमत हैं। इनमें से एक या दो चीजें और लोगों में भी धारण करने के आदी मिल सकते हैं। लेकिन पाँचों चीजें अनिवार्य रूप से धारण करने वाले सिख ही मिलेंगे। क्योंकि इसके लिये उन्हें गुरु की ओर से आज्ञा है। इसके उपरान्त आपका उपदेश हुआ :—

**गुरु घर जन्म तुम्हारे होए। पिछले जाति वरण सब खोए ॥**
**चार वरण के एको भाई। धरम खालसा पदवी पाई ॥**
**हिन्दु–तुरक ते आहि निआरा। सिंह मजब अब तुमने धारा ॥**
**राखहु कच्छ, केश, किरपान। सिंह नाम को यही निशान ॥**

(पन्थ प्रकाश)

इसके उपरान्त आपने आदेश दिया कि अब से मसन्दों की सत्ता नहीं चलेगी। चतुर्थ गुरु रामदास ने जिन धर्म प्रचारकों को धर्म प्रचार और गुरु वाणी के प्रसार के लिये नियुक्त किया था उनकी सन्तानें अब गुरुओं

ग्रौर शिष्यों के बीच में ग्रन्तराय बन गई थीं। शिष्यों की यह ग्रन्तराय ग्रौर जागीरदारी ग्रच्छी नहीं लगती थी सो ग्रापने ग्रपने ग्रौर शिष्यों के बीच में से मसन्दों की सत्ता समाप्त करदी।

मसंदों की सत्ता की समाप्ति में हमें एक विशाल सत्य के दर्शन होते हैं। मानव के इतिहास में इन्सान गलतियां कर-कर के सीखा है। यहां एक पीढ़ी जो व्यवस्था या परम्परा डालती है वह कई पीढ़ो तक उपयोगी रह सकती है। लेकिन समय के साथ-साथ उसकी उपयोगिता स्वभावत: कम होती जाती है। इसके बाद एक ऐसा समय भी ग्राता है जब पुरानी व्यवस्था ग्रर्थहीन ग्रौर उपयोगहीन रूढ़ि मात्र रह जाती है। ऐसे समय ग्रावश्यकता होती है एक ऐसे वीर पुरुष की जो उनके खिलाफ ग्रावाज उठा सके। यह काम छोटे-मोटे ग्रादमियों के बस का वहीं होता। क्योंकि समाज के दूसरे लोग ग्रक्सर दलील देने लगते हैं कि क्या हमारे पुरखे मूर्ख थे जो वे ऐसे परम्परा डाल गये थे। ग्रौर इस पर सामान्य ग्रादमी ग्रपने ग्रसन्तोष को दबाकर रह जाता है। ऐसे समय केवल समर्थ ग्रौर विचारक पुरुष ही हिम्मत करते हैं। वे पुराने निजाम, पुरानी व्यवस्था ग्रौर रूढ़ियों की ग़लती लोगों को बताते हैं। ग्रौर नई व्यवस्था निर्धारित कर स्वयं उस पर चल कर दिखाते हैं। गुरु गोविन्दसिह मसन्दों के ग्राचरण से दुखी थे। मसन्दों को चूंकि चतुर्थ गुरु रामदास ने नियुक्त किया था, इसलिए मसन्दों को हटाने का ग्रर्थ लोग गुरु परम्परा से हटना लगाते। लेकिन गुरु तो वेदों के समय से चली ग्रा रही हजारों साल पुरानी ग्रौर निकम्मी उन रूढ़ियों को हटाने ग्राये थे जिनके रहते हिन्दू समाज ऊँच-नीच से ग्रस्त, ग्रौर परदेशी बहेलियों की शिकारगाह बन कर रह गया था। ग्रापको तो कमजोर समझे जाने वाले भारत देश को ताक़तवर बनाना था। कबूतरों को बाज़ ग्रौर गीग्रों को सिह बनाना था। इस लिए ग्रापको गुरु रामदास के नाम पर चली ग्राती परम्परा में सुधार करने में क्या ग्रापत्ति होती। इस प्रकार मसन्द परम्परा को

समाप्त करके गुरु ने दिखा दिया कि कोई भी परम्परा ख़ुदा की ओर से नाज़िल की हुई नहीं है। समाज के लाभ के लिए समर्थ पुरुष जब चाहें उसे बदल सकते हैं।

यहीं आपने एक सिख को सवा लाख के बराबर बताया। इसका अभिप्राय यह था कि शत्रु सेना लाखों की संख्या में भी हो तो भी युद्ध में सिख को उसका भय न करना चाहिए। यहीं आपने शिष्यों के लिए नशा और खास तौर पर तम्बाकू के इस्तेमाल को वर्जित घोषित किया। आज भी सच्चे सिख तम्बाकू का इस्तेमाल नहीं करते। इससे आप सदा सदा के लिए मानवता के परम उपकारक के रूप में याद किये जायेंगे।

गुरुजी के उपदेशों से प्रभावित होकर थोड़े ही दिनों में लगभग ८०,००० लोगों ने सिख धर्म स्वीकार कर लिया। गुरुजी की शक्ति और सेना बढ़ती ही जा रही थी, जिसे देख कर उनके पड़ोसी पहाड़ी राजाओं को शंका होने लगी। उन्होंने जो दूत आदि गुरुजी के पास भेजे थे, वे भी गुरुजी के प्रभाव के कारण उन्हीं के होकर रह गये थे। अन्त में राजाओं ने मिलकर आनन्दपुर पर धावा कर दिया। लेकिन गुरुजी तो दिल्ली के बादशाह से टक्कर की तैयारी किये बैठे थे इन छोटे मोटे रजुल्लों को क्या समझते। उन्होंने इन राजाओं को खदेड़ कर भगा दिया। राजाओं के साथ हुए इस पहले साके में गुरुजी के हाथों से पैंदे खां नामक एक बड़ा मुसलमान सरदार मारा गया।

राजा लोग गुरुजी पर फिर चढ़ आये। इस दूसरी लड़ाई में राजा केसरीचन्द अपने कई सरदारों के साथ मारा गया।

कई बार हार कर राजाओं ने अन्त में उस आत्मघाती नीति का आश्रय लिया जिसका आश्रय जयचन्द से लेकर सभी देश द्रोहियों द्वारा लिया जाता रहा है। यह नीति थी आपस की लड़ाई में प्रबल

शत्रु को घर में घुसा लाना । हिन्दुस्तान का इतिहास बतलाता है कि जब-जब ऐसी ओछी राजनीति चलाई गई तभी देश गुलाम बना । गो कि बाहरी शत्रु बाद में बुलाने वाले को भी नहीं बख्शता था, और दोनों को मार कर अपनी सत्ता जमा लेता था; लेकिन क्षुद्र स्वार्थों में पड़े द्वेषी राजाओं में इतनी दूरन्देशी कहां से आती । हार पर हार होने पर राजाओं ने सरहिन्द के नवाब को उकसाया और उसे गुरुजी के ऊपर चढ़ा लाये । लेकिन गुरुजी ने उसे भी निर्मोह के मैदान में हरा दिया और उसे गुरुजी से संधि करके लौटना पड़ा । कुछ समय के पश्चात् जब गुरुजी कुरुक्षेत्र की यात्रा पर गये हुए थे तब रास्ते में पांच हजार मुगल सेना ने उनको घेर लिया । किन्तु गुरुजी सावधान थे । उन्होंने पहले ही अपनी गुप्त सेना तैयार करके छिपा रखी थी । इस युद्ध में गुरुजी की विजय हुई और दुश्मन की फौज का एक सरदार अलिफ खां भाग निकला । दूसरा सरदार सैदबेग गुरुजी की शरण में आगया ।

जब गुरुजी का प्रताप इस प्रकार दिन दूना और रात चौगुना बढ़ता ही गया तब राजाओं ने मिल कर अपने में से एक राजा अजमेरी चन्द को बादशाह के पास भेजा । बादशाह उन दिनों मराठों को दबाने के लिए दक्षिण भारत में पड़ा था । उसे खुद को तो उत्तर में जाने की मराठे कब मौहलत देते थे । उसने दस हजार फौज अपने पास से भेजी और सरहिन्द और लाहौर के सूबेदारों को हिदायत की कि गुरुजी को गिरफ्तार करके शाही दरबार में रवाना कर दो । मुगलों ने राजाओं की मदद से सन् १७०१ में गुरुजी को आनन्दपुर में घेर लिया । इसमें राजा हरिचन्द मारा गया, अजमेरीचन्द घायल हुआ, और एक बड़ा सरदार सय्यदखां गुरुजी का शिष्य बनकर लड़ाई के मैदान से हट गया । लेकिन लहरों की तरह नयी मुगल फ़ौज ने फिर आनन्दपुर साहब को घेर लिया । तीन वर्षों तक सिखों ने आनन्दपुर को बचाये रखा लेकिन जब रसद खत्म होने पर आई तब उन्हें आनन्दपुर साहब को छोड़ने का

फ़ैसला करना पड़ा। इसके पूर्व सिखों ने गुरु से विमुख होकर तथा त्याग पत्र लिख कर गुरुजी का साथ छोड़ दिया था। गुरु तो शिष्यों के खातिर ही कष्ट उठा रहे थे। लेकिन मनस्वी पुरुष दुःख और कष्ट को कहकर हल्का नहीं करते बल्कि परमात्मा की हर इच्छा में कोई मस्लहत समझकर उसे सहन करते हैं।

आनन्दपुर छोड़ने के पश्चात् गुरुजी सरसा नदी पार कर दूसरी ओर चले गये और यहां भी बादशाह की सेना ने आप पर पुनः आक्रमण किया। रोपड़ तक आपको पठानों के हमलों का सामना करना पड़ा। इसी भाग दौड़ में गुरुजी की माता तथा दो छोटे पुत्र बिछुड़ कर सरहिन्द की ओर निकल गये और गुरुजी अपने दो बड़े पुत्रों के साथ चमकौर गांव में एक चौधरी की हवेली में चले गये। यहां भी शाही फौज ने आपको घेर लिया। आपके साथ चालीस सिख और दो किशोर पुत्र अजीतसिंह और जुझारसिंह इस युद्ध में जूझ गये। गुरुजी ने धर्म के ऊपर एक बार अपने पिता को वार दिया था आज अपने दो बड़े पुत्रों को भी वार दिया। यहां आपके साथ केवल पांच शिष्य बचे जिन्हें लेकर गुरुजी माछीवाड़े और वहां से जगराम गांव में जा पहुंचे। यहां आकर गुरुजी को जब ज्ञात हुआ कि दोनों छोटे पुत्र जोरावर सिंह और फतेहसिंह भी सरहिन्द के नवाब और उसके दीवान सुच्चानन्द ने निर्दयता पूर्वक क़त्ल करवा दिये हैं, तो आपके मुँह से बेसाख्ता निकल पड़ा—"हे प्रभु तेरी अमानत तुझे अदा करदी"। बाद में गुरु पत्नी ने जब आपसे पूछा कि मेरे पुत्र कहां हैं, तो आपने शिष्यों को दिखाकर कहा—

**इन पुत्रन के शीश पर वार दिये सुत चार।**
**चार मुए तो क्या हुआ जीवत कई हजार॥**

इसके बाद का इतिहास पूरी मुग़ल फ़ौज के मुक़ाबले गुरुजी के निरन्तर संघर्ष और सजगता का इतिहास है। एक विदेशी सत्ता अपने

समस्त साधनों सहित एक अकेले व्यक्ति की तलाश में जमीन आसमान एक किये हुए थी। अनेक बार गुरुजी के मुसलमान भक्तों ने आपको बचाया। दीना गांव में आपको बादशाह औरंगजेब का भेजा हुआ खास रुक्का मिला जिसमें आपको बुलाने का निमन्त्रण था। इसके उत्तर में बादशाह को आपने जो उत्तर भिजवाया वह ज़फ़रनामा ( विजय पत्र ) नाम से मशहूर है। यह वीरता और बुद्धिमता से पूर्ण फारसी साहित्य का एक अनमोल हीरा है। कहते हैं उसे पढ़कर अन्तिम दिनों में औरंगजेब का दिल बदल गया था और अपने किये हुए पापों के पश्चाताप में ही उसका प्राणान्त हुआ था। इस ग्रन्थ के विषय में आगे विस्तार से लिखा जायगा।

वर्षों बाद खिदराना के तालाब के पास जो अब मुक्तसर कहलाता है, गुरु को एक और लड़ाई सरहिन्द के सूबेदार से लड़नी पड़ी थी। इस लड़ाई में आपके साथ माझे के वे ४० सिख भी थे जो कि एक बार आनन्दपुर साहब में आपको त्यागकर चले गये थे। इन सिखों को इनकी पत्नियों ने घर में नहीं घुसने दिया। उस कलंक को धोने का अनुकूल अवसर पाकर गुरु की ओर से ये सिख इस बार जी जान से लड़े और रणक्षेत्र में अपने प्राण दे दिये। गुरुजी को जब यह ज्ञात हुआ तो आपने इन मरते हुये शिष्यों का आलिंगन किया और उनके त्याग पत्र फाड़ दिये। सुबह का भूला शाम को गुरु के चरणों में आ पहुंचा था। और गुरु की कृपा देखिये कि आपने उनको अन्त समय स्वीकार कर उनका जन्म सफल कर दिया।

औरंगज़ेब की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र मुअज्जम बहादुरशाह के नाम से दिल्ली की गद्दी पर बैठा। नया बादशाह गुरु का भक्त था। उसके साथ गुरुजी दक्षिण देश की ओर चले। यहां नादेड़ गांव में माधोदास वैष्णव आपका शिष्य हो गया था। जो बाद में बन्दा बैरागी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसने सरहिन्द के नवाब का तथा सुच्चानन्द का

समूल वंश नाश करके इन दो पापियों से दोनों छोटे साहबज़ादों का बदला ले लिया।

इसके उपरान्त गुरुजी दक्षिण की यात्रा से लौट कर नान्देड़ में ही रहने लग गये। यहीं आपको दिव्य दृष्टि से अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो गया। यहीं भाद्रपद चतुर्थी सम्वत् १७६५ की संध्या को सरहिन्द के सूबेदार के द्वारा भेजे गये दो पठानों में से एक ने, जो आपके पास कपट सेवक बन कर कुछ दिनों से रह रहे थे, आपको पलंग पर अकेले लेटे देख कर आपके पेट में छुरा भोंक दिया। आपने तुरन्त चैतन्य होकर उसे तलवार से काट गिराया। शोर सुन कर दूसरे सिखों ने उसके दूसरे साथी को भी खतम कर दिया। जब यह समाचार बहादुर शाह ने सुना तो उसने एक से एक अच्छे जर्राह आपकी चिकित्सा के लिये भेजे। १५–१६ दिनों में घाव भर भी आया था। लेकिन आपने एक दिन बादशाह के भेजे हुये धनुष को सिखों से न झुकते देख कर खुद उस पर ज़ोर लगाया, जिससे घाव के टांके टूट गये, और घाव खुल गया। अपना अन्त समय निकट जान कर आपने अपने शिष्यों को बुलाया और भविष्य में गुरु ग्रन्थ साहब की शिक्षाओं के अनुसार पन्थ का प्रबन्ध चलाने का आदेश दिया। आपने स्पष्ट शब्दों में कहा कि मेरे पीछे कोई गुरु पद के लिये चेष्टा न करे। इस विषय में आपकी वाणी प्रमाण है :—

**आज्ञा भाई अकाल की तबहि चलायो पन्थ।**
**सब सिक्खन को हुकुम है, गुरु मानियो ग्रन्थ॥**
**गुरु ग्रन्थ जी मानियो, प्रगट गुराँ की देह।**
**जो प्रभु को मिलबो चहे, खोज शब्द में लेह॥**

इसके दो मास पश्चात् आपने कार्तिक शुक्ला पंचमी बृहस्पतिवार सम्वत् १७६५ को देह त्याग कर सच्च खण्ड की ओर महाप्रस्थान कर दिया।

# ग्रन्थ परिचय

प्रस्तुत पुस्तक भारत के इतिहास का एक अमूल्य लेख है। इस पुस्तक के द्वारा हमें न केवल गुरुजी के दृढ संकल्प और काव्य शक्ति किंवा भाषा पर अधिकार का ही परिचय मिलता है बल्कि यह लेख इतिहास के झरोखे से हमें उस युग का दर्शन भी कराता है। इस प्रकार यह ग्रन्थ न केवल सिख सम्प्रदाय की दृष्टि से मूल्यवान् है अपितु भारत के सांस्कृतिक और राजनैतिक इतिहास की दृष्टि से भी एक बहुमूल्य धरोहर है।

इस ग्रन्थ में सबसे पहले गुरुजी ने अपने संकल्प को दो शेरों में व्यक्त किया है। यह संकल्प परमात्मा से प्रार्थना के रूप में है। इसमें आपने प्रार्थना की है कि हे परमात्मा ! मुझे हरे रंग का–जीवनी शक्ति से पूर्ण मधुपात्र दे जो युद्धक्षेत्र में मेरे लिये सिद्धि प्रदान करे। और जिससे कि मै वर्त्तमान दुर्दशारूपी कीचड़ में लिथड़े हुए भारत देश रूपी मोती को कीचड़ से उबार लूँ।"

इसके उपरान्त दो शेरों में गुरुजी ने परमात्मा की स्तुति क्षात्र धर्म के प्रतीक के रूप में शस्त्रों और शस्त्रधारी युद्ध कुशल वीरों तथा वेगवान् घोड़ों के स्वामी के रूप में की है।

इसके बाद ही आपने औरंगजेब को विश्वास घातक और राज्य लिप्सु बताते हुए उसे उसके द्वारा किये कुकृत्यों के लिये लताड़ा है। इसी के साथ आपने अपने दो पुत्रों के मारे जाने का निरपेक्ष भाव से उल्लेख करते हुए कहा है कि इसका बदला लिया जायेगा।

गुरुजी का यह पत्र राजनीति शास्त्र का भी खज़ाना है। आपने जहाँ बादशाह को फटकारा है वहाँ शिक्षा भी दी है। बादशाह ने उन्हें मिलने के लिये दक्षिण में बुलाया था। आपने उलटे उसीको काँगड़ा आने को कहा और फ़रमाया कि यदि तू भगवान् और क़ुरान की क़सम धोखा न देने के लिये खाता है, तो मैं भी भगवान् की क़सम खाता हूँ कि तू मुझसे काँगड़ा में आकर मिल। वहाँ सारी बैराड़ क़ौम मेरी आज्ञा में है। वहाँ तुझे कोई खतरा नहीं होगा।

इसी प्रसंग में आगे चलकर हमें गुरुजी के भविष्य द्रष्टा के रूप में दर्शन होते हैं। आपने एक शेर में कहा है कि "तू लोगों का ख़ून अकारण बहाता है। तेरा और तेरे वंश का ख़ून भी मैं आकाश को फैलाते देखता हूं।" हम देखते हैं कि गुरुजी की यह भविष्य वाणी सच होकर रही।

गुरुजी ने औरंगजेब को ही सर्व शक्तिमान मानने वाले पहाड़ी राजाओं का उल्लेख भी किया है और कहा है कि "उन तेरे उपद्रवी मूर्त्ति पूजकों को मैंने इसलिये मारा कि वे तुझो को भगवान् मानते थे।

"मनम कुश्ते अम कोहियाँ पुरफ़ितन।
कि आँ बुतपरस्तन्दो मन् बुत शिकन॥"

जफरनामा गुरुजी की अत्यन्त प्रौढ़ रचनाओं में से एक है। इसमें प्रयुक्त छन्द अल्पाक्षर है तथा भाव निर्वहण में सर्वथा समर्थ है। छन्द की बहर है—"फ़ऊलन् फ़ऊलन् फ़ऊलन् फ़ऊल।" यह हिन्दी की चौपाई अथवा संस्कृत के अनुष्टुप के ही समान एक अति प्रचलित छन्द है और अपनी सरलता और गति के कारण हिन्दी में भी प्रवेश पा गया है। लोक मंच पर साँगों में प्रायः पात्र इसी छन्द में कथोपकथन करते हैं (रे रावण तू धमकी दिखाता किसे। मुझे मरने का खौफ़ो खतर ही नहीं। आदि २।)

गुरु गोविन्दसिंह भगवान् परशुराम के समान उन कृती और समर्थ राष्ट्रपुरुषों में से थे जो कि शस्त्र विद्या और शास्त्र विद्या दोनों पर अधि-

कार रखते हैं। आपको तत्कालीन काव्यभाषा-ब्रजभाषा पर भी उतना ही अधिकार था जितना कि पंजाबी, फ़ारसी और संस्कृत पर था। औरंगजेब को पत्रोत्तर देने के लिये आपने अपने पत्र में उसी भाषा को चुना जो कि औरंगजेब भली भाँति समझ सकता था। आपकी छन्द रचना निर्दोष है और शैली प्रभावशाली। छन्द स्वतः स्फूर्त और अनायास ढलते मालूम होते हैं।

मेरे विचार से मौलिक लेखन की अपेक्षा अनुवाद कार्य अधिक कठिन है। अनुवाद के लिये पहले मूल भाषा के अलंकारों को हटाना पड़ता है, फिर उसे अनुवादित भाषा के तादृश अलंकारों से नये सिरे से सजा कर पेश करना पड़ता है। फिर मेरे सामने तो दो पुरानी बहिनों (संस्कृत और फ़ारसी) की एक रूपता और सदृशता की ओर पाठकों का ध्यान खींचना भी अभिप्रेत था। इसके लिए मुझे संस्कृत भाषा के भण्डार से वे शब्द चुनने पड़े जो कि फ़ारसी के निकट और सदृश हैं।

हिन्दी अनुवाद में मुझे उतनी कठिनाई नहीं हुई, क्योंकि हिन्दी वालों के लिये फ़ारसी शैली अपरिचित नहीं है। फारसी का "गिजाफ़ खुर्दन" (शेर ५४) और हिन्दी का "शेखीखोरी" बहुत दूर नहीं पड़ते। संस्कृत में यह बात "विकत्थन" से ही व्यक्त की जा सकती है।

अंग्रेजी भाषा की शैली और भावभूमि भिन्न है। इसलिये उसमें मुझे सबसे कम कठिनाई हुई। वहाँ न शैली की एक रूपता दिखाने की जरूरत थी और न शब्दों के चयन में सदृशता की सावधानी रखने की अपेक्षा। अंग्रेजी अनुवाद के लिये मैंने दशाक्षर छन्द (**Ten Syllable metre**) का प्रयोग किया है जो कि प्रायः सौनेट की रचना में प्रयुक्त होता है।

ज़फ़रनामा में प्रयुक्त फ़ारसी छन्दों के संस्कृत अनुवाद के लिए मैंने अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग किया है जो कि फ़ारसी के प्रयुज्यमान छन्द की ही भांति एक छोटा और प्रचलित छन्द है। मैंने इसमें गुरुजी के चरण-

चिह्नों पर चलने की पूरी चेष्टा की है और मेरी धारणा है कि यदि गुरुजी ने यह पत्र स्वयं संस्कृत छन्द में लिखा होता तो वह मेरे प्रयास से बहुत भिन्न न होता।

ज़फ़रनामा में प्रयुक्त ईरानी नामों के विषय में मुझे विवश होकर संस्कृतीकरण का आश्रय लेना पड़ा है। वास्तव में ईरानी नामों की संस्कृत नामों से इतनी समानता है कि लिपि के परिवर्त्तन मात्र से ही वे शुद्ध संस्कृत नाम लगने लगते हैं☘। वैसे भी ईरान आर्य भूमि है और ईरानी भाषा आर्य भाषा। यदि ईरानियों ने अरब प्रभाव के कारण अपसव्य लिपि न अपनाई होती तो उनकी भाषा किसी भी भारतीय भाषा की अपेक्षा संस्कृत के अधिक निकट दिखाई देती। इस विषय का विस्तृत विवेचन मैंने 'आर्य भाषा कोष" नामक ग्रन्थ में करने की चेष्टा की है।

☘इस विषय के विशद अध्ययन के लिये लेखक की "आर्यों के पुराण पुरुष" नामक पुस्तक अधीतव्य है। निखिल भारतीय भाषापीठ की यह पुस्तक शीघ्र ही प्रकाशित हो रही है।

# प्रकाशकीय वक्तव्य :--

प्रस्तुत पुस्तक निखिल भारतीय भाषापीठ की क्लासिकल पुस्तक योजना के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही है ।

अगले पाँच वर्षो में हम विश्व की समस्त प्रमुख भाषाओं के हिन्दी से एवं हिन्दी में मध्यमाकार शब्दकोष (पृष्ठसंख्या लगभग १००० प्रति-कोष) छाप देंगे । इस समय फ़ारसी, फ्रेंच तथा जर्मन भाषा के कोषों पर काम चल रहा है । इनके साथ ही हिन्दी से एवं हिन्दी में भारतीय भाषाओं के कोषों की रूपरेखा बनाने का काम हाथ में है । इन भाषाओं की पाठ्य पुस्तकें भी हिन्दी के माध्यम से इस वर्ष के अन्त तक प्रकाशित हो जाँयगी ।

हिन्दी को विश्व भाषाओं में से एक बनाने का काम इतना बड़ा है और उसकी पात्रता प्राप्त करने का लक्ष्य इतना कठिन है कि यह काम केवल संविधान की पुस्तक में लिखकर या केवल सरकार पर छोड़कर निश्चिन्त नहीं हुआ जा सकता । इसके लिये समस्त भारत की भाषाओं के संगठनों, अकादमियों, प्रबुद्ध मनीषियों, केन्द्रीय एवं प्रान्तीय सरकारों का समवेत सहयोग आवश्यक है ।

एतदर्थ निखिल भारतीय भाषापीठ निम्नलिखित उद्देश्यों की सिद्धि के लिये आप सबके सहयोग की अभिलाषी है :—

[क] विश्व की समस्त भाषाओं का हिन्दी के माध्यम से परिचय कराना और देश में उन उन भाषाओं के पठन-पाठन एवं परीक्षा का आयोजन करना ।

[ख] समस्त भाषाओं के हिन्दी शब्दकोष तैयार करना, एवं विदेशी भाषा ज्ञान सम्बन्धी पाठ्य पुस्तकों का लेखन, सम्पादन तथा प्रकाशन करना।

[ग] भाषाओं के अनुसन्धान एवं शोध कार्य की व्यवस्था करना एवं तत् सम्बन्धी पत्रिका का प्रकाशन करना।

[घ] विभिन्न भाषाओं के विद्वानों तथा लेखकों को सम्मानित करना।

[ङ] विदेशों में भारतीय भाषाओं के पठन पाठन आदि की व्यवस्था करना।

[च] विश्व की समस्त उत्कृष्ट कृतियों के भारतीय भाषाओं में अनुवाद की व्यवस्था करना तथा श्रेष्ठ भारतीय साहित्य का विश्व की अन्य भाषाओं में रूपान्तर करना।

[छ] विभिन्न प्रदेशों में अन्तर-भारतीय भाषाओं के शिक्षण की व्यवस्था करना।

[ज] स्कूल कालिजों में ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न शाखाओं की टेकनिकल पुस्तकों का मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देने के उद्देश्य से अंग्रेजी आदि से अनुवाद करना और प्रकाशित करना।

[झ] अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय राष्ट्रभाषा हिन्दी को मान्यता दिलवाने के लिये प्रयत्न करना।

[ञ] देश की भावनात्मक एकता और शक्ति बढ़ाने वाले कार्यों को प्रोत्साहित करना।

[ट] भारत में स्थित दूसरी समानशील संस्थाओं को सहयोग देना तथा सहयोग प्राप्त करना, और शिक्षा तथा संस्कृति सम्बन्धी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ सम्बन्ध स्थापित करना।

[ठ] सेना और विदेश विभाग के लिये दुभाषिये तैयार करना।

---

ظفرنامہ

# ارادے

بدہ ساقیا ساغرِ سبز رنگ
کہ مارا بکار است در وقتِ جنگ

تو مارا بدہ تا کنم تازہ دل
کہ گوہر برآرم ز آلودہ گِل

बिदै साक़िया साग़रे सब्जरंग । कि मारा बकारस्त दर व़क्ते जंग ॥
तो मारा बिदै ताकुनम् ताज़ा दिल । कि गौहर बिरारम् जि आलूदा गिल ॥

बिदै=दे (संस्कृत–देहि=फ़ारसी–बि=आदेशवाचक उपसर्ग+दै)
साक़िया=हे साक़ी, मद्य पिलाने वाले, परमात्मा अभिप्रेत है ।
★साग़रे सब्ज रंग=हरे रंग का पात्र — कि=कि
मारा=मेरा, मेरे लिये — बकारस्त=काम का हो, सिद्धि प्रद हो
दर वक्ते जंग=युद्ध के समय में — तो=तू
मारा=मुझे — बिदै=दे
ता=ताकि (संस्कृत–यतः=फ़ारसी–ता) — कुनम्=करूँ (प्राचीन सं.–कृणोमि)
ताज़ा दिल=दिल को ताज़ा — कि=कि
गौहर=मोती (मोती रूपी देश जाति-समाज)
बिरारम=निकालूँ (संस्कृत–बियासम्=फ़ारसी बिरारम्)
जि=से (संस्कृत–अस्=फ़ारसी–जि, अज़)
आलूदा=सनी हुई — गिल=मिट्टी

★अरबी और फलतः फ़ारसी काव्य परम्परा में हरा रंग जीवन और उत्साह का वाचक माना जाता है जैसे कि भारत में केसरिया रंग, जीवन और उत्साह का प्रतीक माना जाता है । अतः गुरुजी ने फ़ारसी काव्य की परम्परा–निर्वाह के लिये परमात्मा से सब्ज़रंग का मधुपात्र देने की प्रार्थना की है । जिससे प्रभु की दी हुई जीवनी शक्ति युद्ध में रणोन्मत्त कर दे ।

संकल्प :—प्रभो देहि सुरापात्रं तार्क्ष्यवर्णं महाबलम् ।
यत्पीत्वा हि रणक्षेत्रे कार्यसिद्धिमवाप्नुयाम् ॥
अवश्यं तत्त्वया देयं यतो यामि कृतार्थताम् ।
ध्रियासम् मौक्तिकं म्लानं पङ्कलिप्तं हि कर्दमात् ॥

हे साक़ी (परमात्मा) मुझे हरे रंग का मधुपात्र दे, जिससे कि वह मेरे लिए युद्धकाल में कार्योपयोगी, सिद्धप्रद हो। तू मुझे वह दे (अवश्य दे), जिससे कि मैं अपने हृदय को ताज़ा करलूँ और कीचड़ में सने मोती ( दुर्दशाग्रस्त देश और समाज रूपी मोती ) को कीचड़ से निकाल दूँ।

**Give me O, God! the Verdant cup of Faith**
**Which may bestead me in the times of War.**
**Do give me that so that I may be fresh**
**That I may take the Pearl out of the mire.**

**Pearl=the Nation**

(۱) بنامِ خداوندِ تیغ و تبر
خداوندِ تیر و سنان و سپر

बनामे खुदावन्दे तेग़ो तबर ।
खुदावन्दे तीरो सिनानो सिपर ॥

ब=साथ

नामे=(नाम+ए)=नाम के, नाम लेकर (स्मरण करके, प्रणाम करके)

खुदावन्दे=(खुदावन्द+ए)=भगवान का (फारसी में "ए"="का" विभक्ति अंग्रेजी के of की तरह पहले लगती है। अतः इसका पर प्रसंग से अर्थ हुआ "भगवान का")

तेग़ो=(तेग़+ओ)=तलवार और

तबर=छुरा, कटार

तीरो=(तीर+ओ)=बाण और

सिनानो=(सिनान+ओ)=बरछा और

सिपर=ढाल

नमस्तस्मै भगवते य ईशोऽसेः क्षुरस्य च ।
इषूनामस्त्र-शस्त्राणां तथा च चर्म वर्मणाम् ॥१॥

उस भगवान का नाम लेकर, ( प्रणाम करता हूँ ) जो कि तलवार, छुरा, बाण, बरछा और ढाल का प्रभु है ।

I WRITE TO THEE :—

**In the name of God the Lord of Sabre and Sword and Lord of Arrow, Spear and Lance and Shield**

(۲) خداوندِ مردانِ جنگ آزما
خداوندِ اسپانِ پا در ہوا

ख़ुदावन्दे मर्दाने जंग आज़मा ।
ख़ुदावन्दे अस्पाने पा दर हवा ।।२।।

ख़ुदावन्दे=भगवान

मर्दाने=पुरुषों

जंग आज़मा-युद्ध में परीक्षित

अस्पाने-घोड़ों (संस्कृत-अश्व=फ़ारसी-अस्प)

पा=पैर (संस्कृत-पाद=फ़ारसी-पा)

दर=में, के अन्दर

हवा=वायु

य ईशः शूर वीराणा माहवाभ्यासिनां नृणाम् ।
ईशोऽश्वानां जवे ये च झञ्झा पवनानुगाः ।।२।।

( उस भगवान का नाम लेकर ) जो कि युद्ध में परीक्षित वीर पुरुषों का स्वामी है, और जो कि (वेग की अधिकता से) वायु में चरण रखने वाले घोड़ों का प्रभु है ।

**And Lord of the Men tested in the wars.**
**And Lord of Horses floating in the air.**

(۳) ہماں کو ترا پادشاہی بداد
بما دولتِ دیں پناہی بداد

हमाँ कू तुरा पादशाही बिदाद ।
बमा दौलते दीं पनाही बिदाद ॥३॥

हमाँ-(हम + आँ) ; [हम = भी, ही ; आँ = वह] = वही

कू-(कि + ऊ) ; [कि = कि, ऊ = वह, जो] = जिसने कि

तुरा = तुझे

पादशाही = बादशाही, राज्य

बिदाद = दी

बमा = मुझको

दौलते = की दौलत

दीं पनाही = धर्म रक्षा

सैव येन प्रगे तुभ्यं विदत्ता राज्य सम्पदा।
मह्यं पुनश्च सम्पत्ति धर्म रक्षात्मिका तथा ॥३॥

वही जिसने तुझे राज्य शासन दिया, (उसी ने) मुझे धर्म रक्षा की दौलत दी।

**The which who gave thee kingdom and a throne,**
**To me He gave the cherishment of faith**

(۴) ترا ترکتازی به مکرو ریا
مرا چاره سازی به صدق و صفا

तुरा तुर्क ताज़ी ब मकरो रिया ।
मरा चारा साज़ी ब सिद्क़ो सफ़ा ॥४॥

तुरा=तुझे

तुर्क ताज़ी=तुर्कपन और ताज़ीपन (ये दोनों नाम अत्याचार का अतिरेक दिखाने के लिए रूढ़ हो चुके हैं। मुसलमान कवियों ने भी प्रिय पात्र को ज़ालिम, क़ातिल, तुर्क आदि कहा है। एक और कहावत प्रचलित है– "तुर्की मारा ताज़ी भागा" (एक अत्याचारी को मारो तो दूसरा सहम जाता है)

ब=के साथ, के द्वारा

मकरोरिया=(मकर+ओ+रिया)=छल और झूठ

मरा=मुझे

चारासाज़ी=चिकित्सकत्व

ब सिदक़ो सफ़ा=(सिदक़+ओ+सफ़ा)=सचाई और चित्त शुद्धि के साथ

तुभ्यं तुर्कत्व ताजित्वं कपटत्व मसत्यता ।
मह्यं कष्टार्त्ति नाशत्व मृतत्वं चित्तशुद्धता ॥४॥

तुझको तुर्कपन और ताज़ीपन–छल और झूठ के साथ दिया, (उसीने) मुझे चिकित्सा करने की सामर्थ्य–सचाई और चितशुद्धि के साथ दी ।

**To thee the Turkdom, Tajidom with deceit and fraud.**
**To me the power to cure with, truth and pureheartedness.**

(५) نہ زیبد ترا نام اورنگ زیب
زاورنگ زیباں نہ یابد فریب

न जेबद तुरा नामे औरंगजेब ।
ज़ि औरंगज़ेबाँ न याबद फ़रेब ॥५॥

न=नहीं

ज़ेबद=शोभा देता है

तुरा=तेरे लिये

नामे औरंगज़ेब=औरंगज़ेब नाम

ज़े, ज़ि=से ( संस्कृत–अस्=फ़ारसी–अज़, ज़ि, ज़े )

औरंगज़ेबां ( औरंग=राज्य सिंहासन, ज़ेब=शोभा )=सिंहासन की शोभाओं=राजाओं

न याबद=नहीं प्राप्त होता है

फ़रेब=छल

न शोभते पुनस्तुभ्यं नाम चासन शोभनः ।
यतश्चासन शोभेभ्यो नाप्नुवन्ति जनाश्छलम् ॥ ५ ॥

तुझे औरंगज़ेब (आसन शोभा) नाम शोभा नहीं देता। (क्योंकि) औरंगज़ेबों से (राजाओं से) छल नहीं मिलता ।

Ill becometh thee thy name O ! Aurangzeb .
For, deceit's not to be found from aurangzebs

Aurang=throne
Zeb=adornment

Aurangzeb=adornment of the throne, a king.

(۶) تسبیحت از سبحہ و رشتہ بیش
کزاں دانہ سازی وزاں دام خویش

तसेबीहत अज़ सुब्ह ओ रिश्ता बेश ।
कि ज़ाँ दानासाज़ी व ज़ाँ दामे खेश ॥६॥

तसेबीहत=तेरी माला

अज=से ( संस्कृत-अव्युत्पन्न-अस् = फारसी-अज़ )

सुब्ह=मनका, दाना

रिश्ता=डोरा

बेश=विशेष

ज़ाँ=(ज़+आँ) ; [ ज़=से, आँ=वह, उस ]=उससे

दाना साज़ी=दाना डालकर लुभाता है

व ज़ाँ=(व+ज़+आँ)=और उससे

दामे=जाल

खेश=अपना

माला ते मणि बीजाच्च सूत्राच्चापि विशिष्यते ।
यद्बीजात्तनुपे लोभं सूत्राच्च जालबन्धनम् ॥६॥

तेरी माला मनका और डोरा से ज्यादा है। क्योंकि उससे [दाने से] तू दाना डालता है और उससे [डोरे से] अपना जाल फैलाता है।

भावार्थ—तू जो भजन करने का ढोंग करता है वह इसलिये है कि लोग तुझ पर विश्वास करलें और तू उन्हें फांस ले।

Thy rosary doth more than beads and thread
With beads thou bait'st and with thread make'st a trap

(۷) تو خاکِ پدر را بہ کردار زشت
بہ خونِ برادر بدادی سرشت

तो खाके पिदर रा ब किरदारे ज़िश्त ।
ब ख़ूने बिरादर बिदादी सिरिश्त ॥७॥

तो=तू. तूने

ख़ाके पिदर=बाप की मिट्टी (संस्कृत–पितृ=फ़ारसी–पिदर)

ब=के साथ, से

किरदारे=कार्य (संस्कृत–चरित्र=फ़ारसी–किरदार)

ज़िश्त=कलुषित (संस्कृत–दुष्ट, दूषित=फ़ारसी–ज़िश्त)

बख़ूने बिरादर=भाई के ख़ून से ( सं.–शोण=ख़ून; सं.–भ्रातृ=फ़ा. बिरादर )

बिदादी=दी, दिया (तूने)

सिरिश्त=गूँधना

त्वया पितुर्मृदा दुष्ट स्वस्य दूषित कर्मणा ।
भ्रातृणां रक्तपातेन विधत्तं शोणकर्दमम् ॥७॥

तूने बाप की मिट्टी को अपने दूषित कार्यों से भाई के खून के साथ गूँधा ।

**Thou pounded the mould of father with foul Conduct.**
**And with the blood of brethern all admixt.**

(۸) وزاں خانۂ خام کردی بنا
برائے درِ دولتِ خویش را

व ज़ाँ ख़ान ए ख़ाम करदी बिना।
बराये दरे दौलते ख़ेश रा ॥८॥

व जाँ (व+ज+आँ)=और उस से

ख़ाना=घर

ख़ाम=कच्चा, मिट्टी का

करदी=किया (तूने)

बिना=आधार

बराये=के हेतु, के निमित्त

दरे=दरवाज़ा

दौलते=सम्पत्ति

ख़ेश रा=अपना स्वयं का

कललेन त्वया तेन क्षाम माधार माधृतम् ।
आत्मनो भवनं कर्तुमैश्वर्यस्य सुखस्य च ॥८॥

और उससे ( रक्त और मिट्टी के गारे से ) तूने कच्चे घर की नींव रखी–अपना ऐश्वर्य भवन बनाने के लिये ।

**With such (sanguine) mortar thou laid'st a flimsy base.**
**Of an abode of pleasure of thy own.**

(۹) من اکنوں بہ افضالِ پُرشِ اکال
کنم زآبِ آہن چناں برشگال

मन अकनूँ ब अफ़ज़ाले पुरुषे अकाल।
कुनम ज़ाबे आहन चुनाँ वर्शगाल ॥९॥

मन=मैं

अकनूँ=अब

ब अफ़ज़ाले=कृपा से

पुरुषे अकाल=अकाल पुरुष, परमात्मा

कुनम्=करता हूँ, करूँगा।

ज़ाबे आहन्=(ज़+आबे+आहन)=लोहे के पानी से, शस्त्रों की चमक से

चुनाँ=ऐसी, ऐसा

वर्शगाल=वर्षा (सं.–वर्षा=फ़ा.–वर्शगाल)

अहमेतर्ह्यकालस्य पुरुषस्यानुकम्पया ।
करिष्यैतादृशीं वर्षां तीक्ष्णैश्चश्चद्भिरायुधैः ॥९॥

मैं अब अकाल पुरुष की कृपा से लोहे के पानी से (चमकीले हथियारों से) ऐसी वर्षा करूंगा :—

**And now, I, with the grace of Lord "Akal"**
**Shall pour o'er thee such rains with flash of steel**

(۱۰) کہ ہرگز ازاں چار دیوارِ شوم
نشانی نماند بریں پاک بوم

कि हरगिज़ अज़ाँ चार दीवारे शूम।
निशानी न मानद बरीं पाक बूम ॥१०॥

कि हरगिज़=कि कदापि

अज़ाँ=(अज़+आँ)=उससे

चार दीवारे=चार दीवार

शूम=अशुभ

निशानी=चिन्ह

न मानद=न रहे

बरीं=(बर+ईं)=इसके ऊपर

पाक=पवित्र

बूम=(भूमि) (संस्कृत भूमि=फ़ारसी बूम) (कुछ लोगों ने बूम का अर्थ उल्लू लिखा है जो यहाँ असंगत है)

यत्कदापि चतुर्दिक्षु दुरितस्य तु कर्हिचित् ।
अपि चिन्हं न शिष्येत पवित्रे भारते खलु ॥१०॥

कि हरगिज इस अशुभ चारदीवार ( मुगल शासन रूपी भवन की चारदीवारी ) का इस पवित्र ( भारत ) भूमि पर चिन्ह भी न रह जाय ।

**That no relics of the fourwalls of thy evil empire shall be left ontowards this holy land.**

(११) ز کوہ دکن تشنہ کام آمدی
ز میواڑ ہم تلخ جام آمدی

ज़ि कोहे दकन तिश्नाकाम आमदी ।
ज़ि मेवाड़ हम तल्ख़जाम आमदी ॥११॥

ज़े=से

कोह=पर्वत

दकन=दक्षिण (संस्कृत–दक्षिण=फ़ारसी–दकन)

तिश्नाकाम=प्यासा, असफल (संस्कृत–तृषाकाम=फ़ारसी–तिश्नाकाम)

आमदी=आया है (तू)

ज़े मेवाड़=मेवाड़ से

हम=भी

तल्ख़जाम=कड़वा प्याला पिया हुआ

आमदी=आया है (तू)

दक्षिणेभ्यो नगेभ्य स्त्वमागतोऽसि पिपासितः ।
मेवाड़ देशतश्चापि विषं पीत्वैव चागतः ॥११॥

तू दक्षिण के पहाड़ों से (महाराष्ट्र से) असफल होकर आया है, और मेवाड़ से भी (पराजय की) कड़वी घूँट पीकर आया है ।

**From the Deccan Plateau thou came athirst**
**From Mewar too thou gulped a bitter draught.**

(۱۲) بریں سو چوں اکنوں نگاہت رود
کہ آں تلخی و تشنگیت رود

बरीं सू चूँ अकनूँ निगाहत रवद ।
कि आँ तल्खिओ तिश्नगीयत रवद ।।१२।।

बरीं=(बर=ईं) इसके ऊपर, इस पर

सू=दिशा

चूँ=जब

अकनूँ=अब

निगाहत=निगाह तेरी

रवद=जाती है

आँ=वह

तल्खिओ तिश्नगीयत=कटुता और प्यास (तेरी)

रवद=जाती है

एतस्यां दिशि ते दृष्टिर्यदापतति पापतः ।
सा पिपासा विपत्वं तत्त्वया हि विस्मार्यते ॥१२॥

इस दिशा (पंजाब) को ओर जब तेरी निगाह्.पड़ती है तो वह कड़वाहट ओर असफलता तुझे भूल जाती है ।

**Now, hither while thou direct'st greedy glance**
**That bitterness and thirst thou dost forget.**

(۱۳) چناں آتشے زیر نعلت نہم
ز پنجاب آبت نہ خوردن دہم

चुनाँ आतिशे ज़ेरे नालत निहम ।
ज़ि पंजाब आबत न ख़ुरदन् दिहम ॥१३॥

चुँना=ऐसी

आतिशे=अग्नि

ज़ेर=नीचे

नालत=तेरे जूते

निहम=रखता हूँ–रखूँगा

ज़े पंजाब=पंजाब से

आबत=पानी तुझे

न ख़ुरदन्=नहीं खाने (नहीं पीने)

दिहम्=देता हूँ–दूँगा ।

अग्नि मीदृग् विधास्यामि तव पादत्रयोरधः ।
यतस्ते नैव दास्यामि पातुं पञ्जाबजं जलम् ।।१३।।

ऐसी आग तेरे जूतों के नीचे रखूँगा कि पंजाब से तुझे पानी भी नहीं पीने दूँगा ।

**Here such fire I shall put under thy shoes,**
**( As ) from Punjab I wo'nt give thee water to drink.**

(۱۴) چہ شد گر شغالے بہ مکرو ریا
ہمیں کشت دو بچۂ شیر را

चि शुद गर शिग़ाले ब मकरो रिया।
हमीं कुश्त दो बच्च ए शेर रा ॥१४॥

चि=क्या (संस्कृत–किम्=फ़ारसी–चि)

शुद=हुआ

गर=अगर, यदि

शिग़ाले=सियार, गीदड़ (संस्कृत शृगाल=फ़ारसी–शिग़ाल)

ब मकरो रिया=मकर और झूठ से

हमीं (हम+ईं)=इसी प्रकार

कुश्त=मार दिये (संस्कृत–क्रुष्ट=फ़ारसी कुश्त)

दो बच्चए=दो बच्चे (संस्कृत–वत्स=फ़ारसी–बच्चा)

शेर रा=शेर के

किमस्ति यदि जम्बूकश्छलेन कपटेन वा ।
एवं बत समासाद्य हतवान् सिंहशावकौ ॥१४॥

क्या हुआ यदि सियार ने छल और कपट से इस तरह शेर के दो बच्चों को मार दिया ।

**What matters if a jackal through deceit**
**And treachery thus killed two cubs of lion.**

(۱۵) چو شیر ژیاں زنده ماند همے
ز تو انتقامے ستاند همے

चुँ शेरे ज़ियाँ ज़िन्दा मानद हमे ।
ज़ि तो इन्तक़ामे सितानद हमे ॥१५॥

चुँ=जबकि

शेरे ज़ियाँ=वीर सिंह (फ़ारसी के ज़े का उच्चारण जे से भिन्नता लिये होता है इसलिये इसे दो विन्दु लगाकर व्यक्त किया गया है ।)

ज़िन्दा=जीवित

मानद=रहता है

ज़ि=से

तो=तुझ

इन्तक़ामे=प्रतिशोध

सितानद=लेता है, लेगा

यावत् सिंहो महाशूरो जीवितश्चेह विद्यते ।
प्रतिशोधमतस्त्वत्तो ह्यवश्यं स करिष्यति ॥१५॥

जबकि वीर शेर जीवित रहता है तो वह तुझसे प्रतिशोध लेगा ।

**As long as the brave lion is on hoof**
**He will inflict retribution on thee.**

(۱۶) نہ دیگر گرائم بہ نام خدات
کہ دیدم خدا و کلام خدات

न दीगर गिरायम बनामे ख़ुदात ।
कि दीदम ख़ुदाओ कलामे ख़ुदात ॥१६॥

न=नहीं

दीगर=और, इसके उपरान्त

गिरायम्=धोखे में आता हूँ–आऊँगा

बनामे ख़ुदात=तेरे ख़ुदा के नाम से

कि दीदम=कि मैंने देखा है

ख़ुदा ओ कलामे=ईश्वर और ईश्वर वचन

ख़ुदात=तेरे ख़ुदा (का)

विश्वासं नैव यास्यामि भगवच्छपथेन ते ।
दृष्टवान् हि प्रतिज्ञां ते शपथं परमात्मनः ॥१६॥

तेरे खुदा के नाम लेने से मै और धोखे में नहीं आऊँगा । क्योंकि मैं तेरे खुदा और तेरे खुदा के कलाम को देख चुका हूँ ।

No more I'll be deceived by thy "By-Gods"
For I have known thy God and vows of God.

(۱۷) بہ سوگند تو اعتبارے نماند
مرا جز بہ شمشیر کارے نماند

ब सौगन्दे तो ऐतबारे न माँद ।
मरा जुज़ बशमशेर कारे न माँद ॥१७॥

ब सौगन्दे तो=तेरी क़सम पर

ऐत बारे=विश्वास

न माँद=नहीं रहा

मरा=मेरे लिये

जुज़=सिवा

ब शमशेर=तलवार से

कारे=कार्य, उपाय

शपथे तु त्वदीये मे प्रत्ययो नावशिष्यते।
खड्गाद् ऋते न मे किञ्चित् कार्यमन्यद्धि शिष्यते ॥१७॥

तेरी सौगन्ध पर (मुझे) विश्वास नहीं रहा। मेरे लिये सिवा तलवार के (प्रयोग के) और काम नहीं रहा।

On thy vows I don't rely any more :
To me no resort's left other than Sword.

(۱۸) توئی گرگ باراں کشیدہ اگر
نہم نیز شیرے بہ دامے بدر

तोई गुर्गे बाराँ कशीदा अगर ।
निहम नीज़ शेरे ज़िदामे बदर ।।१८।।

तोई=तू है

गुर्ग=भेड़िया (संस्कृत–वृक=फ़ारसी–गुर्ग)

बारां कशीदा=ऋतुओं को खींचा हुआ, वयोवृद्ध, अनुभवी

अगर=यदि

निहम=रखता हूँ मैं (संस्कृत–निदधामि=फ़ारसी–निहम)

नीज़=भी

शेरे=सिंह को (सिंह सम्प्रदाय अर्थात् ख़ालसा सिख सम्प्रदाय)

ज़िदामे=जाल से (संस्कृत–दाम=रस्सी, फ़ारसी–दाम=रस्सी से बना जाल)

बदर=बाहर, उन्मुक्त

त्वमस्ति किल सम्प्रौढो वीतवर्षो वृको यदि ।
निदधामि तथैवाहं सिंहमुन्मुक्त पञ्जरम् ॥१८॥

तू यदि वयोवृद्ध अनुभवी भेड़िया है, तो मैं भी सिंह को (सिंह नामधारी शिष्य–सिख सम्प्रदाय को) जाल से बाहर–खुला–रखता हूँ ।

**If thou art weather-wise or age-old wolf**
**I too have my lion untied and set free.**

(۱۹) اگر باز گفت و شنیدت بہ ماست
نمائم ترا جادۂ پاک و راست

अगर बाज़ गुफ़्तो शुनीदत ब मास्त ।
नुमायम् तुरा जादए पाको रास्त ॥१९॥

अगर=यदि

बाज=फिर

गुफ्तो शुनीदत (गुफ्त ओ शुनीदत)=तेरा कहना और सुनना

ब मास्त (ब+मा+अस्त)=मेरे साथ हो

नुमायम्=दिखाऊँ, दिखाऊँगा

तुरा=तुझे

जाद=पगडन्डी

पाकोरास्त=पवित्र और सचाई की

मयासार्धं प्रकुर्वीथाः कथनं श्रवणं यदि ।
दर्शयामि ततस्तुभ्यं पवित्रं चैव सत्पथम् ॥१६॥

मेरे साथ अगर तेरी बातचीत हो तो मैं तुझे पवित्र मार्ग दिखाऊँ ।

**Hence, if thou holdest Conference with me**
**I'll shew thee path to chastity and truth.**

(۲۰) بہ میداں دو لشکر صف آرا شوند
ز دوری بہم آشکارا شوند

व मैदाँ दुलश्कर सफ़ारा शवन्द ।
ज़ि दूरी बहम आशकारा शवन्द ॥२०॥

व मैदाँ=मैदान में, युद्ध क्षेत्र में

दुलश्कर=दोनों सेनाएँ (मुगलों की और सिखों की)

सफ़ारा=पंक्तिबद्ध

शवन्द=हों

ज़ि=से

दूरी=दूरी (संस्कृत-दूर=फ़ारसी-दूरी)

बहम=परस्पर

आशकारा=प्रकट, प्रत्यक्ष

शवन्द=हों

रणक्षेत्रे च द्वे सेने भवेतामुपसज्जिते ।
दूरादपि च ये दृष्टुं भवेतामनिगूहिते ॥२०॥

लड़ाई के मैदान में (मेरी–तेरी) दोनों सेनाएं पंक्तिबद्ध हों और दूर से ही एक दूसरे को दिखाई पड़ती रहें ।

**( Or else ), in the field our armies be arrayed**
**And which are cognisable from afar.**

(۲۱) میانِ دو ماند دو فرسنگِ راہ
چوں آراستہ گردد ایں رزم گاہ

मियाने दो मानद दो फ़र्संग राह ।
चूँ आरास्ता गर्दद ईं रज़्म गाह ॥२१॥

मियाने दो=दोनों के बीच में

मानद=रहे

दो फ़र्संग=दो कोस (फ़र्संग बराबर एक कोस के होता है)

राह=मार्ग

चूँ=जब

आरास्ता=शोभित (संस्कृत–आराजित=फ़ारसी–आरास्ता)

गर्दद=होती है, होवे

ईं=यह (संस्कृत–अयम्, इदम्=फ़ारसी–ईं)

रज़्म गाह=रणभूमि

सेनयोरुभयोर्मध्ये भूयादध्वं द्विक्रोशकम् ।
एवमाराजितोभूयादारादेतद् रणाङ्गणम ॥२१॥

दोनों (सेनाश्रों के) बीच में दो फ़र्संग रास्ता रहे—जबकि यह रणभूमि सुसज्जित हो ।

**In between the two armies let there be,**
**a two Farsang passage,**
**When position is taken in the field.**

(۲۲) از آں پس در آں عرصۂ کارزار
من آیم به نزدِ تو با دو سوار

अज़ाँ पस दराँ अर्स ए कारज़ार ।
मनायम ब निज़्दे तो बा दो सवार ॥२२॥

अजाँ पस=उसके बाद (अज+आँ+पस)

दराँ=उसके बीच में (दर+आँ)

अर्स=स्थान

ए कार जार=युद्ध के

मनायम्=मै आऊँ, आऊंगा (मन्+आयम्) (संस्कृत-इयाम्=फ़ारसी-आयम्)

ब निज़्दे तो=तेरे निकट

बा दो सवार=दो घुड़सवारों सहित

ततः पर ममुष्मिन् वै युद्धक्षेत्रस्य प्रान्तरे ।
इयासं सन्निधौ तेऽहमारोहिभ्याञ्च रक्षितः ॥२२॥

उसके बाद में युद्ध क्षेत्र के बीच में मै तेरे पास दो घुड़ सवारों के साथ आऊँ (गा)।

**And then in the midst of the battlestead**
**I shall come tot hee with my two horsemen.**

(۲۳) تو از ناز و نعمت ثمر خوردۂ
ز جنگی جوانان نہ بر خوردۂ

तो अज़ नाज़ो नेमत समर खुर्दई ।
ज़े जंगी जवानाँ न बर खुर्दई ॥२३॥

तो=तू, तूने

अज़=से

नाज़ो नेमत=लाड़ चाव (नाज़+ओ+नेमत)

समर=फल (दूसरों की मेहनत का)

खुर्दई=(तूने) खाया है

ज़े=से

जंगी जवानाँ=योद्धा पुरुषों

न=नहीं

बर=ऊपर, फल (यहाँ फल अर्थ अभिप्रेत है)

खुर्दई=(तूने) खाया है

फलं त्वया सदा भुक्तमश्रान्तेन पराजितम् ।
युयुत्सुभ्यो युवभ्यस्त्वं नादः समरजं फलम् ॥२३॥

तूने लाड़ चाव से (बिना मेहनत किये, बिना कष्ट उठाये) फल खाये हैं (दूसरों की मेहनत के)। योद्धा पुरुषों से (लड़कर) तूने फल (मज़ा) नहीं चखा।

**Thou hast tasted the fruits of fondled life**
**And never hast thou matched the men of war.**

(۲۴) بہ میداں بیا خود بہ تیغ و تبر
مکن خلقِ خلاق زیر و زبر

ब मैदाँ बिया ख़ुद ब तेग़ो तबर ।
म कुन ख़ल्के ख़ल्लाक ज़ेरो ज़बर ।।२४।।

ब मैदाँ=मैदान में

बिया=आ

ख़ुद=स्वयं

ब तेग़ो तबर (ब+तेग़+ओ+तबर) तलवार और कटार के साथ

मकुन=मत कर

खल्के=सृष्टि को

खल्लाक=सृष्टिवाला, परमात्मा

ज़ेरो ज़बर=ऊपरनीचे, उथल पुथल

**इदानीं स्वय मायाहि सशस्त्रो समरांगणे ।**
**मा मा हिंसीस्तु निर्दोषां सृष्टिं च परमात्मनः ॥२४॥**

(तू) स्वयं तलवार कटार लेकर मैदान में आ। ईश्वर की ( निर्दोष ) सृष्टि को उथल पुथल मत कर।

यह चुनौती देने के बाद कहीं परमात्मा की दृष्टि में अविनय और अतिरेक न हो गया हो इसलिये गुरुजी परमात्मा की स्तुति करते हैं। इसमें हमें वैदिक ऋषि की भावना के दर्शन होते हैं जो शत्रु से लड़ता भी था। तो परमात्मा को अपना न्याय कर्त्ता मानकर प्रार्थना में लीन हो जाता था "योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस् तं वो जम्भे दध्मः।" (जो हमसे द्वेष करता है, जिसे हम द्वेष करते हैं उसको तुम्हारी दाढ़ में रखते हैं– आपके सुपुर्द करते हैं।)

**Fieldwards thou come thyself with sabre and sword**
**And churn not Creature of the Creator !**

(۲۵) کمال کمالات قایم کریم
رضا بخش و رازق رحاق و رحیم

कमाले कमालात क़ायम करीम।
रज़ाबख़्शो राज़िक़ रिहाक़ो रहीम ॥२५॥

कमाले कमालात=पूर्णों से भी पूर्ण

क़ायम=स्थिर

करीम=करम करने वाला, कृपालु, दाता

रजा बख़्शो=अभीष्ट दानी और

राज़िक़=रिज़्क़ देने वाला, रोज़ी देने वाला

रिहाक़ो=कृपालु और

रहीम=दयालु

सोऽस्ति पूर्णात्पूर्णतरः ध्रुवमस्ति कृपाकरः ।
दाताऽभीष्टस्य चान्नस्य कृपालुः करुणानिधिः ॥२५॥

वह–पूर्णों से भी पूर्ण है, सदा स्थिर रहने वाला है और कृपालु है । इच्छानुसार देनेवाला है, रोटी रोज़ी देने वाला है, कृपालु और दयालु है ।

**He is Perfect and Merciful always,**
**And bestows on request and is Clement.**

(۲۶) اماں بخش بخشندہ و دستگیر
خطا بخش و روزی دہ و دلپذیر

अमाँ बख़्श बख़्शिन्दओ दस्तगीर।
ख़ता बख़्श रोज़ीदिहो दिल पिज़ीर ॥२६॥

अमाँ बख़्श=शरण दायक

बख़्शिन्द ओ=दाता और

दस्तगीर=सहायक

ख़ताबख़्श=दोषों को क्षमा करने वाला

रोज़ीदिहो=रोज़ी-जीविका देने वाला और

दिल पिज़ीर=चित्त प्रसन्न करने वाला

जगतः शरणं दाता तथा हस्तस्य ग्राहकः ।
क्षन्ता सर्वापराधस्य जीविकादो मनोहरः ॥२६॥

(वह सबको) शरण देने वाला है, दाता और सहायक है। अपराधों को क्षमा करने वाला है, जीविका देने वाला है और चित्त को प्रसन्न करने वाला है।

**He grants refuge, is Giver and doth help**
**Condoner of sins, gives bread and doth delight.**

(۲۷) شہنشاہِ خوبی دِہ و رہنموں
کہ بے گوں و بے چوں و چوں بے نگوں

शहन्शाहे ख़ूबीदिहो रहनुमूँ ।
कि बेगूँ वो बेचू वो चूँ बे नुगूँ ॥२७॥

शहन्शाह्=बादशाहों का बादशाह

ख़ूबीदिहो=सुन्दरता–विशेषता, गुण, वर्चस् देनेवाला ओ=और

रहनुमूँ=पथ प्रदर्शक

बेगूँ=वर्णरहित

बेचूँ=अतर्क्य–जिसमें चूँचरा नहीं हो सकती ।

वो=और

चूँ=जब

बेनुगूँ=निराकार

राजराजेश्वरो वर्चःप्रदः पथ प्रदर्शकः ।
वर्णेन रहितोऽतर्क्यस्तथा ऽऽकार विवर्जितः ॥२७॥

(वह) राजाओं का भी राजा है, गुण और विशिष्टता प्रदान करने वाला है, तथा पथप्रदर्शक है। वह वर्ण रहित, (वर्णभेद रहित) और तर्क से परे, और निराकार है।

**The King of kings, source of virtues and the Guide
Beyond the colour and question, past the Shape.**

نہ سازو نہ بازو نہ فوج و نہ فرش (۲۸)
خداوند بخشندۂ عیش و عرش

न साज़ो न बाज़ो न फ़ौज़ो न फ़र्श।
ख़ुदावन्द बख़्शिन्द ए ऐश ओ अर्श ॥२८॥

न साज़ो=न सज्जा, सामान और

न बाज़ो=न बाज़ और (शिकारी पक्षी बाज को पालकर उससे चिड़ियों का शिकार कराना पहले राजाओं का विनोद था)

न फ़ौजो=न सेना और

न फ़र्श=न भूखण्ड, धरती

ख़ुदावन्द=परमात्मा

बख़्शिन्द ए=बख़्शने वाला, देनेवाला

ऐशो=ऐश्वर्य (लौकिक सुख) और (ईशस्य भाव 'ऐश:' फ़ारस्याम्)

अर्श=आकाश (पारलौकिक सुख)

ये सन्ति सज्जया हीनाः श्येनैः सैन्यै र्भुवा नरः ।
तेभ्योऽपि भगवान् दाता किलैश्वर्यापवर्गयोः ॥२८॥

(जिनके पास) न साज सामान है, न बाज़ है, न सेना है और न धरती है, (उन्हें भी कृपा होने पर) भगवान ऐश्वर्य और स्वर्ग देने वाला है ।

**Those without Hawk or Army or the Land,**
**God lavishes them boon and heavenly bliss.**

۱۲۹ جہاں پاک زیر است وظاہر ظہور
عطا مے دہد ہمچو حاضر حضور

जहाँ पाक ज़ेरस्तो ज़ाहिर ज़हूर ।
अता मीदिहद हम्चो हाज़िर हुज़ूर ॥२९॥

जहाँ पाक=पवित्र पृथिवी

ज़ेरस्तो=(ज़ेर+अस्त+ओ) नीचे है और

ज़ाहिर ज़हूर=व्यक्त, प्रकट

अता=धन

मीदिहद=देता है (संस्कृत ददाति=फ़ारसी–दिहद)

हम्चो=समान

हाज़िर=उपस्थित

हुज़ूर=स्वामी

पुनीता पृथिवी यस्याधस्ताद् ध्रुव परिस्थिता।
वसून् ददाति सः साक्षादुपस्थित इवानिशम् ॥२६॥

उस जाहिर जहूर ( साक्षात् प्रकट ) के नीचे यह पवित्र संसार स्थित है। वह साक्षात उपस्थित के समान धन सम्पत्ति देता रहता है।

**Under Him Holy Earth is manifest,**
**Aud whence he endows boons as if present.**

(۳۰) عطا بخش او پاک پروردگار
رحیم است و روزی دِہ ہر دیار

अता बख़्श ऊ पाक परवर्दगार ।
रहीमस्तो रोज़ीदिहे हर दियार ॥३०॥

अताबख़्श=दाता

ऊ=वह

पाक=पवित्र

परवरदिगार=पालन कर्त्ता

रहीमस्त (रहीम+अस्त)=दयालु है

रोज़ीदिहे=रोजी देने वाला

हर दियार=हर देश का

दाता सोऽस्ति पवित्रोऽस्ति सर्वेषां पालकोऽस्ति सः ।
दयालु जीविकादानी देश देशान्तरस्य सः ॥३०॥

वह दाता है, पवित्र और सबका पालन कर्त्ता है । वह दयालु है, और हर देश को रोज़ी देने वाला है ।

**He is Grantor and Holy Fosterer,**
**Is merciful who giveth bread to all.**

کہ صاحب دیار است واعظم عظیم
(۳۱) کہ حسن الجمال ست و رازق رحیم

कि साहिब दियारस्तो आज़म अज़ीम।
कि हुस्नुल जमालस्तो राज़िक़ रहीम ॥३१॥

साहिब=स्वामी

दियारस्तो=(दिग्रार+ग्रस्त+ग्रो) देशों का है ग्रौर

ग्राज़म=महान्

ग्रज़ीम=महानों का

हुस्नुल जमालस्तो (हुस्न+उल+जमाल+ग्रस्त+ग्रो) रूप का सौन्दर्य है ग्रौर

राजिक़=रिज़क़ देने वाला, जीविका देने वाला

रहीम=दयालु

देशानां च पतिः सैव स चास्ति महतां महान् ।
सौन्दर्यस्य छविः सैव विश्वम्भरः कृपाकरः ॥३१॥

(वह) देशों का स्वामी है, (वह) महानों से महान् है । सौन्दर्य में रूप वही है, वह रोज़ी देनेवाला है और दयालु है ।

**The Lord of climes and Greatest of the great,**
**The Beauty of the beauty and Clement.**

(۳۲) کہ صاحب شعور است عاجز نواز
غریب الپرست و غنیم الگداز

कि साहिब शऊरस्त आजिज़ नवाज़ ।
ग़रीबुल परस्तो ग़नीमुल गुदाज़ ॥३२॥

साहिब शऊरस्त=चतुरता का स्वामी है

आजिज़=निर्बल

नवाज़=दयालु, कृपालु, रक्षक

ग़रीबुल परस्तो=दीन प्रतिपालक

ग़नीमुल गुदाज़=दुष्टों का शत्रु

कौशलस्य पतिः सैव निर्बलानां स पालकः ।
दीनबन्धुः सतां चैव खलानां कूलसूदनः ॥३२॥

वह चतुरता का स्वामी है, निर्बलों का पालक है । दीनप्रतिपालक है और दुष्टों का नाशक है ।

**The Lord of prudence, Escort of the weak,
Saviour of the poor and against the wicked.**

(۳۳) شریعت پرست و فضیلت مآب
حقیقت شناس و نبی الکتاب

शरीयत परस्तो फ़ज़ीलत मश्राब ।
हक़ीक़त शनासो नबीउल किताब ।।३३।।

शरीयत परस्तो=धर्म, कानून का पालक है और

फ़ज़ीलत=उच्चता, गुरुता

मश्राब=भरा हुश्रा

हक़ीकत शनासो=वास्तविकता का ज्ञाता

नबी उल् किताब=श्रुतियों का रचयिता

धर्मस्य पालकः सो हि गुरुताभिः परिप्लुतः।
सत्यस्य सैव ज्ञातास्ति श्रुतीनां सैव कारकः ॥३३॥

(वह) क़ानूनों का पालक है और बड़प्पन से पूर्ण है। सत्य का ज्ञाता है और श्रुतियों का रचयिता है।

**Saviour of Faith and full of eminence,**
**Ware of the facts, Inspirer of scriptnres.**

(۳۴) کہ دانش پژوہ است و صاحب شعور
حقیقت شناس است و ظاہر ظہور

कि दानिश् पिज़ोहअस्तो साहिब शऊर ।
हक़ीक़त शनासस्तो ज़ाहिर ज़हूर ॥३४॥

दानिश=ज्ञान (संस्कृत ज्ञानम्=फ़ारसी–दानिश्)

पिज़ोह=रखने वाला

अस्तो=(अस्त+ओ)=है+और

साहिब शऊर=चतुरता का स्वामी

हक़ीक़त शनास=वास्तविकता–सत्य का ज्ञाता

ज़ाहिर ज़हूर=प्रकट, व्यक्त

ज्ञाता सर्वस्य ज्ञानस्य कौशलानां पतिः स च ।
सत्यस्य सैव ज्ञातास्ति व्यक्तश्चैव स व्यञ्जकः ॥३४॥

वह ज्ञान रखने वाला है, और चतुरता का स्वामी है । सचाई का जानने वाला है और प्रकट करने वाला है ।

**Source of knowledge and Lord of the Prudence,**
**Ware of facts and all in all manifest.**

(۳۵) شناسندۂ علم و عالم خدائے
کشائندۂ کارِ عالم کشائے

शनासिन्दाए इल्म आलिम ख़ुदाय ।
कुशाइन्दा ए कारे आलम कुशाय ।।३५।।

शनासिन्दा = ज्ञाता

–ए इल्म = विद्या का

आलिम = ज्ञाता है

ख़ुदाय = ख़ुदा है

कुशाइन्दा = खोलने वाला

ए कारे आलम = दुनियाँ के कामों का

कुशाय = खोलने वाला हैं ।

ज्ञातास्ति सर्वविद्यानां विद्वान् सोऽस्ति स वै प्रभुः ।
प्रकाशको रहस्यानां विश्वस्य सः प्रकाशक ॥३५॥

वह सारी विद्याओं का जानने वाला है, आलिम (विद्वान्) है और प्रभु है। वह दुनियाँ के सारे कामों को खोलने वाला है, प्रकाशक है।

**God is the appriser of the learnings,
And Opener of the work of the universe.**

(۳۶) گذارندۂ کار عالم کبیر
شناسندۂ علم عالم امیر

गुज़ारिन्द ए कारे आलम कबीर ।
शनासिन्द ए इल्म आलिम अमीर ॥३६॥

गुज़ारिन्दा=पूरा करने वाला

ए कारे=कामों का

आलम=दुनियाँ के

कबीर=महान

शनासन्द=जानने वाला

ए इल्म=विद्याओं का

आलिम=विद्वान्

अमीर=सरदार

पूरकोऽस्ति स विश्वस्य कार्याणां सोऽस्ति वै विराट्।
ज्ञातास्ति सर्व विद्यानां विद्वान् विश्वस्य नायकः ॥३६॥

वह दुनियाँ के कामों को पूरा करने वाला है, महान् है। समस्त विद्याओं का ज्ञाता है, विद्वान् है और विश्व नायक है।

उक्त प्रार्थनाओं में हमें गुरुजी के भक्त हृदय के दर्शन होते हैं। इनमें यत्र तत्र प्रभु के गुणों को दोहराया गया है। इसमें प्रभु भक्ति और भक्ति–तन्मयता ही कारण समझना चाहिये। पुनरुक्ति दोष की आशंका नहीं करनी चाहिये क्योंकि भगवान के नाम स्मरण में पुनरुक्ति दोष नहीं होता।

इसके उपरान्त पुनः गुरुजी औरंगजेब को उसकी शपथ तोड़ने के लिये धिक्कार देते हैं।

**He is fulfiller of the work of the world,
Appriser of the learning, He is Great,**

(۳۷) مرا اعتبارے براین حلف نیست
کہ ایزد گواہ است ویزداں یکے ست

मरा ऐतबारे बरीं हल्फ नेस्त।
कि एज़द गवाहस्तो यज़दाँ यकेस्त ॥३७॥

मरा=मुझे

एतबारे=विश्वास

बरीं (बर+ईं) इसके ऊपर

हल्फ़=शपथ

नेस्त=नहीं है

एज़द=भगवान

गवाहस्त=साक्षी है

यज़दाँ=भगवान्

यकेस्त=एक है

मह्यं प्रत्यय एतस्मिन् शपथे नास्ति नास्ति च।
यथाहि–"भगवान्साक्षी"–"एक एव स वै प्रभुः" ॥३७॥

मुझको (तेरी) इस शपथ पर विश्वास नहीं है कि "भगवान् साक्षी है"–"परमात्मा एक है"।

**I do no more rely upon such vows,**
**As "God is witness" and that "God is one".**

(۳۸) نہ قطرہ مرا اعتبارے بروست
کہ بخشی و دیواں ہمہ کذب گوست

न क़तरा मरा ऐतबारे बरूस्त ।
कि बख़्शी वो दीवाँ हमाँ किज़्ब गोस्त ॥३८॥

न=नहीं

क़तरा=बूँद भर

मरा=मुझे

ऐतबारे=विश्वास

बरूस्त=(बर+ऊ+अस्त) उस पर है

बख़्शी वो=दानाध्यक्ष और

दीवाँ=दीवान, अमात्य

हमाँ=सभी

किज़्ब=झूठ

गोस्त=(गो+अस्त) बोलने वाले है

विन्दु मात्र मपि तस्मिन् प्रत्ययो मे न विद्यते ।
दानाध्यक्षा अमात्याश्च सर्वे मिथ्यापलापिनः ॥३८॥

मुझे उस शपथ पर विन्दु भर भी विश्वास नहीं है । क्योंकि तेरे बख्शी (दानाध्यक्ष) और दीवान (आदि पदाधिकारो) जो मेरे पास तेरा सन्देशा लेकर आये थे) सभी झूठ बोलने वाले हैं ।

**I have not a droplet of trust in it,**
**Since all thy emissaries do perjure.**

(۳۹) کسے قول قرآں کند اعتبار
ہماں روز آخر شود زار و خوار

कसे क़ौले क़ुरआँ कुनद ऐतबार ।
हमाँ रोज़े आख़िर शवद ज़ारो ख़्वार ॥३९॥

कसे=कोई (जो कोई) ( संस्कृत कश्चित्=फारसी-कसे )

क़ौले क़ुरआँ=क़ुरान की क़सम पर

कुनद=करता है (करेगा)

ऐतबार=विश्वास

हमाँ=वह भी

रोज़े आख़िर=अन्तिम दिन (अपने जीवन के)

शवद=होता है (होगा)

ज़ारो ख़्वार=अपमानित और दुखी

यो विश्वसिति वाचं ते कुरानस्य कदाचन।
अवश्यं भविता सो ना परिणामेऽपमानितः ॥३६॥

जो कोई तेरी क़ुरान की क़सम का ऐतबार करे (गा), वह भी अन्तिम दिन (मृत्यु के दिन अथवा क़यामत के दिन) में दुःखी और अपमानित हो (गा)।

He who trusteth thy oath on the Koran,
Will ultimately come to grief and flout.

(۴۰) ہُمارَا کسے سایہ آید بہ زیر
بَرو دست دارد نہ زاغ دلیر

हुमाँ रा कसे साया आयद बज़ेर ।
बर ऊ दस्त दारद न ज़ाग़े दिलेर ॥४०॥

हुमाँ रा=(हुमा नामक पक्षी के) (हुमा पक्षी को हजरत सुलेमान की ओर से यह वरदान मिला हुआ है कि वह पक्षी जिसके सिर पर बैठ जायगा उसको बादशाहत मिल जायगी।)

कसे=कोई

साया=छाया (संस्कृत-छाया=फ़ारसी-साया)

आयद=आता है (संस्कृत-आयाति=फ़ारसी-आयद)

बजेर=नीचे

बरू=उसके ऊपर

दस्त=हाथ (संस्कृत-हस्त=फ़ारसी-दस्त)

दारद=डालता है

न ज़ाग़े दिलेर=नहीं दिलेर कौआ (संस्कृत-काक=फ़ारसी-जाग़)

यस्योपरि पतेच्छाया 'हुमा' नाम्नो पतत्रिणः ।
प्रसोढुं तन्न शक्नोति शूरम्मन्योऽपि वायसः ॥४०॥

(जिस) किसी पर हुमा नामक पक्षी की छाया पड़ जाती है, उस पर कौआ हाथ नहीं डाल सकता (चाहे वह कौआ अपने को कितना ही दिलेर क्यों न माने)।

गुरुजी ने लाक्षणिक रूप से बताया है कि जो अमृत चख चुके हैं और शिष्यत्व स्वीकार कर चुके हैं वे सिख मानो हुमा नामक पक्षी की छाया के नीचे गुजर कर बादशाह बन चुके हैं–उन पर औरंगजेब और उसकी सेना रूपी कौए हाथ नहीं डाल सकते चाहे वे कितना ही दिलेर अपने आपको क्यों न समझते हों।

**He who comes under shadow of humaan,**
**On him no rash-crow dareth lay a hand.**

(४१) کسے پشت افتد پس شیر نر
نہ گیرد بز و میش و آہو گذر

कसे पुश्त उफ़्तद् पसे शेर नर।
न गीरद बुज़ो मेशो आहू गुज़र ॥४१॥

कसे=(जो) कोई (संस्कृत–कश्चित्=फ़ारसी–कसे)
पुश्त=पीठ, पृष्ठबल (संस्कृत–पृष्ठ=फ़ारसी–पुश्त)
उफ़्तद=पड़ता है (संस्कृत–उत्पतति=फ़ारसी–उफ़्तद)
पसे=पीछे
शेर नर=नरसिंह
न गीरद=नहीं पकड़ता, लेता (संस्कृत–न गृह्णाति=फ़ारसी–न गीरद)
बुज़ो=बकरा और (संस्कृत–अज=फ़ारसी–बुज़)
मेशो=भेड़ और (संस्कृत–मेष=फ़ारसी–मेश)
आहू=हिरन (संस्कृत–आखु=फ़ारसी–आहू)

संस्कृत का आखु और फ़ारसी का आहू मूल रूप से एक ही पशु के लिये प्रयुक्त होते रहे हैं। कालान्तर में अर्थभ्रंश होकर आखु चूहे के लिये और आहू हिरन के लिये प्रयुक्त होने लगा।

गुजर=राह

सिंहो पृष्ठबलो यस्य वर्त्तते यदि कस्यचित् ।
न गृह्णाति ह्यजो मेषो हरिणस्तान् हि चाध्वनः ॥४१॥

( यदि ) कोई शेर नर को पुश्त के पीछे रखता है तो उस राहगुज़र–मार्ग को बकरा, भेड़, हिरन आदि नहीं पकड़ते ।

गुरुजी का अभिप्राय है कि मेरी पीठ पर ख़ालसा रूपी सिंह का पृष्ठबल है । मेरी तरफ़ मुग़ल सेना रूपी, भेड़, बकरे, हिरन आदि को भेजने का साहस मत करना ।

**The one who is backed by the lion brave,**
**No goat, or sheep, or deer roads his route.**

(۴۲) بہ مصحف قسم خفیہ گر خوردے
نہ یک گام ہم پیش ازاں بردے

ब मसहफ़ क़सम ख़ुफ़िया गर ख़ुर्दमे ।
न यक गाम हम पेश अज़ाँ बुर्दमे ॥४२॥

बमसहफ़=धर्म से

क़सम=शपथ

ख़ुफ़िया=हृदय से, गुप्त रूप से

गर=यदि

ख़ुर्दमे=मै खाता

न यक=नहीं एक

गाम=क़दम

हम=भी

पेश=आगे

अज़ाँ=(अज़+आँ)=उससे

बुर्दमे=उठाता

धर्मतश्चेदशप्स्यम् वा सुगुप्तेनापि चेतसा ।
ना वहिष्यम्पदञ्चैकं तस्माच्चाहमितस्ततः ॥४२॥

यदि मैं गुप्त रूप से भी धर्म की शपथ खाता तो मैं उससे एक क़दम भी आगे पीछे नहीं रखता ।

गुरुजी का संकेत आनन्दपुर साहब तथा चमकौर साहब पर मुगलों के आक्रमण के समय धर्म की क़सम खाने और उसको तोड़कर पुन: हमला कर देने की ओर है ।

**Had I sworn by my faith, yet underhand,**
**Not a step beyond it I would have swerved.**

(۴۳) گرسنہ چہ کارے کنند چہل نر
کہ دہ لک بر آید بر وے بے خبر

गुरस्नाँ चिकारे कुनद् चेह्ल नर।
कि दह लक बरायद् बरू बेखबर ॥४३॥

गुरस्नाँ=भूखे (संस्कृत–दुरशनाः=फ़ारसी–गुरसनाँ)

चि=क्या (संस्कृत–किम्=फ़ारसी–चि)

कारे=कार्य

कुनद=करते हैं, करते (वैदिक संस्कृत–कृण्वन्ति=फ़ारसी–कुनद)

चेह्ल=चालीस

नर=आदमी (संस्कृत–नर=फ़ारसी–नर)

दहलक=दस लाख (संस्कृत–दशलक्ष=फ़ारसी–दहलक)

बरायद (बर+आयद)=ऊपर आते हैं–आये

बरू (बर+ऊ)=उनके ऊपर

बेखबर=बेख़बरों के, निश्चिन्तों के

क्षुत्क्षामाः किन्तु कुर्वन्ति चत्वारिंशन्मिता नराः ।
दश लक्षाः समायाता यानाक्रान्तुमजानतः ॥४३॥

चालीस भखे आदमी क्या काम करते, जबकि दस लाख उन बेखबरों के ऊपर आ पड़े ।

What just the forty starving men would do,
A million when set upon them off hand.

(۴۴) کہ پیمان شکن بے درنگ آمدند
میان تیغ و تیر و تفنگ آمدند

कि पैमाँ शिकन बेदिरंग आमदन्द ।
मियाँ तेग़ो तीरो तुफ़ंग आमदन्द ॥४४॥

पैमाँ शिकन=क़सम–वचन तोड़ने वाले

बेदिरंग=अविलम्ब, सहसा (संस्कृत–विलम्ब=फ़ारसी–दिरंग)

आमदन्द=आये (संस्कृत–अगमन्=फ़ारसी–आमदन्द)

मियाँ=बीच में

तेग़ो तीरो तुफ़ंग=(तेग़+ओ तीर+ओ, तुफ़ंग) तलवार, तीर और भाले

आमदन्द=आये

अकस्माद्धि समायाता शपथस्य विघातकाः ।
असिभिरिषुभिः शस्त्रैः सन्नद्धास्ते तु आगमन् ॥४४॥

सहसा क़सम तोड़नेवाले आ पहुँचे। तलवार, तीर और भालों के बीच आ पहुँचे।

Unawares breachers of the oath did come,
And came they whirling swords, arrows and darts.

(۴۵) بہ لاچارگی درمیاں آمدم
بہ تدبیر تیر و کماں آمدم

ब लाचारगी दरमियाँ आमदम् ।
ब तदबीज़े तीरो कमाँ आमदम् ॥४५॥

ब लाचारगी=विवशता से

दरमियाँ=बीच में

आमदम्=मैं आया (संस्कृत–अगमम्=फ़ारसी–आमदम्)

बतदबीरे=तदबीर सहित, सन्नद्ध होकर

तीरो कमाँ (तीर+ओ+कमाँ)=बाण और धनुष्

आमदम्=मैं आया

तदाहं विवशो भूत्वा प्रादुरासन्तदन्तरा ।
पृपत्कैश्च धनुर्भिश्च सन्नद्धः सन् समाहवे ॥४५॥

तब मैं विवश होकर बीच में आया । तथा धनुष बाण से सन्नद्ध होकर आया ।

**With no recourse then I set foot amidst,**
**I got in war armed with bows and arrows.**

(۴۶) چوں کار از ہمہ حیلتے در گذشت
حلال است بردن بہ شمشیر دست

चूँ कार अज़ हमाँ हीलते दरगुज़श्त ।
हलालस्त बुर्दन ब शमशीर दस्त ॥४६॥

चूँ=जब

कार=कार्य

अज़=से

हमाँ=सारे

हीलते=साधनों

दरगुजश्त=गुज़र गया

हलालस्त=धर्म सम्मत है

बुर्दन=उठाना

ब शमशीर=तलवार के साथ

दस्त=हाथ

सर्वोपाये व्यपगते यदा कार्यं मतिस्थितम् ।
धर्मानुमोदितं तर्हि प्रोक्तं वै शस्त्र धारणं ॥४६॥

जब काम हर उपाय से गुज़र जाय तो तलवार सहित हाथ उठाना धर्म सम्मत है ।

**When the issue gets past all endeavonr,**
**It is sanctioned to raise a sworded arm.**

(۴۷) چہ قرآں قسم را کنم اعتبار
وگرنہ تو گوئی۔ من ایں را چہ کار.

चि क़ुरआँ क़सम रा कुनम ऐतवार ।
वगरने तो गोई मन ईं रा चिकार ॥४७॥

चि=क्या

क़ुरआँ क़सम रा=क़ुरान की क़सम का

कुनम=करूँ

ऐतबार=विश्वास

बगरने=वरना

तो=तू

गोई=कहता है

मन्=मुझे

ईंरा=इससे

चिकार=क्या काम

कथ मर्हामि प्रत्येतुं कुरान शपथं तव ।
शापं शापमपि बूषे किम्पुनःशपथेन मे ।।४७।।

(तेरी) क़ुरान की क़सम का मैं क्या विश्वास करूँ। तू अन्यथा (काम निकालने पर) कह देता है कि मुझे इससे क्या काम।

**How can I trust thy oath on the Koran,**
**Or else thou say'st "What I've to do with it."**

(۴۸) ندانم که این مرد روباه پیچ!
وگر هرگزین ره نیارد به هیچ

न दानम कि ईं मर्द रोबाह पेच ।
वगर हरगिज़ीं रह न यारद बहेच ॥४८॥

न दानम=नहीं जानता (था)

ईं=यह

मर्द=पुरुष (औरंगज़ेब)

रोबाह पेच=लोमड़ी की तरह छलिया

वगर=अन्यथा

हरगिज़ीं (हरगिज़+ईं)=कदापि इस

रह=रास्ते पर

न यारद=नहीं लाता

बहेच=ज़रा भी

न जानामि स्म ना ह्येष भृग्मिायोत्र धूर्त्तराट् ।
क्वचिच्चापि हि नायास्यम्मार्गेऽस्मिन्नहमन्यथा ॥४८॥

मैं नहीं जानता था कि यह पुरुष (औरंगज़ेब) लोमड़ी की तरह चालाक है । वरना मैं इस शपथ पर विश्वास के मार्ग पर कभी भी ज़रा सा भी नहीं आता ।

**I knew not that This Man was crooked as a fox;**
**Or else I would have ne'er come to this path.**

(۴۹) ہر آں کس کہ قرآں بہ قول آیدش
نہ زد بستن و کشتنی بایدش

हर आँ कस कि क़ुरआँ बक़ौल आयदश ।
न ज़द् बस्तनो कुश्तनीं बायदश ॥४६॥

हर=हर एक, प्रत्येक

आं=वह

कस=कोई

कि=जोकि

क़ुरआँ बक़ौल=क़ुरान की क़सम से (के कारण विश्वास से)

आयदश=आता है।

न=नहीं

ज़द बस्तन=घाव बाँधना या लगाना, घायल करना (संस्कृत–क्षत फ़ारसी–ज़द)

कुश्तनो=जान से मारना,

बायदश=उचित है (उसको)

य इयाय प्रतीतः सन् कुरानशपथेन ते।
क्षतं निर्बन्धनं घातं तस्य विद्यादसाम्प्रतम् ।।४६।।

वह हर कोई जो कि क़ुरान की क़सम से आया है उसे घायल करना या मार डालना उचित नहीं है।

**He who has come confided by thy oath ( of Koran )**
**Is not apt to be wounded or murdered.**

(۵۰) بہ رنگِ مگس سایہ پوش آمدند
بہ یکبارگی در خروش آمدند

बरंगे मगस सायापोश आमदन्द ।
बयकबारगीं दर ख़रोश आमदन्द ॥५०॥

बरंगे मगस = मक्खियों के समान (संस्कृत–मक्षस्=फारसी–मगस)

सायापोश = छाया पहनने वाले (रात की छाया में चुपचाप आने वाले अथवा काले कपड़े पहनने वाले)

आमदन्द = आये (संस्कृत–आगमन्=फारसी–आमदन्द)

बयकबारगीं = सहसा

दर ख़रोश = जोश में, उत्तेजित (संस्कृत–सरोष=फारसी–ख़रोश)

आमदन्द = आये

मक्षिका सन्निभा नक्तं गूहमानाः समागताः ।
अकारणाद् युद्धयमानाः सरोषाहि समागताः ।।५०।।

मक्खियों के समान रात में छुपकर वे आये । और (आते ही) वे क्रोध में उत्तेजित हो उठे ।

**Invaders came like swarm of bees in dake,**
**And all of a sudden they were fuming with rage.**

(۵۱) ہر آں کس ز دیوار آمد بروں
بخوردن یکے تیر شد غرقِ خوں

हर आँ कस जि दीवार आमद बरूँ ।
ब खुर्दन यके तीर शुद गर्क़े खूँ ॥५१॥

हर=हर एक
आँ=वह
कस=कोई
जि=से
दीवार=दीवार
आमद=आया
बरूँ=बाहर
बखुर्दन=खाने से
यके तीर=एक ही बाण
शुद=हुआ
गर्क़े खूँ=खून में डूबा

प्राकारात् किल तस्माद्धि यश्चापि निर्गतो बहिः ।
शराघातेन चैकेन शोणे संप्लुतवानभूत् ।।५१।।

हर वह जो कि दीवार से बाहर आया । वह एक ही तीर खाकर अपने ही खून में डूब गया ।

**He who did set his foot out of the wall,**
**Was hit by a dart and drowned in his own blood,**

(۵۲) کہ بیروں نہ آید کسے زاں حصار
نہ خوردند تیرو نہ گشتند خوار

कि बेरूँ ने आयद कसे ज़ाँ हिसार ।
न ख़ुर्दन्द तीरो न गश्तन्दो ख़्वार ॥५२॥

कि=जोकि

बेरूँ=बाहर

ने आयद=नहीं आया

कसे=जो कोई

ज़ाँ (ज़+आँ)=उससे

हिसार=किला

न ख़ुर्दन्द=नहीं खाये

तीरो=तीर और

न गश्तन्द=नहीं गया, नहीं हुआ

ख़्वार=अपमानित

बहिर्नायादतो यो ना दुर्गात्तस्मात् कथञ्चन ।
शराघातं न सः सेहे नापमानमुपागमत् ॥५२॥

जो कोई भी उस क़िले से बाहर नहीं आया, उसने न तीर खाया और न वह अपमानित हुआ ।

**And that who dared not come out of the fort,**
**Saved us a dart and a name for himself.**

(۵۳) چو دیدم کہ ناہر بیامد بجنگ
چشیدن یکے تیرِ من بے درنگ

चु दीदम कि नाहर बयामद बजंग ।
चशीदन् यके तीरे मन बेदिरंग ॥५३॥

चु=जब

दीदम=मैंने देखा

नाहर=नाहर खाँ सेनापति

बयामद=आया

बजंग=युद्ध के लिये (संस्कृत–संगर=फ़ारसी–जंग)

चशीदन्=चखा

यके=एक

तीरे मन्=मेरा तीर

बेदिरंग=बिना विलम्ब, तुरन्त

नाहरं च यदाऽदर्शमागच्छन्तं हि संगरे ।
अशदन्मम चैकेन शरेण ह्यचिरेण सः ॥५३॥

जब मैंने (तेरे सेनापति) नाहरखाँ को युद्ध के लिये आते देखा तो उसने तुरन्त ही मेरे एक तीर का मजा चखा ।

**(As) I saw thy General Nahar come to war,**
**Who knew the taste of my dart then and there.**

(۵۴) ہم آخر گریزد بوقتِ مصاف
بسے خاناں خوردند بیروں گزاف

हम आखिर गुरेज़द व व.क्ते मुसाफ़ ।
बसे खानाँ ख़ुर्दन्द बेरूँ गिज़ाफ़ ॥५४॥

हम=भी

आखिर=अन्त में

गुरेज़द=भागते हैं

बवक़्ते मुसाफ़=युद्ध काल में

बसे=बहुत से, कई

खानाँ=खान लोग, पठान लोग

ख़ुर्दन्द=खाते हैं

बेरूँ=उससे बाहर

गिज़ाफ़=शेख़ी (गिज़ाफ़ ख़ुर्दन्द=शेख़ी खाते हैं, शेख़ी खोरी करते हैं)

पलायन्त्यपि केचिच्च युद्धकालेऽतिकातराः ।
विकत्थनं च कुर्वन्ति केचित् खाना बहिर्गताः ॥५४॥

युद्धकाल में अन्त में भागते भी हैं और बहुत से खान (युद्धक्षेत्र से) बाहर शेखीखोरी (भी) करते हैं ।

**At last thy valiant army left the field,**
**And many of them were boasting from afar.**

(٥٥) کہ افغان دیگر بیامد بہ جنگ
چوں سیلِ رواں ہمچو تیر و تفنگ

कि अफ़ग़ाने दीगर बयामद बजंग ।
चूँ सैले रवाँ हम्चो तीरो तुफ़ंग ॥५५॥

अफ़ग़ाने=अफ़ग़ान फ़ौज

दीगर=दूसरी

बयामद=आई

बजंग=युद्ध के लिये

चुँ=समान

सैले रवाँ=बहता पानी

हम्चो=समान

तीर ओ तुफ़ंग=तीर और भाला

अथान्यदफ़गान्सैन्यमायासीद् युधि दुर्मदम् ।
सन्नद्धं शरशस्त्राद्यै र्जलधारमिवोच्छलत् ।।५५।।

इतने ही में दूसरी अफ़ग़ान सेना युद्ध के लिये आई । बहती जलधारा के समान तीर और भालों के प्रवाह सहित ।

**An other Afghan Forces came to war,**
**Shooting arrows and darts like a tidal wave.**

(٥٦) بسے حملہ کردو بسے زخم خورد
دو کس را بجاں کشت و جاں ہم سپرد

बसे हमला कर्दो बसे ज़ख़्म ख़ुर्द ।
दो कस रा बजाँ कुश्तो जाँ हम सुपुर्द ॥५६॥

बसे=बहुतों ने
हमला=ग्राक्रमण
कर्दो (कर्द+ग्रो)=किया ग्रौर
बसे=बहुतों ने
जख़्म=घाव
ख़ुर्द=खाये
दो कस=दो जनों (गुरु गोविन्द सिंह के दो पुत्रों साहबज़ादे ग्रजीत सिंह ग्रौर जुझारसिंह की ग्रोर इशारा है)
रा=को
बजाँ=जान से
कुश्त=मार दिया
हम जाँ=ग्रपनी जान भी
सुपुर्द=देदी ।

केचिद् व्यापायदन् याताः केचिद् व्यापादिताः स्वयम् ।
द्वौ जनौ हतवन्तस्ते प्राणाँस्तेऽपि च तत्यजुः ॥५६॥

बहुतों ने हमला किया बहुतों ने घाव खाये ( उन्होंने हमारे पक्ष के ) दो आदमियों ( गुरुजी के दो पुत्रों अजीत सिंह, तथा जुझार सिंह ) को मार दिया और अपनी जान भी देदी ।

**They charged us and received many a wounds,**
**They killed two of us and got killed as well.**

(۵۷) کہ آں خواجہ مردودِ رسوا و خوار
نہ آمد بہ میداں بہ مردانہ وار

कि आँ ख़्वाजा मरदूदे रुसवा वु ख्वार ।
न आमद ब मैदाँ ब मरदाना वार ।।५७।।

कि आँ=कि वह

ख्वाजो=ख्वाजा ज़फरबेग

मरदूद=निदिन्त, अभिशप्त

रुसवा=बदनाम

वु ख्वार=ज़लील, अपमानित

न आमद=नही आया

ब मैंदां=मैदान मे

ब मरदानावार=पुरुषोचित ढंग से

ख़्वाजा ज़फ़रबेग स्तेऽभिशप्तो ऽप्यपमानितः ।
नागमत् रणभूमौ स यथा हि पुरुषोचितम् ॥५७॥

वह ख़्वाजा ज़फ़रबेग निन्दित, बदनाम और ज़लील, मैदान में मरदों की तरह नहीं आया ।

**That Khwaza Condemned and ignominous,**
**Dared not come to field in a virile way.**

(۵۸) دریغا! اگر روے او دیدمے
بیک تیر لاچار بخشیدمے

दरेग़ा अगर रू ए ऊ दीदमे ।
बयक तीर लाचार बख़्शीदमे ॥५८॥

दरेग़ा=अफ़सोस

अगर=यदि

रू=मुख

(ए) ऊ=उसका

दीदमे=देखता (देखूँ)

बयक=एक से

तीर=तीर

लाचार=जिसका चारा-इलाज न हो, असाध्य, दुश्चिकित्स्य

बख़्शीदमे=मैं देता

हन्त हन्त यदेतस्य मुखं पश्येम वा क्वचित् ।
दुश्चिकित्स्येन चैकेन शरेण हन्मि तत्क्षणम् ॥५८॥

अफ़सोस, यदि मैं उसका मुँह देखता तो एक असाध्य (जिससे बचने का कोई चारा न हो) तीर उसको देता–(मार डालता) ।

**Upon my word ! Had I descried his face,**
**I'd have planted in him a mortal dart.**

(۵۹) ہم آخر بسے زخم تیر و تفنگ
دو سوئے بسے کشتہ شد بے درنگ

हम आख़िर बसे ज़ख़्मे तीरो तफ़ंग ।
दु सू ए बसे कुश्ता शुद बे दिरंग ॥५९॥

हम=भी

आख़िर=अन्त में

बसे=बहुत से

ज़ख़्मे तीरो तुफ़ंग=तीर और भाले के घाव से घायल हुए

दुसू=दोनों दिशाएँ, दोनों पक्षों में

बसे=बहुत से

कुश्तः शुद=मारे गये

बेदिरंग=अविलम्ब

अन्ते च निहता नैके व्रणैः शस्त्रादिभिः कृतैः ।
उभयोः पक्षयोर्भूरि हता सेनाऽचिरेण ह ॥५६॥

अन्त में, बहुत से (लोग) तीर और तुफंग (भाले) से घायल हुए और दोनों पक्षों के बहुत से आदमी अविलम्ब मारे गये ।

**Many got wounded by arrows and darts,**
**On both the sides many were killed at once.**

(٦٠) بسے بان باریدو تیر و تفنگ
زمیں گشت ہمچو گلِ لالہ رنگ

बसे बान बारीदो तीरो तफ़ंग।
ज़मीं गश्त हम्चो गुले लालारंग ॥६०॥

बसे=बहुत सी

बानबारीदो=बाणवर्षा हुई और

तीरो तुफंग=तीर और भाले (चले)

ज़मीं=धरती (संस्कृत–क्षमा, क्षमी=फ़ारसी–ज़मी)

गश्त=गई, हुई (संस्कृत अगच्छत्=फ़ारसी=गश्त)

हम्चो=समान

गुले लाला=लाला नाम के लाल फूल

रंग=रंग वाली

बहुशो बाणवृष्टिश्च बहुशः खड्ग चालनम् ।
क्षमा याता ततस्तेन रक्त-पुष्प-सम-प्रभा ॥६०॥

बहुत बाणवर्षा हुई और तीर और तलवार (चले) जिससे कि जमीन गुले लाला के रंग की (लाल) हो गई ।

**By immense shooting of arrows and darts,**
**The earth became sanguine like bed of Rose.**

(٦١) سُروپائے انبوہ چنداں شُدہ
کہ میداں پُر از گوئے و چوگاں شُدہ

सरोपाये अम्बोह चन्दाँ शुदा ।
कि मैंदाँ पुर अज़ गोयो चौगाँ शुदा ॥६१॥

सरोपा=सर और पैर

अम्बोह्=भीड़वाला

चन्दाँ=ऐसा

शुदा=हुआ

कि मैंदाँ=कि युद्धक्षेत्र

पुर=भरा हुआ

अज=से (संस्कृत–अस् (ङस्=अस्) फ़ारसी=अज़)

गोयो चौगाँ=गेंद बल्ला (गोय=गेंद, चौगाँ=बल्ला) गेंद से सिर अभि-
प्रेत है और बल्ले से हाथपैर

शुदा=हुआ ।

मुण्डानामुत शाखानां पुञ्जं रेजे यतस्ततः ।
रणक्षेत्रमभूत् पूर्णं कन्दु दण्डादिभिर्यथा ॥६१॥

(कटे हुए) सिरों और हाथों पैरों का ऐसा ढेर हो गया कि युद्ध का मैदान मानो गेंदों और बल्लों से भर गया ।

**Dismembered heads and limbs were strewn, as though,**
**The battle field was full of balls and bats.**

(۶۲) ترنگارِ تیر و ترنگِ کمان
برآمد یکے ہا و ہو از جہان

तिरंगारे तीरो तिरंगे कमाँ ।
बरामद यके हायो हू अज़ जहाँ ॥६२॥

तिरंगारे तीरो=तीर की आवाज़ और

तिरंगे=आवाज़

कमाँ=कमान, धनुष

बरामद=आयी, निकली

यके=एक (संस्कृत–एक=फारसी–यके)

हायो हू=हाय हाय का आर्त्तनाद, चीत्कार

अज़ जहाँ=दुनियाँ से

बाणघोषो धनुर्घोषो यथाहि खलु निर्गतः ।
युगपद् वै विनिष्क्रान्तश्चीत्कार स्तर्हि सर्वतः ।।६२।।

(जैसे ही) तीर और कमान की आवाज़ निकली, (वैसे ही) दुनियाँ से हाय हूय का आवाज़ आने लगी ।

**With whizz of arrows and the twang of bows,**
**Emerged a wail of woe from universe.**

(۶۳) دِگر شورِشِ کیبرِ کینہ کوش
زِ مردانِ مرداں برُوں رفت ہوش

दिगर शोरिशे कैबरे कीनाकोश ।
ज़ि मरदाने मर्दां बरूँ रफ़्त होश ॥६३॥

दिगर=तदुपरान्त

शोरिशे=शोर शराबा, कोलाहल

कैबरे=तीर अन्दाज़, धनुर्धर

कीनाकोश=मन के कीना (कलुष) को पूरा करने की कोशिश करने वाले, प्रतिहिंसालु

ज़ि=से (अज़ का रूपान्तर)

मरदाने मर्दान्=पुरुषों के भी पुरुष, (शूरतमों से)

बरूँ=बाहर

रफ़्त होश=होश गये, होश ठिकाने न रहे ।

जज्ञेऽतस्तुमुलो घोषो हिंसाशंसुर्धनुर्वताम ।
येन शूरतमाश्चापि जज्ञिरे धैर्यविच्युताः ॥६३॥

इसके उपरान्त प्रतिहिंसा की कोशिश करने वाले धनुर्धरों ने (ऐसा) कोलाहल किया कि मर्दों के भी मर्दों के होश भूल गये।

**Then followed the blare of vengeful bowmen,**
**Which turned head of the bravest of the brave.**

(۶۴) ہم آخر چہ مردی کند کارزار
کہ بر چہل تن آیدش بے شمار

हम आख़िर चि मर्दी कुनद कारज़ार ।
कि बर चेह्‌ल तन आयदश बेशुमार ॥६४॥

हम=भी
आख़िर=अन्त में
चि=क्या
मर्दी=पौरुष
कुनद=करता
कारजार=युद्ध
कि=कि
बर=ऊपर
चेह्‌ल=चालीस
तन=सिर्फ (संस्कृत का सनातन, चिरन्तन, सयन्तन वाला 'तन' प्रत्यय =फारसी के 'तनहातन, फकत् तन, चेह्‌ल तन वाले प्रत्यय का समानार्थक है ।
आयदश=आये
बेशुमार=असंख्य

अपि शौर्येन्तथाजाते कथं युद्धं समाचरेत् ।
असंख्या यदि वायायुश्चत्वारिंशत्सु केवलम् ।।६४।।

आखिर मर्दानगी भी क्या युद्ध करे । कि सिर्फ चालीस के ऊपर असंख्य लाग आ चढ़े ।

**(After all) How the prowess only could hold the fight,**
**When countless fall upon just forty men**

(۶۵) چراغِ جہاں چوں شدہ بُرقع پوش
شہِ شب برآمد ہمہ جلوہ جوش

चिराग़े जहाँ चूँ शुदा बुर्क़ापोश ।
शहे शब बरामद हमाँ जल्वा जोश ॥६५॥

चिराग़े जहाँ=विश्वदीप, सूर्य

चूँ=जब

शुदा=हुआ

बुर्क़ा पोश=बुर्का पहनने वाला, अस्तंगत

शहे शब=रात्रि का स्वामी, चन्द्रमा

बरामद=प्रकट हुआ

हमाँ=सभी को

जल्वा जोश=दीप्ति को प्रकट करने वाला

विश्वस्य सविता सूर्यो यदा ह्यस्ताचलङ्गतः ।
राकेशस्तर्ह्यु दितवान् सर्वेषामेव भासकः ॥६५॥

जब विश्वदीप सूर्य पर्दे के पीछे छुप गया तब सबको भासित करने वाला चन्द्रमा उदित हुआ ।

**As the Orb of Day set behind the veil,**
**The Lord of Night emerged glorying all.**

(۶۶) هر آں کس بقولِ خدا آیدش
کہ یزداں برو رہنما آیدش

हर आँ कस बक़ौले ख़ुदा आयदश ।
कि यज़दाँ बरू रहनुमा आयदश ॥६६॥

हर=प्रत्येक

आँ=वह

कस=कोई, आदमी

बक़ौले ख़ुदा=ईश्वर के वचन पर

आयदश=आता है (विश्वास कर लेता है ।)

यज़दाँ=भगवान

बरू (बर+ऊ) उस पर

रहनुमा=पथ प्रदर्शक

आयदश=आता है

जनो य ईश्वरेणोक्ते प्रतीतः संश्च वर्त्तते ।
पथ प्रदर्शकस्तस्य भवेद्धि भगवान् स्वयम् ।।६६।।

वह हर व्यक्ति जो ईश्वर के वाक्यों पर विश्वास करता है। उसके ऊपर भगवान् स्वयं मार्गदर्शक बनकर आता है।

**He who subsisteth by the word of God,
God assisteth upon him as a guide.**

(۶۷) نہ پیچیدہ موئے نہ رنجیدہ تن
کہ بیروں خود آورد دشمن شکن

न पेचीदा मू ए न रंजीदा तन ।
कि बेरूँ खुदावुर्द दुश्मन शिकन ॥६७॥

न=नहीं

पेचीदा=बाँका हुआ, मुड़ा

मू=बाल

न रंजीदा तन=न कष्ट में हुआ शरीर

कि बेरूँ=कि बाहर

खुदावुर्द=(खुद+आवुर्द) स्वतः, सशरीर+आया संस्कृत–स्वतः=
(फ़ारसी–खुद+संस्कृत–आविर्भूत=फ़ारसी आवुर्द)

दुश्मन शिकन=शत्रुघ्न, दुश्मनों को मारने वाला, (मैं)
(संस्कृत–घ्न=फ़ारसी–शिकन)

केशशातं न वा जातं न चैव देह विक्लवः ।
स्वतोऽहं बहिरायातः शत्रुघ्न उत शत्रुजित् ॥६७॥

न बाल बाँका हुआ न देह को कष्ट हुआ कि मैं दुश्मनों को मारने वाला खुद–सशरीर बाहर निकल आया ।

**Without a jerk of hair or scratch on frame,**
**Outward I came myself the killer of foe**

(۶۸) نہ دانم کہ ایں مرد پیماں شکن
کہ دولت پرست است و ایماں شکن

न दानम कि ईं मर्दे पैमाँ शिकन ।
कि दौलत परस्ततो ईमाँ शिकन ॥६८॥

न दानम=नहीं जानता हूँ (था)

कि=कि

ईं=यह (संस्कृत-अयम्=फ़ारसी-ईं)

मर्दे=आदमी (औरंगज़ेब से अभिप्राय है)

पैमाँ शिकन=प्रतिज्ञा तोड़ने वाला

कि=और यह कि

दौलत परस्तस्त=राज्य श्री का पुजारी है

ओ=और

ईमाँ शिकन=धर्म विश्वास को तोड़ने वाला

नाहं विद्मि जनो ह्येषो वचनघ्नो हि वर्तते ।
राज्यश्रियं पूजयिता धर्मविश्वास घातकः ॥६८॥

मैं नहीं जानता था कि यह आदमी वचन तोड़ने वाला है (और) कि दौलत–राज्यसत्ता का पुजारी है और धर्मविश्वास को तोड़ने वाला है ।

**I knew not that this man was a teaser of vow,**
**Aspirer of kingship and teaser of faith.**

(۶۹) نہ ایماں پرستی نہ اوضاعِ دیں
نہ صاحب شناسی نہ محکم یقیں

न ईमाँ परस्ती न औज़ाए दीं।
न साहिब शनासी न मोहकम यक़ीं ॥६९॥

न ईमां परस्ती=न ईमान (धर्म विश्वास) की पूजा है।

न औज़ाए दीं=न दीन (धर्म) के आचार नियम हैं।

न साहिब शनासी=न साहिब (स्वामी, ईश्वर) का ज्ञान है।

न=नहीं है

मोहकम=अटल, अचल

यक़ीं=विश्वास, आस्था।

न निष्ठा धर्म विश्वासे धर्माचारे न वा रतिः ।
न चास्ति हीश्वरज्ञानं न चास्था ध्रुवमास्थिता ॥६६॥

न इसमें धर्म विश्वास के प्रति पूजाभाव है, न धर्माचार है । न मालिक, ईश्वर का ज्ञान है और न दृढ विश्वास है ।

**(Thou hast) No Cherishment of faith or moral code,**
**No knowledge of the Lord nor firm resolve.**

(۷۰) ہر آں کس کہ ایماں پرستی کند
نہ پیماں خودش پیش و پستی کند

हर आँ कस कि ईमाँ परस्ती कुनद ।
न पैमाँ खुदश पेशो पस्ती कुनद ।।७०।।

हर=हर एक

आँ=वह

कि=जोकि

ईमाँ परस्ती=धर्मविश्वास की पूजा

कुनद=करता है

न=नहीं

पैमाँ=वचन, प्रतिज्ञा

खुदश=अपना (संस्कृत-स्वतः=फ़ारसी-खुदश)

पेशो पस्ती (पेश+ओ+पस्ती)=आगा पीछा

कुनद=करता है ।

यश्चापि ना स्वधर्मस्य पूजां कुर्याद्धि निष्ठया ।
प्रतिज्ञा पालने कुर्यान्नासौ तावदितस्ततः ॥७०॥

हर वह आदमी जो अपने ईमान (धर्मविश्वास) को पूजा करता है। (वह) अपनी प्रतिज्ञा में आगा पीछा नहीं करता।

**He who cherisheth duty and the faith,**
**Swerves not from the sanctity of his words.**

(۷۱) مَن ایں مرد را اعتبارے نہ ایست
چہ قرآں قسم ایست یزداں یکے ایست

मन ईं मर्द रा ऐतबारे न एस्त ।
चि क़ुरआँ क़सम एस्त यज़दाँ यकेस्त ।।७०।।

मन=मुझे, मैं

ईं=इस, यह (संस्कृत-अयम्=फ़ारसी-ईं)

मर्द रा=आदमी का

ऐतबारे=विश्वास

न एस्त=नहीं है

चि=क्या है

क़ुरआँ क़सम=क़ुरान की क़सम

एस्त=है

यजदाँ=भगवान

यकेस्त=एक है ।

मम प्रत्यय एतस्मिन् पुरुषेऽस्मिन् नैव विद्यते ।
किमेतस्य कुरानस्याद्वैतस्य शपथेन वा ॥७१॥

मुझे इस आदमी का विश्वास नहीं है । इसके–"कुरान की क़सम है, या भगवान एक अद्वैत है" (जैसी शपथों) से क्या ?

**I have no more confidence in this man,
What worth's his vows on koran and "God's one".**

(۷۲) بہ قرآں قسم صد کند اختیار
مرا قطرہ ناید ازو اعتبار

ब क़ुरआँ क़सम सद कुनद इख़्तियार ।
मरा क़तरा नायद अज़ू ऐतबार ॥७२॥

ब क़ुरआँ=क़ुरान के साथ

क़सम=शपथ, सौगन्ध

सद=सैकड़ों (संस्कृत–शतम्=फ़ारसी–सद)

कुनद=क़सम करे

इख़्तियार=स्वीकार

मरा=मुझे

क़तरा=बिन्दु

नायद=नहीं आता

(अज़+ऊ)=उससे

ऐतबार=विश्वास

स्वीकरोति कुरानस्य शपथानि शतान्यपि ।
विश्वासो न ततो मैति बिन्दुमात्रमपि ध्रुवम् ॥७२॥

(यदि) कुरान की सौगन्ध क़सम भी (ऐसा पुरुष) स्वीकार करे तो भी मुझे उससे एक क़तरा भर विश्वास भी नहीं आता ।

**He may take a hundred vows on Koran,**
**I trust him not as little as a drop.**

अगर चे तुरा ऐतबार आमदे।
कमर बस्त ई पेशवार आमदे ॥७३॥

अगर चे=यदि (यहाँ अगरचे से अगर का काम किया गया है। और चे का प्रयोग पादपूर्त्ति के लिये ही मानना चाहिये। वैसे अगरचे का अर्थ अगर के अर्थ से भिन्न है।)

तुरा=तुझे

ऐतबार=विश्वास

आमदे=आते, होता

कमर=कमर, कटि
बस्त=बँधा हुआ } कटिबद्ध होकर, तैयार होकर

पेशवार=सामने

आमदे=आता

अविश्वसिष्यस्त्वं चेद्धि मामुक्ते वचने स्वयम् ।
कटिं बद्ध्वा ततस्तर्हि चायास्यः सम्मुखे मम ।।७३।।

यदि तुझे (मेरे प्रति कहे हुए अपने वचनों पर) स्वयं विश्वास होता तो कमर बांधकर (प्रस्तुत होकर) स्वयं सामने आता ।

**For, had'st thou credenced upon thy own words,**
**In all earnest, thou would'st have come to me.**

(۷۴) کہ فرض است بر سر ترا ایں سخن
کہ قول خدا و قسم ایں بہ من

कि फ़र्जस्त बर सर तुरा ईं सखुन ।
कि क़ौले ख़ुदा ओ क़सम ईं ब मन ॥७४॥

कि फ़र्जस्त=कि कर्त्तव्य है (था)

बर सर=सर के ऊपर

तुरा=तेरे लिये, तुझे

ईं=यह

सखुन=वचन

क़ौले ख़ुदा=भगवान की शपथ

ओ=और

क़सम=शपथ

ईं=यह

बमन=मुझसे, मेरे साथ

यत स्त्वया म उक्त हि कर्त्तव्यं तस्य पूरणम् ।
शपथं परमेशस्य शपथं चैव माम्प्रति ॥७४॥

तेरे सिर पर यह वाक्य (जो तूने मुझे कहा) फर्ज है (था), भगवान की क़सम और मेरे साथ (की गयी) यह क़सम ।

**It was devoir on thee, the pledge of thine,**
**The oath on God and undertaking to me.**

(۷۵) اگر حضرتِ خود ستادہ شود
بجان و دِلے کار واضح بُود

अगर हज़रते ख़ुद सितादा शवद ।
ब जानो दिले कार वाज़ै बुवद ॥७५॥

अगर=यदि

हज़रते ख़ुद=आप स्वयं

सितादा=खड़े हुए (संस्कृत–स्थितः=फ़ारसी–सितादः)

शवद=होते हैं, हों (संस्कृत–स्यात्=फ़ारसी–शवद)

ब जानो दिले=दिलो जान से, हृदय की अन्तरंगता से

कार=कार्य (संस्कृत–कार्य=फ़ारसी–कार)

वाज़ै=प्रकट, स्पष्ट, (संस्कृत–व्यंजितः, व्यक्तः=फ़ारसी–वाज़ै)

बुवद=होता है, हो, होगा (संस्कृत–भवति=फारसी–बुवद)

भवन्तो यदि तिष्ठेयुः कार्यसिद्धि चिकीर्षया।
हार्दिकेन च भावेन, ततः सिद्धि र्भविष्यति ॥७५॥

यदि आप स्वयं दिलोजान से (काम को पूरा करने के लिये) खड़े हो जाँय तो काम सिद्ध हो जाय।

**If thy noble self would'st resolve aright,
With heart and soul the issue will be clear.**

(۷۶) شمارا کہ فرض است کارے کنی
بموجب نوشتہ شمارے کنی

शुमारा कि फ़र्ज़स्त कारे कुनी ।
बमूजिब नविश्ता शुमारे कुनी ॥७६॥

शुमारा=तुम्हारे लिये

फ़र्जस्त=फ़र्ज है

कारे=काम

कुनी=करे (तू)

बमूजिब=अनुसार

नविश्ता=लिखे हुए (के)

शुमारे=गणना, तुलना

कुनी=करे (तू)

इदं ते करणीयं यत् कर्त्तव्यमनुपालयेः ।
लिखितेन स्वकीयेन तुलय कृतमात्मनः ॥७६॥

तेरे लिये यह फ़र्ज (कर्त्तव्य) है कि तू कर्त्तव्य पालन करे (तथा) (अपने) लिखे हुए के अनुसार (अपने कामों की) तुलना करे ।

**It's thy duty to undertake to do,
And tally with description as thou scribed.**

(۷۷) نوشتہ رسید و بگفتہ زباں
بباید کہ کارے براحت رساں

नविश्ता रसीदो बिगुफ़्ता ज़बाँ ।
बिआयद कि कारे ब राहत रसाँ ॥७७॥

नविश्ता=लिखा हुआ

रसीदो=पाया और

बिगुफ़्ता=कहा हुआ

ज़बा=ज़बानी

बिआयद=उचित है

कि=कि

कारे=कार्य, आचरण

बराहत रसाँ=राहत पहुँचाने वाला (हो)

लिखितं तव प्राप्तं च प्रोक्तं दूत मुखेन च ।
कार्याणि सुखदायीनि भवेयुरिति साम्प्रतम् ।।७७।।

(तेरा) लिखा हुआ (पत्र) मिला और (पत्रवाहक दूत के द्वारा) ज़बानी कहा हुआ भी । उचित है कि काम (सबके लिये) सुख पहुँचाने वाला हो ।

(इससे पता चलता है कि यह ज़फ़रनामा गुरुजी ने औरंगज़ेब के पत्र के उत्तर में और ज़बानी सन्देश के उत्तर में औरंगज़ेब को लिखा था।)

**I received thy note and oral message,**
**It behoves that thy deeds should be a boon to all.**

(۷۸) ہمچوں مرد باید، شود دیدہ ور
نہ شکمے دگر۔ در دہانے دگر

हमूँ मर्द बायद शवद दीदै वर।
न शिकमे दिगर दर दिहाने दिगर ॥७८॥

हमूँ=इसी प्रकार
मर्द=पुरुष (को)
बायद=चाहिये, उचित है
शवद=हो (संस्कृत–स्यात्=फ़ारसी–शवद)
दीदावर=देखने वाला (हमला आवर, क़द आवर, दीद आवर आदि शब्दों के अन्त में लगने वाला 'आवर' प्रत्यय संस्कृत के 'वरच्' (वर) प्रत्यय से तुलनीय है।
न शिकमे=नहीं पेट में
दिगर=और
दर=में } मुँह में
दिहाने=मुँह } मुँह में
दिगर=और

एवं पुरुषकारस्तु सम्यग्दृष्टा भवेदिह ।
मनस्यन्यद्वचस्यन्यन्नैवं नैवोपपद्यते ॥७८॥

इसी प्रकार पुरुष को चाहिये कि देखने वाला हो । पेट में और, मुँह में और नहीं होना चाहिये ।

**And above all a man should be apt to see,
He should'nt be in variance with thought and speech.**

(۷۹) چہ قاضی مرا گفت بیروں نہ ام
اگر راستی خود بیادی قدم

चि क़ाज़ी मरा गुफ़्त बेरूँ नि अम् ।
अगर रास्ती ख़ुद बियादी क़दम ॥७९॥

चि=जोकि
क़ाज़ी=क़ाज़ी ने
मरा=मुझे
गुफ़्त=कहा (संस्कृत–उक्तम=फ़ारसी–गुफ़्त जैसे उन्नीस का गुन्नीस हो
जाता है उसी प्रकार उक्त का गुक्त और उच्चारण सौकर्य
के लिये "गुफ़्त" ।)
बेरूँ=बाहर
ने=नहीं
अम=हूँ
अगर रास्ती=यदि सच्चा है (तू)
ख़ुद=स्वयं
बियादी क़दम=क़दम ला, आ

यदुक्तं न्यायपालेन बहिर्भूतो न चास्म्यहम् ।
अपि चेत् सत्यसन्धस्त्वमायाहि त्वमितः स्वयम् ॥७६॥

जो (तेरे) क़ाज़ी ने मुझे कहा है उससे मैं बाहर नहीं हूँ । यदि तू सच्चा है तो (यहाँ) स्वयं आ ।

(इससे ज्ञात होता है कि औरंगजेब ने अपना क़ाज़ी गुरुजी के पास भेजा था)

**I'm not averse to what thy quazi told (me),**
**If thou art honest come hither thyself.**

(۸۰) چوں آں قول قرآں بباید ترا
رسانم ہماں را بہ نزدِ شما

चुँ आँ क़ौले क़ुरआँ बिआयद तुरा ।
रसानम हमाँ रा ब निज़्दे शुमा ॥८०॥

चुँ=जब, यदि

आँ=वह

क़ौले क़ुरआँ=क़ुरान की क़सम

बिआयद=उचित है, सच्ची है, ठोक है ।

तुरा=तेरी

रसानम्=भेजता हूँ (मैं)

हमाँरा=उसी को

बनिज़्दे=पास

शुमा=तेरे

क़ुरानस्य प्रतिज्ञा ते सत्यमूला भवेद् यदि ।
तामेव प्रति प्रेष्यामि ततोऽहमपि त्वां प्रति ।।८०।।

यदि वह तेरी कुरान की क़सम सच्ची है, तो मैं उसीको तेरे पास भेजता हूँ । (अर्थात् यदि तू कुरान की कसम ठीक और सच्ची खाता हो, मुझे बुलाने के लिये, तो मैं भी वही कसम तेरे पास भेजता हूँ, अर्थात् मैं भी कुरान की कसम खाता हूँ कि तू मुझ से आकर मिल, मैं तुझसे धोखा नहीं करूँगा ।)

पत्र में औरंगजेब ने गुरुजी को कुरान की कसम खाकर विश्वास दिलाया था कि आप बेखौफ़ आइये, मै कुरान की कसम खाकर कहता हूँ कि आप के साथ धोखा नहीं होगा । इस शेर के द्वारा गुरुजी कहते हैं कि यदि तेरी कुरान की क़सम सच्ची है और तेरे मन में खोट नहीं है तो मैं भी कुरान की कसम खाकर कहता हूँ कि तू ख़ुद आ । तेरे साथ धोखा नहीं होगा ।

**If thy vow on Koran is genuine,**
**I hereby do send the same to thee.**

(۸۱) چو تشریف در قصبہ کانگڑ کُنند
وزاں پس مُلاقات باہم شود

चु तशरीफ़ दर क़सबे काँगड़ कुनद ।
बज़ाँ पस मुलाक़ात बाहम शवद ॥८१॥

चु=अगर

तशरीफ़=पधारना

दर=में

क़सबे काँगड़=काँगड़ा नगर में

कुनद=करता है, करे

वज़ाँ पस=(व+अज़+आँ+पस) और उसके बाद

मुलाक़ात=मिलन

बाहम=परस्पर

शवद=हो

यद्यागच्छेद् भगवानत्र काँगड़े नगरे पुनः ।
मिथः सम्मेलनं तर्हि ह्यावयोस्तु भविष्यति ॥८१॥

अगर आप काँगड़ा के क़स्बे में पधारें–और उसके बाद (हम दोनों का) परस्पर मिलन हो।

**If thou comest in the town of Kangar,**
**There, together, a meeting can be held.**

(۸۲) نہ ذرّہ دریں راہے خطرہ تراست
ہمہ قوم بیراڑ حکمِ مراست

न ज़र्रा दर ईं राहे खतरा तुरास्त।
हमा क़ौम बैराड़ हुक्मे मरास्त ॥८२॥

न ज़र्रा=कण मात्र भी नहीं

दर ईं=इसमें

राहे=राह में

खतरा=डर

तुरास्त=तेरे लिये है

हमा=समस्त (संस्कृत–समम्, समा=फ़ारसी–हमा)

क़ौम=जाति

बैराड़=बैराड़ नामक

हुक्मे=हुक्म में

मरास्त=मेरे है।

कणमात्रमपि त्वेह भयं किञ्चिन्न विद्यते ।
समा बैराड़ जातिश्च वर्तते मे वशंवदा ॥८२॥

तेरे लिये इस राह में (मुझसे मिलने के लिये काँगड़ा में आने में) कणमात्र भी खतरा नहीं है । (क्योंकि) सारी बैराड़ जाति मेरी आज्ञा में है ।

There is no danger for thee in this way.
For entire Berad caste's in my command.

(۸۳) بیا تا سخن خود زبانی کنیم
بروئے شما مہربانی کنیم

बिया ता सखुन खुद ज़बानी कुनैम ।
वरू ए शुमा मेहरबानी कुनैम ॥८३॥

बिया = आ

ता = ताकि, जिससे कि

सख़ुन = वचन

ख़ुद = स्वत:

ज़बानी = ज़बान से

कुनैम = करूँ

बरूए शुमा = तुम्हारे प्रति

मेहरबानी = कृपा

कुनैम = करूँ ।

एहि येन वचस्तुभ्यं स्वयमेव वदान्यहम् ।
अनुग्रहमहं कुर्यांम्मत्रायित्वा त्वया सह ॥८३॥

आ, ताकि मैं स्वयं तुझसे बात करूँ । (तथा) तेरे प्रति कृपा करूँ ।

**Come, so that I may myself hold discourse,**
**And unto thee I may shew kindliness**

(۸۴) یکے اسپِ شائستۂ یک ہزار
بیا تا بگیری بہ من ایں دیار

यके अस्पे शाइस्तए यक हज़ार ।
बिया ता बिगीरी ब मन ईं दियार ॥८४॥

यके=एक (संस्कृत–एक=फ़ारसी–यके)

अस्पे=अश्व, घोड़ा (संस्कृत–अश्व=फ़ारसी–अस्प)

शाइस्त:=छाँटा हुआ, चुना हुआ (संस्कृत–शिष्ट:=फ़ारसी–शाइस्त:)

ए यक हज़ार=एक हजार का (संस्कृत–सहस्र=फ़ारसी–हज़ार)

बिया=आ

ता=ताकि

बिगीरी=जीतले (तू)

बमन=मुझसे

ईं=यह

दियार=देश

अश्वो वाजि सहस्राणां विशिष्टो यो हि विद्यते ।
तं नीयास्त्वमितः शीघ्रं यतो मत्तो जयेः क्ष्माम् ।।८४।।

एक हज़ार घोड़ों में से चुनकर एक घोड़ा (ले), (और उसके साथ) आ, ताकि तू मुझसे यह देश (पंजाब) जीत ले ।

गुरुजी का अभिप्राय है कि तू जीतने की इच्छा रखता है तो अश्वमेध यज्ञ की तरह अपना घोड़ा इधर भेजदे और धर्मयुद्ध के द्वारा मुझसे यह देश जीतले । यह क्या कि पत्रों और जबानी सन्देशों के द्वारा शान्ति की बात करता है और छुपकर घात करता है ।

**(Take) A steed selected out of a thousand,**
**Come so that thou may'st win the land from me.**

(۸۵) اگر تو بہ یزداں پرستی کُنی
بکارِ مرا ایں نہ سستی کُنی

अगर तो ब यज़्दाँ परस्ती कुनी ।
ब कारे मरा ईं न सुस्ती कुनी ॥८५॥

अगर=यदि

तो=तू

बयज़्दां=भगवान की

परस्ती=पूजा

कुनी=करता है

बकारे=काम में

मरा=मेरे

न सुस्ती=सुस्ती मत

कुनी=कर

यदि त्वं परमेशस्य पूजनं नु करोषि ह ।
मत्कार्ये खलु ह्येतस्मिन्नालस्यं कुरुतात् पुनः ॥८५॥

यदि तू भगवान की पूजा करता है तो मेरे इस कार्य में सुस्ती न कर ।

**If thou worshippest God the lord of all,**
**In this work of mine do not slacken speed.**

(۸۶) بباید کہ یزداں شناسی کنی
نہ گفتہ کساں کس خراشی کنی

बिश्रायद कि यज़्दाँ शनासी कुनी ।
न गुफ़्ता कसाँ कस खराशी कुनी ॥८६॥

बिश्रायद=उचित
कि=कि
यज़्दाँ=भगवान
शनासी=जानना
कुनी=करे (तू)
न=नहीं
गुफ़्ता=कहा हुआ, कहने पर
कसाँ=किसी के (सं. कस्=फ़ा. कस, बहुवचनों में भेद होकर संस्कृत में 'के' बनता है फ़ारसी में 'कसाँ')
कस=किसी को,
ख़राशी=दुःख देना
कुनी=करे (तू)

समीचीनमिदं स्याने यदीशं विद्धि यत्नतः ।
केनचिच्चापि ह्युक्तस्त्वं मा मा हिंसीस्तु कस्यचित् ॥८६॥

(तेरे लिये) उचित है कि तू ईश्वर को जाने । किसी के कहने पर किसी को दुखी न कर ।

**It behoves thee that thou shouldest know God,**
**And molest no one at someone's instance.**

(۸۷) عجب است انصاف دیں پروری
کہ حیف است صد حیف ایں سروری

अजब अस्त इन्साफ दीं परवरी ।
कि हैफ़स्त सदहैफ़ ईं सरवरी ।।८७।।

अजब=विचित्र

अस्त=है (संस्कृत–अस्ति=फ़ारसी–अस्त)

इन्साफ़=न्याय

दीं परवरी=धर्मरक्षकत्व

कि=कि

हैफ़स्त=अफ़सोस है

सदहैफ़=सौ बार अफ़सोस है

ईं=यह

सरवरी=सरदारी, बादशाहत

विचित्रमस्ति ते न्यायः धर्म रक्षकता तथा।
धिक् ते प्रभुत्वमैश्वर्यं धिगस्तु राज्यकारिता ॥८७॥

तेरा न्याय और धर्मरक्षकत्व विचित्र है। ऐसी सरदारी पर अफ़सोस है अफसोस है।

**Strange is thy justice and thy love for faith,**
**I pity thee and this kingship of thine.**

(۸۸) عجب ایں عجب است فتوائے شما
بجز راستی حرف گفتن خطا

अजब ईं अजीबस्त फ़तवा शुमा ।
बजुज़ रास्ती हर्फ़ गुफ़्तन ख़ता ॥८८॥

अजब=विचित्र

ईं=यह

अजीबस्त (अजीब+अस्त)=अजीब है

फ़तवा=व्यवस्था, धर्म व्यवस्था

शुमा=तेरा

बजुज़=सिवा

रास्ती=सच्चाई

हर्फ़=शब्द, वाक्य

गुफ़्तन=कथन

ख़ता=पाप, अपराध

अहो चित्रमिदं स्यात्ते धर्मस्यैतद् व्यवस्थितम् ।
यतो ह्यसत्यकथनं हि धर्मबुध्याऽपराध्यते ॥८८॥

तेरा यह फ़तवा (धर्म की व्यवस्था) अजीब है अजीब है। (क्योंकि) सचाई के सिवा (कुछ भी) कहना अपराध है।

**It's strange as strange is all thy commandment,**
**To speak other than the truth is a sin.**

(۸۹) مزن تیغ بر خونِ کس بے دریغ
ترا نیز خوں چرخ ریزد بہ تیغ

मज़न तेग़ बर ख़ूने कस बेदरेग़।
तुरा नीज़ ख़ूँ चर्ख़ रेज़द बतेग़ ॥८६॥

मज़न=मत मार (संस्कृत–मा हन्याः=फारसी–मज़न)
तेग़=तलवार
बर=पर, के ऊपर
ख़ूने=रक्त
कस=किसी के (संस्कृत=कः, कस्, कस्य=फारसी–कस)
बेदरेग़=बे हिचक
तुरा=तेरा
नीज़=भी
ख़ूँ=रक्त
चर्ख़=आकाश
रेज़द=फैलाता है
बतेग़=तलवार से

माजहि कस्यचिद् जन्तोः प्रसह्य चासिना घ्नन् ।
शोणितं तेऽपि दैवेन पश्य खड्गेन पात्यते ॥८९॥

किसी के ऊपर बेधड़क तलवार चलाकर ख़ून मत बहा। तेराभी ख़ून आकाश (भगवान् नियति) तलवार से फैलाता है–(फैलावेगा)।

(इस शेर में हमें गुरुजो के भविष्य द्रष्टा रूप के दर्शन होते हैं। वास्तव में औरंगजेब के उपरान्त उसके वंश का जिस निर्दयता से रक्त बहाया गया, उससे इस शेर को सत्यता प्रमाणित होती है।)

**Plauge not thy sword into any ablow, (Behold),**
**The Heanens spill thy blood too by the sword.**

(۹۰) تو غافل مشو مرد یزداں شناس
کہ او بے نیاز است از ہر سپاس

तु ग़ाफ़िल मशौ मर्दे यज़्दाँ शनास ।
कि ऊ बेनियाज़स्त अज़ हर सिपास ॥९०॥

तु=तू

ग़ाफ़िल=प्रमादी, बेहोश

म शौ=मत हो

मर्दे=पुरुष

यज़्दाँ शनास=ईश्वर ज्ञानी

कि=कि

ऊ=वह

बेनियाज़स्त=बेनियाज़ है, निस्पृह–निरपेक्ष है

अज़=से

हर सिपास=हर एक धन्यवाद से

मा भूस्त्वमुन्मदस्तावदीशज्ञम्मन्य रे नर।
स सर्व प्रणिपातेभ्यो निरपेक्षस्तु वर्तते ॥६०॥

ईश्वर को जानने का दावा करने वाले आदमी ! तू गाफ़िल मत हो। क्योंकि वह (परमात्मा) हर प्रकार के धन्यवादों (और प्रणामों) से निरपेक्ष है।

**Remiss be not ! O Man ! O knower of God !**
**For, He is nonchalant to every praise.**

(۹۱) کہ او بے محابست شاہان شاہ
زمین و زمان سچاے پاتشاہ

कि ऊ बे मुहावस्त शाहानेशाह ।
ज़मीनो ज़माँ सच्चए पातशाह ॥६१॥

कि=कि

ऊ=वह

बे मुहावस्त=बिना सन्देह है

शाहानेशाह=शाहों का शाह

ज़मीनो ज़माँ=पृथ्वी और समय का, देशकाल का

सच्चा ए पातशाह=सच्चा स्वामी है

निःसन्देह मपि राज्ञां राजराजेश्वरोस्ति सः ।
स चास्ति देशकालानां सत्यसत्तो जगत्पतिः ॥६१॥

वह निःसन्देह बादशाहों का भी बादशाह है। वह देश काल का (पृथ्वी और समय का) सच्चा स्वामी है।

**For, doubtlessly He is the king of kings,**
**Of th'clime and th'time and is the Real King.**

(۹۲) خداوندِ ایزد زمین و زماں
کنَد راست ہر کس مکیں و مکاں

खुदावन्दे एज़द ज़मीनो ज़माँ।
कुनद रास्त हर कस मकीनो मकाँ ॥६२॥

खुदावन्द=स्वामी

एज़द=भगवान

ज़मीन=पृथ्वी

ओ ज़माँ=और समय (का) (संस्कृत–समय=फ़ारसी–ज़माँ)

कुनद=करता है

रास्त=सच्चाई

हर कस=हर एक का

मकीनो मकाँ=निवासी और निवास, मकीन का भावार्थ है मकान में रहने वाला अर्थात् जीव, और मकाँ–मकान का अर्थ है देह।

सर्वेषां देशकालानां स चाधीशो जगत्पतिः ।
स तु न्यायं प्रकुरुत आश्रितमाश्रयं प्रति ॥९२॥

वह परमेश्वर देशकाल का स्वामी है और वह प्रत्येक आश्रय और आश्रित का न्यायकर्त्ता है ।

**He is the Lord of the Clime and the time;**
**Doth justice to the Dweller and th'Abode.**

**Dweller=The soul**
**Abode=The body**

(۹۳) ہم از پیر موری ہم از پیل تن
کہ عاجز نوازست غافل شکن،

हम अज़ पीर मोरे हम अज़ पीलतन ।
कि आजिज़ नवाज़स्तो ग़ाफ़िल शिकन ।।९३।।

हम=भी

अज़=से

पीर=वृद्ध, कमज़ोर

मोर=चींटी

हम=भी

अज़=से

पीलतन=हाथी

कि आजिज़ नवाज़स्त=कि निर्बल का रक्षक है

ग़ाफ़िल शिकन=ग़ाफ़िलों को नष्ट करने वाला है ।

वर्तते स समानो हि पिपीले हस्तिनि प्रभुः ।
यतः स निर्बलत्राता तथैवोन्मत्तनाशनः ॥९३॥

वह निर्बल चींटी और विशाल हाथी सबसे समान व्यवहार करता है । वह निर्बल का रक्षक है और ग़ाफ़िल को नष्ट करने वाला है ।

**The same to the ant and the elephant,**
**The saviour of the weak and the destroyer**
**of the remiss.**

(۹۴) کہ اورا چو اسم است عاجز نواز
کہ از ہر سپاس است او بے نیاز

कि ऊ रा चु इस्मस्त आजिज़ नवाज़ ।
कि अज़ हर सिपासस्त ऊ बेनियाज़ ॥९४॥

कि = कि

ऊरा = उसका

चु = जब

इस्मस्त (इस्म + अस्त) = नाम है

आजिज़ नवाज़ = निर्बल का रक्षक

अज़ = से

हर सिपासस्त = प्रत्येक धन्यवाद (से) है

ऊ = वह

बेनियाज़ = निरपेक्ष, निस्पृह

तस्य नाम हि विद्येत निर्बलानां च रक्षकः ।
तथा च प्रणिपातेभ्यो सर्वेभ्यः स निरीहशः ।।९४।।

कि जब उसका नाम निर्बलों का रक्षक है कि वह हर धन्यवाद –(प्रणाम आदि) से निरपेक्ष–निरीह है ।

**Since His name is–"The Saviour of the weak"**
**From all cajoling he is nonchalant.**

(۹۵) کہ او بے نگوں است او او بے چگوں
کہ او رہنما است و او رہنموں

कि ऊ बे नुगूनस्तो ऊ बे चुगूँ ।
कि ऊ रहनुमा अस्तो ऊ रहनुमूँ ॥९५॥

कि = कि
ऊ = वह
बेनुगूनस्त = रंग से रहित है, राग मुक्त है
ऊ = वह
बेचुगूँ = प्रश्नात्मकता से परे, अतर्क्य, तर्कातीत
कि = कि
ऊ = वह
रहनुमा = पथप्रदर्शक
अस्त = है
ऊ = वह
रहनुमूँ = पथान्वेषी, पथिक

वर्णेन रहितः सो हि तर्कातीतः स वै प्रभुः ।
पथप्रदर्शको वै सः पान्थश्चापि स वै स्मृतः ॥६५॥

वह वर्ण से रहित (वर्णभेद से रहित) है, वह तर्क से परे है। वह पथ प्रदर्शक भी है और यात्री भी है।

**He is beyond thec olour and the doubt,**
**He is the Guide and He's the Wayfarer.**

(۹۶) بہ قرآں قسم فرض بر سر ترا
رساں کارِ خوبی بگفتہ شما

ब क़ुरआँ क़सम फ़र्ज़ बर सर तुरा।
रसाँ कारे ख़ूबी बगुफ़्ता शुमा ॥९६॥

ब क़ुरआँ=कुरान के साथ

क़सम=शपथ

फ़र्ज़=कर्त्तव्य

बर सर=सिर पर

तुरा=तेरे लिये, तेरे (है)

रसाँ=पहुँचा

कारे=काम

ख़ूबी=सुन्दरता (से)

बगुफ़्ता=कहे हुए के साथ (के अनुसार)

शुमा=तेरे

कुरानं शपतोक्तं यत्कर्त्तव्यं शिरसा त्वया ।
नेयं यथा प्रतिज्ञातं कार्यं सुष्ठुतया त्वया ॥६६॥

कुरान की क़सम के साथ (कहा हुआ) तेरे सिर पर फ़र्ज़ है ।
अपने कहे के अनुसार अच्छाई के काम को (मंजिल तक) पहुँचा (कर) ।

The oath by the Koran is due on thee,
Make good the promise as spoken by thee.

बि बायद तो दानिश परस्ती कुनी ।
बकारे चिरा चीरा दस्ती कुनी ॥९७॥

बिबायद=उचित है

तो=तू

दानिश=ज्ञान, बुद्धि

परस्ती=पूजा

कुनी=कर (तू)

बकारे=काम से, काम में

चिरा=क्यों

चीरा दस्ती=अत्याचार

कुनी=करता है (तू)

उचितं यदि वृखीथाः प्रज्ञारार्थं च कर्माणि ।
किं कारणं प्रकुर्वीथा अत्याचारं निरन्तरम् ॥६७॥

उचित है कि तू बुद्धि–ज्ञान की पूजा करे (अक्ल से काम ले), (उसके, परमात्मा के) काम में क्यों अत्याचार करता है ।

**It's meet that thou should'st worship the prudence,**
**Why dost thou persecute in His errand.**

(۹۸) چہا شد کہ چوں بچگاں کشت چار
کہ باقی بمانند پیچیدہ مار!

चिहा शुद कि चूँ बच्चगाँ कुश्त चार।
कि बाक़ी बिमाँदन्द पेचीदा मार ॥९८॥

चिहा=क्या (संस्कृत–किम=फ़ारसी–चि, चिहा=व्रजभाषा–कहा)

शुद=हुआ

कि चूँ=कि जब, यदि

बच्चगाँ=बच्चे (संस्कृत–वत्सः=फ़ारसी–बच्चः–बच्चा)

कुश्त=मारे गये (संस्कृत–क्रुष्ट=फ़ारसी–कुश्त)

चार=चार (संस्कृत–चत्वारः=फ़ारसी–चार)

बाक़ी=शेष

बिमाँदन्द=बचे हुए हैं

पेचीदा=कुण्डल वाले

मार=सर्प

कि जातं शमितास्तत्र चत्वारःशिशवो यदि ।
शेषा अद्यापि विद्यन्ते कुण्डलिता महाविषाः ॥६८॥

क्या हुआ अगर चार बच्चे (साहबजादे, अजीतसिंह, जुझारसिंह, जोरावरसिंह, फतहसिंह) मारे गये । अभी कुण्डल वाले महाविष सर्प शेष बचे हुए हैं ।

What matters if four of my sons are slain !
As yet are left behind the lurching snakes

(۹۹) چہ مردی کہ اخگر خموشاں کنی
کہ آتش دماں را بدوشاں کنی

चि मर्दी कि अखगर खमोशाँ कुनी ।
कि आतिश दमाँ रा बदोशाँ कुनी ।।९९।।

चि=क्या (संस्कृत–कि=फ़ारसी–चि)
मर्दी=मर्दानगी, पौरुष
कि=कि
अखगर=चिनगारी
खमोशाँ=शान्त
कुनी=करता है (तू)
कि=कि, और
आतिश दमांरा=अग्नि, जिनके श्वास में है ऐसे अग्नि स्वरूपों को, अर्थात् मनस्वियों को
बदोशां=कन्धे के साथ, कन्धे तक
कुनी=करता है (तू)

स्फुलिङ्गं शाम्यति त्वं हि किमस्ति तत्र पौरुषम् ।
अग्निजिह्वान् चार्चींषि स्कन्धदघ्नानि ह्यंधसे ॥६६॥

यह क्या मर्दानगी है कि तू चिनगारियों को बुझाता है और अग्नि निःश्वासों (यहाँ श्लेष है–अग्नि है जिनके निःश्वास में ऐसे मनस्वी जनों को–तथा अग्नि की लपटों) को कन्धे तक उठाता है ।

**What's this manliness that thou smother'st sparks,**
**And flames of fire thou let'st leap shoulder high.**

(۱۰۰) چه خوش گفت فردوسیِ خوش بیاں
شتابی بود کارِ آهرمناں

चि खुश गुफ़्त फ़िरदौसिये खुशत्रयाँ ।
शिताबी बुवद कारे आहरमनाँ ॥१००॥

चि=क्या ही
खु़श गुफ़्त=सुन्दर कहा है
★फ़िरदौसी=फ़िरदौसी कवि (ईरान का प्रसिद्ध कवि जिसने ग़ज़नवी की प्रशंसा में शाहनामा लिखा था)
खु़शबयाँ=सुन्दर ढंग से बयाँ करने वाला, सुश्लोक
शिताबी=जल्दी
बुवद=होता है (संस्कृत-भवति=फ़ारसी-बुवद)
कार=काम
×ए आहरमनाँ=शैतान का (संस्कृत का पुराणोक्त अहिरावण ईरान के आहरमन् से तुलनीय हैं। दोनों दुष्टता के प्रतीक के रूप में वर्णित हुए हैं।)

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

★फिरदौसी का संस्कृतीकरण करके मैंने इसे प्रदोषी लिखा है।
×अहरमन् का संस्कृतीकरण करके मैंने इसे अहिरावण लिखा है।
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

अहो सूक्तमिदं सूक्तं सुश्लोकेन प्रदोषिना।
त्वराहिरावणानां च लक्षण मनुवर्तते ॥१००॥

सुन्दर ढंग से बयान करने वाले (सुश्लोक) फिरदौसी कवि ने कितना अच्छा कहा है कि—"जल्दी का काम शैतान (आहरमन) का होता है।"

How well said Firdausi the Silver-Tongue !
'Haste is the quality of Aharman".

Aharman=Satan

(۱۰۱) کہ در بارگاہت من آیم شما
وزاں روز باشی تو شاہد ہماں

कि दर बारगाहत मनायम शुमा ।
वज़ाँ रोज़ बाशी तु शाहिद हुमाँ ॥१०१॥

कि = कि
दर = में
बारगाहत = तेरी बारगाह } तेरी बारगाह में
मनायम = मै आऊँ
शुमा = तेरी
वज़ाँ (व+अज़+आँ) = और उससे
रोज़ = दिवस } और उस दिन से
बाशी = होवे, होगा
तु = तू
शाहिद = साक्षी
हुमाँ = इस तरह

राज्य संसदि ते चाहं यतः प्रभृति प्राप्नुयाम् ।
ततः प्रभृति साक्षित्वं ममैवं कर्त्तुमर्हसि ॥१०१॥

तेरी राज्य सभा में (तेरे शपथपूर्वक निमंत्रण के अनुसार) जब से मैं तेरे पास आऊँ, उसी दिन से तू इस प्रकार साक्षी होगा। (अर्थात् यदि मै दरबार में आऊँ और मेरे साथ धोखा हुआ तो क़यामत के दिन तू साक्षी होगा कि यह व्यक्ति मेरे विश्वास के कारण संकट में पड़ा।)

**If I came to the Royal court of thine,**
**Thou shall't be my witness and surety thence.**

(۱۰۲) وگرنہ تو ایں ہم فرامش کند
ترا ہم فراموش یزداں کند

वगरने तो ईं हम फ़रामुश कुनद ।
तुरा हम फ़रामोश यज़्दाँ कुनद ॥१०२॥

वगरना=अन्यथा यदि
तो=तू
ईं=यह
हम=भी
फरामुश=भूला हुआ } भुलादे
कुनद=करता है, करे
तुरा=तुझे
हम=भी
फ़रामोश=विस्मृत, भूला हुआ
यज़्दाँ=भगवान
कुनद=करे ।

अथवा त्वमिदं वाचं विस्मरेर्यदि वा पुनः ।
विस्मर्यास्त्वाऽपि विश्वेश एवं त्वयि कृते सति ॥१०२॥

और यदि तू यह (बुलाकर सफ़ाई करने के वादे को) भी भूल जाय तो तुझे भी भगवान भूल जायगा ।

**Or else, if thou forsakest even this,**
**Thou too shalt be forsaken by the God.**

(۱۰۳) اگر کار ایں بر تو بستی کمر
خداوند باشد ترا بہرہ ور

अगर कार ईं बर तो बस्ती कमर ।
ख़ुदावन्द बाशद तुरा बहरैवर ॥१०३॥

अगर=यदि
कार=काम
ईं=इस
बर=पर
तो=तू
बस्ती=बाँधे
कमर=कमर
ख़ुदावन्द=परमात्मा
बाशद=हो, होगा (संस्कृत=भविष्यति=फ़ारसी–बाशद)
तुरा=तेरा
बहरावर=लाभकर

एतास्मिन् मम कार्ये त्वं कटिं बद्ध्वाऽऽचरे यदि ।
भगवांश्चापि ते तावदुपकारी भविष्यति ॥१०३॥

अगर (मेरे) इस काम पर तूने कमर कसली तो परमात्मा तेरे लिये लाभकारी, उपकारी होगा ।

**If be'st thou resolute to do this work,**
**God shall be beneficial unto thee.**

(۱۰۴) کہ ایں کارِ نیک آست و دیں پروری
چو یزداں شناسی۔ بجاں برتری

कि ईं कारे नेकस्त दीं परवरी।
चु यज़्दाँ शनासी बजाँ बरतरी ॥१०४॥

कि=कि

ईं=यह

कार=काम

नेकस्त=नेक है

दीं परवरी=धर्म रक्षा है

चु=जब (यहाँ इसका अर्थ 'कि' है।)

यज़्दाँ शनासी=भगवान को जानना, आस्तिक्य

बजाँ=जान के साथ

बरतरी=भलाई है।

सुकृतं पुनरेवेदं धर्मत्राणमपि त्विदम ।
एतद्धि परमास्तिक्यमुच्छ्रायश्चायमात्मनः ॥१०४॥

यह काम अच्छा है, धर्मरक्षा का है ईश्वर को जानना है और प्राणों की भलाई का है ।

**It's a noble deed and defence of faith,**
**It's true knowledge of God and bliss of soul.**

(۱۰۵) تُرا من نه دانم که یزداں شناس
برآمد ز تو کارہا دل خراش

तुरा मन न दानम कि यज़्दाँ शनास ।
बरामद ज़ि तो कारहा दिल ख़राश ।।१०५।।

तुरा=तुझे
मन=मैं
न दानम=नहीं जानता
कि=कि
यज़्दाँ शनास=भगवान को जानने वाला है
बरामद=मिले, प्राप्त हुए
ज़ि=से } तुझ से
तो=तुझ }
कारहा=काम का बहुवचन (संस्कृत में भी प्रथमा के बहुवचन में "जस =अस=अह्" लगते हैं फ़ारसी में 'हा' लगता है
तुलनीय-है संस्कृत-नराः (उच्चारण 'नराह्')=फ़ारसी-नरह।)
" अपकाराः (उच्चारण अपकाराह्)=फ़ारसी-कारहा
दिल ख़राश=दिल दुखाने वाले, दिल तोड़ने वाले

नाहं त्वामभिजानामि ह्यपित्वमसि चास्तिकः ।
प्राप्तास्त्वत्तो हि भूयाँन्सोऽपकारा हृदयन्तुदाः ॥१०५॥

मैं तुझे ईश्वर को जानने वाला (आस्तिक) नहीं जानता (समझता) क्योंकि तुझसे अनेक दिल को दुख पहुँचाने वाले काम मिले हैं (हुए हैं) ।

I do'nt believe thee a believer in God,
From thee egressed many heart-rending deeds.

(۱۰۶) شناسد همین تو یزدان کریم
نخواهد همین تو بدولت عظیم

शनासद हमीं तो बयज़्दाँ करीम।
न ख़्वाहद हमीं तो बदौलत अज़ीम ॥१०६॥

शनासद=जानता
हमीं=इस तरह
तो=तू
बयज़्दाँ=भगवान्
करीम=कृपालु
न=नहीं
ख़्वाहद=चाहता
हमीं=इस तरह
तो=तू
बदौलत=दौलत-शासन से
अज़ीम=महान्

अज्ञास्यस्त्वं जगन्नाथं कृपालुं करुणाकरम् ।
नैविप्यस्त्वं कदाचिद्धि महत्त्वामेवमर्जितम् ॥१०६॥

यदि तू भगवान को कृपालु जानता तो तू इस प्रकार शासन से बड़प्पन नहीं चाहता ।

**If thou wert a believer in God's grace,**
**Thou would'st not greatness by th'empire Thus earned.**

(۱۰۷) اگر صد بہ قرآں بہ خوردی قسم
مرا اعتبارے نہ یک ذرہ دم

अगर सद् बक़ुरआँ बिख़ुरदी क़सम ।
मरा ऐतबारे न यक ज़र्रे दम ॥१०७॥

अगर=यदि
सद=सौ (संस्कृत–शतम्=फ़ारसी–सद)
बक़ुरआँ=क़ुरान से
बिख़ुरदी=खाता है (तू)
क़सम=शपथ
मरा=मुझे
ऐतबारे=विश्वास
न=नहीं
यक=एक (संस्कृत–एक=फ़ारसी–यक)
ज़र्रादम=कणमात्र (जर्रा=कण, दम=मात्र)

शंशप्यसे कुरानस्य वचनानि शतान्यपि ।
कणमात्रमतस्तेषु प्रत्ययो न भवेन्मम ॥१०७॥

अगर तू क़ुरान से सौ क़सम खाय, (तोभी) मुझे कणमात्र भी विश्वास नहीं है ।

**Should hundred vows by Koran dost thou take,**
**I would not trust an iota upon it.**

(۱۰۸) خوشت شاہ شاہان اورنگ زیب
کہ چالاک دست است چابک رکیب

खुशत शाहे शाहान औरंगज़ेब ।
कि चालाक दस्तस्त चाबुक रकेब ॥१०८॥

खुशत=खुश है (तू)

शाहेशाहान=बादशाहों का बादशाह

औरंगज़ेब=ऐ औरंगज़ेब

कि=कि

चालाक दस्तस्त=चालाकदस्त है, हाथ चालाक है

चाबुक रकेब=चाबुक वाला सवार, दण्डशक्ति वाला आरोही ।

शाहानुशाहमात्मानं मन्यमानः प्रसीदसि ।
सुदक्षं वागुरावन्तमहो शासन शोभन ॥१०८॥

ऐ, औरंगज़ेब ! तू शाहों का शाह (अपने को मानकर) खुश है । और (अपने को) चालाक दस्त (दक्षपाणि) तथा सुयोग्य चाबुक सवार (जो शासन पर दृढ़ता से दण्ड के द्वारा शासन करता हो) (समझता) है ।

यहाँ जिन गुणों की चर्चा अथवा आरोप है उनका कथन– "तू ऐसा वास्तव में है नहीं" यह बताने के लिये किया गया है ।

इसके बाद गुरुजी पुन: ईश्वर के गुणगान में प्रवृत्त हुए । आगे के चार शेरों में (अशआर में) गुरुजी ने ईश्वर की अपने ऊपर कृपा का वर्णन किया है और भक्तितन्मय हृदय से उसकी महिमा का गान किया है । यहाँ ईश्वर के स्तवन में बार बार पुनरुक्ति हुई है लेकिन प्रभु कीर्त्तन में पुनरुक्ति दोष नहीं मानना चाहिये ।

**Thou art complaisant in being king of kings, O Aurangije
In being an old hand holding lash and reins.**

(۱۰۹) کہ حسن الجمال است و روشن ضمیر
خداوند ملک است و صاحب امیر

कि हुस्नुल जमालस्तो रौशन ज़मीर ।
खुदाबन्दे मुल्कस्तो साहिब अमीर ।।१०९।।

कि=कि

हुस्नुल जमालस्त=सौन्दर्य की छवि है

रौशन ज़मीर=प्रकाशवान हृदयवाला है ।

खुदावन्द=स्वामी

एमुलकस्त=देश का है

साहिब=स्वामी

अमीर=शासक

सौन्दर्य स्य छविः सोस्ति ज्योतिश्चेता स वै स्मृतः ।
देशानां च पतिः सैव स्वामी सैव स वै प्रभुः ॥१०६॥

वह रूप में सौन्दर्य है, ज्योतित हृदय वाला है । वह देशों का स्वामी है, स्वामी है और प्रभु है ।

(यहाँ गुरुजी का अभिप्राय है कि जैसा तू अपने आपको शाहों का शाह और चतुर तथा स्थिति का नियामक मानता है, हे औरंगजेब तू नहीं, बल्कि परमात्मा ही सब कुछ है, उसी की छवि से सुन्दर व्यक्ति रूप मान हैं, वही पृथ्वी का स्वामी है और वही एक मालिक ऐसा है जो नमस्य है । तू जो अपने आपको शाहानेशाह आदि मानता है वह ग़लत है ।)

**It's He who's beauty of beauty and light of heart,
The Lord of the land and the chief of chiefs.**

(۱۱۰) بہ ترتیبِ دانش - بہ تدبیرِ تیغ
خداوندِ دیگ و خداوندِ تیغ

बतरतीबे दानिश बतदबीरे तेग़ ।
ख़ुदावन्दे देग़ो ख़ुदावन्दे तेग़ ॥११०॥

बतरतीबे=सज्जा से

दानिश=ज्ञान (की)

बतदबीरे=चेष्टा से

तेग़=तलवार

ख़ुदावन्दे देग़ो=देग़ (धन पात्रों) का स्वामी और

ख़ुदावन्दे तेग़=तलवार (शस्त्रसम्पत्ति) का स्वामी

स युक्तः सज्जया बुद्धेरसेश्चापि बलेन वै ।
विधाता सर्वथार्थानामसेश्चापि स वै प्रभुः ।।११०।।

वह बुद्धि की सज्जा से और तलवार की चेष्टा से (संयुक्त है ।) वह देग (सम्पत्ति) का और तेग़ (शस्त्रबल) का भी मालिक है ।

**By way of wisdom and by means of sword,**
**He is the lord of viands and lord of sword.**

(۱۱۱) کہ روشن ضمیر است و حسن الجمال
خداوند بخشندهٔ ملک و مال

कि रौशन ज़मीरस्त हुस्नुल जमाल।
ख़ुदावन्दे बख़्शिन्द ए मुल्को माल ॥१११॥

कि=कि

रौशन ज़मीरस्त=प्रकाशवान् हृदय वाला है

हुस्नुल जमाल=सौन्दर्य की छवि है

खुदावन्द=ईश्वर

बाख़्शिन्द ए=देनेवाला है

मुल्क=देश, राज्य

ओ माल=और धन

ज्योतिश्चेता पुनः सोऽस्ति कोटि कन्दर्प मर्द्दनः ।
विधाता सोऽस्ति दाता च देशस्य च धनस्य च ॥१११॥

वह रौशन (प्रकाशित) हृदय वाला है और सुन्दरों में सुन्दर है।
वह विधाता है और देश और धन का देने वाला है।

**He is of lightened heart and th' grace of form**
**God is the source of th' empire and the wealth.**

(۱۱۲) که بخشش کبیر است در جنگ کوه
ملائک صفت چون ثریا شکوه

कि बख़्शिश कबीरस्त दर जंगे कोह।
मलायक सिफ़त चो सुरैया शिकोह ॥११२॥

कि=कि
बख़्शिश=दान
कबीरस्त=महान है
दर=में
जंगे कोह=पहाड़ी युद्ध में
मलायक सिफ़त=फ़रिश्तों की सी सिफ़त (विशेषता) वाला
चो=तुल्य
सुरैया=सप्तर्षि मण्डल (फ़ारसी में सप्तर्षि मण्डल तारा समूह को सुरैया कहा जाता है–और स्त्रीलिंग में उसकी गणना होती है)
शिकोह=शानवाला।

पर्वतीयैश्च संग्रामे तस्य दानमभून्महत् ।
सोऽस्ति सर्वगुणोपेतः सप्तर्षिमण्डलप्रभः ॥११२॥

पहाड़ी युद्ध में उसका दान (परमात्मा की कृपा से विजय प्राप्ति रूपी) महान था। वह समस्त अच्छे गुणों से पूर्ण और सप्तर्षि तारा मण्डल की शान वाला है। (यहाँ पहाड़ी राजाओं से युद्ध और परमात्मा की कृपा से उन पर विजय प्राप्ति का हवाला दिया गया है।)

**His gift was great in the battle of the bills.**
**It's angelic and grand as th' Plough aloft.**

(۱۱۳) شہنشاہِ اورنگ زیب لعیں
زِ دارائی دُور است و دُور است دیں

शहंशाहे औरंगज़ेबे लईन ।
ज़ि दारा ए दूरस्त दूरस्त दीन ॥११३॥

शाहंशाहे=राजाधिराज

औरंगज़ेबे=औरंगज़ेब

लईन=लानती, धिक्कृत, अभिशप्त (है)

ज़िदारा=दारा (न्याय) से

दूरस्त=दूर है

दूरस्त=दूर है

दीन=धर्म (से)

राजाधिराज सोपाधिं प्राप्यापि चासि धिक्कृतः ।
न्यायादपाकृतस्त्वं हि धर्मतोऽपि तिरस्कृतः ॥११३॥

ऐ औरंगज़ेब ! तू शाहन्शाह होकर भी धिक्कार का पात्र है । क्योंकि तू न्याय से दूर है तथा धर्म से भो दूर है ।

**O Emperor Aurangjeb thou art cursed. For, thou art far from Justice and the Faith.**

मनम् कुश्ते अम् कोहियाँ पुर फ़ितन ।
कि आँ बुत परस्तन्दो मन बुत शिकन ।।११४।।

मनम=मैंने (संस्कृत–मत, मन्=फ़ारसी मन्)
कुश्ते=मारा (संस्कृत–शसित=संस्कृत–कुश्त)
अम=हूँ (संस्कृत–अस्मि=फ़ारसी–अम्)
} मैंने मारा है

कोहियाँ=पहाड़ियों, पहाड़ी राजाओं को (केसरीचंद, अजमेरी चंद, हरि चंद आदि)

पुर फ़ितन=फ़ितना (चालाकी) से भरे हुए

कि आँ=वे

×बुतपरस्तन्दो=मूर्त्तिपूजक और

मन=मैं

★बुत शिकन=मूर्त्ति भञ्जक

×गुरुजी ने यहाँ दिल्ली के बादशाह आलमगीर औरंगज़ेब को बुत कहा है जोकि मूर्त्ति की तरह दिल्ली में बैठा हुआ सबकी पूजा ग्रहण करता है ।

★गुरुजी ने अपने आपको, ऐसे दूसरे भगवान बने हुए दिल्लीश्वर रूपी बुत को तोड़ने वाला कहा है ।

हतवानस्मि तान् धूर्त्तान् पर्वतीयान् महीभुजान् ।
दिल्ली देवास्त आसन् वै वयं देव विडम्बनाः ॥११४॥

मैंने धूर्त्त पहाड़ी राजाओं (केसरी चन्द, अजमेरी चन्द, हरि चन्द आदि) को मारा है। वे दिल्ली के देवता के पूजक थे और मैं उस प्रतिमा का भंजक हूँ।

**I did to death the wicked hill-chieftains,**
**For, they worshipped th' idol I'm out to smash.**

(۱۱۵) ببیں گردشِ بیوفائے زماں
بپسِ پشت اُفتد۔رساندزیاں

बिबीं गर्दिशे बेवफ़ाए ज़माँ ।
पसे पुश्त उफ़्तद रसानद ज़ियाँ ॥११५॥

बिबीं=देख

गर्दिश=चक्कर

ए बेवफ़ाए ज़माँ=बेवफ़ा समय का, क्रूर काल का

पसे पुश्त=पीठ पर (संस्कृत–पृष्ठ=फ़ारसी–पुश्त)

उफ़्तद=पड़ते हैं (संस्कृत–उत्पतति=फ़ारसी–उफ़्तद)

रसानद=पहुँचाते हैं

ज़ियाँ=हानि

पश्य निर्घृण कालस्य चक्रं भ्रमति चानिशम् ।
पश्चाद् द्विषत आयन्ति भूयो घातं च कुर्वते ॥११५॥

निर्दय समय का चक्कर देख । (दुश्मनों ने) पीठ पीछे से हमला किया और हानि पहुँचाई ।

**Behold the rotation of Faithless Time,**
**They came from behind to incur a loss.**

(۱۱۶) ببیں قدرت نیک یزدانِ پاک
کہ از یک بہ دہ لک رساند ہلاک

बिबीं क़ुदरते नेक यज़्दाने पाक।
कि अज़ यक ब दहलक रसानद हलाक ।।११६।।

बिबीं=देख
क़ुदरत=प्रकृति, लोला
नेक=भली, दयामयी
यज़्दाने पाक=पवित्र परमात्मा
कि=कि
अजयक=एक से
ब दह लक=दस लाख से
रसानद=पहुँचाता है } वध कराता है (णिजन्त प्रयोग)
हलाक=वध }

अपि पश्य पवित्रस्य प्रभोर्लीला दयान्विताम् ।
विघातयति चैकेन दशलक्षाणि प्रत्युत ॥११६॥

पवित्र प्रभु की नेक (दयामयी) लीला को देख। कि एक (आदमी) से (वह) दस लाख का वध करवाता है।

**And yet behold the scheme of Holy God,**
**He did to death a million by the one.**

(۱۱۷) چہ دشمن کند مہربان است دوست
کہ بخشندگی کارِ بخشندہ اوست

चि दुश्मन कुनद महरबानस्त दोस्त।
कि बख़्शिन्दगी कारे बख़्शिन्दा ऊस्त ॥११७॥

चि=क्या

दुश्मन=शत्रु (संस्कृत–द्विषत्=फ़ारसी–दुश्मन)

कुनद=करता है, कर सकता है

महरबानस्त=महरबान है

दोस्त=मित्र, भगवान

कि=कि

बख़्शिन्दगी=दानशीलता

कारे=कार्य है

बख़्शिन्दा=दानी (का)

ओस्त=उसका

द्विषतः किन्तु कुर्वन्ति कुर्याच्चेत्स सहायताम् ।
उदारता यतस्तस्य ह्युदारस्य विशेषता ॥११७॥

अगर दोस्त (परमात्मा) महरबान हो तो दुश्मन क्या कर सकता है । क्योंकि दानशीलता, उदारता उस उदार–दाता का काम है ।

**What can foe do if Favourer is friend,**
**For, to grant boons is the work of Grantor.**

(۱۱۸) رہائی دِہ و رہنمائی دِہد
زباں را صِفت آشنائی دِہد

रिहाई दिहो रहनुमाई दिहद ।
ज़बाँ रा सिफ़त आशनाई दिहद ॥११८॥

रिहाई दिह+ओ=रिहाईमुक्ति- देने वाला और

रहनुमाई=पथप्रदर्शन

दिहद=दिया

ज़बाँरा=जिह्वा को

सिफ़त=क्षमता, योग्यता

आशनाई=प्रशंसा, गुणगान, कीर्त्तन

दिहद=दी

मुक्तिर्मह्यं ददौ सैव पन्थास्तेनैव दर्शितः ।
जिह्वायै गुणगानस्य क्षमतां सैव दत्तवान् ॥११८॥

उसने (मुझे) रिहाई (मुक्ति) दी (उसने मुझे) मार्ग दिखाया (और मेरी) जिह्वा को गुणगान करने की सामर्थ्य दी ।

He granted me release and gave guidance,
And gave my tongue th' quality to sing praise.

(۱۱۹) عدو را چوں کور او کند وقتِ کار
یتیماں بروں برد بے زخمِ خار

उदू रा चुँ कोर ऊ कुनद वक्ते कार ।
यतीमाँ बरूँ बुर्द बे ज़ख़्मे खार ॥११९॥

उदू रा=दुश्मन के लिये
चुँ=जबकि
कोर=अँधेरा
ऊ=वह
कुनद=करता है
वक्ते कार=काम के समय
यतीमाँ=अनाथों को
बेरूँ=बाहर
बुर्द=ले गया
बे ज़ख्म=बिना घाव
ए खार=काँटे का

शत्रवे संकटापन्ने काले स तिमिरं ददौ ।
अनाथांश्चाक्षताँश्छत्रोः कटकात् स बहिर्दधौ ॥११६॥

दुश्मन के लिये उसने काम (संकट) के समय अँधेरा किया और यतीमों (अनाथों-जिनका कोई रक्षक नहीं था । अपने और अपने पाँच सिक्खों की ओर इशारा है) को कांटे का भी ज़ख़्म लगे बिना वह बाहर ले आया ।

**He benightened the foe in th' hour of need,**
**And brought us off without a prick of thorn.**

(۱۲۰) ہر آں کس کز و راستبازی کند
رحیمے برو رحم سازی کند

हर आँ कस कज़ू रास्तबाज़ी कुनद ।
रहीमे बरू रहमसाज़ी कुनद ॥१२०॥

हर=प्रत्येक

आँ=वह

कस=कोई

कज़ू (कि+अज़+ऊ)=जो कि उससे

रास्तबाजी=सच्चाई, ईमानदारी, वफ़ादारी

कुनद=करता है

रहीमे=रहम करने वाला वह, दयालु भगवान

बरू=(बर+ऊ)=उस पर

रहमसाजी=कृपालुता

कुनद=करता है

ये चापि भगवन्तं वै श्रद्धाना उपासते ।
परमात्मा सदा तेषु दयाबुद्ध्यैव वर्त्तते ॥१२०॥

हर वह आदमी जो उससे (परमात्मा से) वफ़ादारी करता है । वह कृपालु (भगवान्) उस पर दया करता है ।

**He who remaineth faithful unto Him,**
**The Merciful doth mercy upon him.**

(۱۲۱) کسے خدمت آید بسے قلب و جاں
خداوند بخشید برا و اماں

कसे ख़िद्‌मत आयद बसे क़ल्बोजाँ ।
ख़ुदावन्दे बख़्शीद बर ऊ अमाँ ॥१२१॥

कसे = कोई

ख़िदमत = सेवा

आयद = आता है

बसे = बहुतों की

क़ल्ब = हृदय

जाँ = जान

बख़्शीद = बख़्शता है

बर ऊ = उस पर

अमाँ = शान्ति, स्वस्ति

शुश्रूषते बहून् यश्च मनसा कर्मणा यदि ।
भगवान् ददाति वै तस्मै शान्तिं स्वस्तिं च शाश्वतीम् ॥१२१॥

यदि कोई बहुतों की हृदय और प्राण से सेवा करे तो ईश्वर उसको शान्ति और स्वस्ति प्रदान करता है ।

**He who serves the many with heart and soul,**
**God bestows on him the eternal peace.**

(۱۲۲) چوں دشمن بر آں حیلہ سازی کند
بر او خود خدا چارہ سازی کند

चुँ दुश्मन बराँ हीलासाज़ी कुनद ।
बरू खुद खुदा चारासाज़ी कुनद ॥१२२॥

चुँ=जब

दुश्मन=शत्रु

बर ऑं=उस पर (उससे–ईश्वर भक्त से)

हीलासाज़ी=चालाकी, धर्तता

कुनद=करता है

बरू (बर+ऊ)=उस पर (उसकी-उस ईश्वर भक्त की)

खुद=स्वयं

खुदा=ईश्वर

चारासाजी=चिकित्सा, सहायता

कुनद=करता है

अरातयो यदा तेन साकं कुर्वन्ति धूर्त्तताम् ।
स्वयमेव प्रभुस्तस्मिन्नावहेत सहायताम् ॥१२२॥

जब शत्रु उस (ईश्वर भक्त) से चालाकी करता है तो भगवान् स्वयं उसकी सहायता करता है ।

If enemy intrigueth against him,
God himself on him passeth furtherance.

(۱۲۳) اگر بر یک آمد دہ و دہ ہزار
نگہبان اورا شود کردگار

अगर बर यक्क आमद दहो दह हज़ार।
निगह बान ऊ रा शवद किर्दगार ॥१२३॥

अगर=यदि

बर=पर, के ऊपर }
यक=एक } एक के ऊपर

आमद=आते हैं, आये

दहोदह=दस गुणा दस, सौ

हज़ार=सहस्र

निगहबान=रक्षक

ऊरा=उसका

शवद=होता है

किर्दगार=विधाता, परमात्मा

एकाकिनं समाक्रान्तुं लक्षाणि यदि यन्त्यथ ।
तस्यत्राता भवेन्नूनं सर्वस्य जगतः पतिः ॥१२३॥

अगर एक (आदमी) पर (हमला करने के लिये) आते हैं लाख । तो उसका निगहबान (रक्षक) भगवान होता है ।

**If a million men fall upon the one,
His protector becomes the providence.**

(۱۲۴) ترا گر نظر است بر فوج و زر
بما را نگہ است یزداں نگر

तुरा गर नज़र अस्त बर फ़ौजो ज़र।
ब मारा निगह अस्त यज़्दाँ निगर ॥१२४॥

तुरा=तेरी

गर=अगर, यदि

नजर=दृष्टि

अस्त=है

बर=पर
फ़ौजो ज़र=सेना और धन } सेना और धन पर (ज़र=सोना, फलितार्थ में धन)

ब मारा=मेरे साथ

निगह=दृष्टि

अस्त=है

यज़्दाँ निगर=ईश्वर को (की ओर) देखने वाली।

दृष्टिराश्रयते ते हि पृतनामथवा धनम् ।
विद्यते हि मया सार्धं दृष्टिरीश्वर-दर्शिनी ॥१२४॥

तेरी नज़र अगर सेना और सोने पर है, तो मेरे साथ ईश्वर को देखने वाली आँख है।

**Thou lookest to the army end the wealth,**
**Whereas I have the eye that look God.**

(۱۲۵) کہ اورا غرور است بر ملک و مال
بہ مارا پناہ است یزداں اکال

कि ऊ रा ग़ुरूरस्त बर मुल्को माल ।
ब मारा पनाहस्त यज़्दाँ अकाल ॥१२५॥

कि=कि

ऊरा=उसका

ग़ुरूरस्त=गर्व है

बर=पर, के ऊपर

मुल्कोमाल=राज्य और सम्पत्ति

बमारा=मेरे साथ

पनाहस्त=शरण है

यज़्दाँ अकाल=अकाल पुरुष, अकाल भगवान,
(अकाल=कालातीत भगवान)

सोऽस्ति राज्य धनैश्वर्य प्रभुता मद गर्वितः ।
अकाल पुरुषो ह्येको विद्यते शरणं मम ॥१२५॥

कि उसको देश (पर शासन करने) का और धन का गर्व है ।
मेरे साथ अकाल पुरुष की शरण है ।

**Thou take'st a pride in th' Empire and the wealth,**
**But I have on me the shelter of God.**

(۱۲۹) تو غافل مشو زیں سپنجی سرا
کہ عالم بگذرد سرے جا بجا

तु गाफ़िल मशौ ज़ीं सिपञ्जी सरा ।
कि आलम बिगुज़रद सरे जा बजा ॥१२६॥

तु=तू
ग़ाफ़िल=प्रमत्त, बेहोश
म शौ=मत हो
ज़ीं (अज़+ईं)=इससे
सिपञ्जी=नाशवान्
सरा=सराय (दुनिया)
कि=कि
आलम=दुनियां
बिगुज़रद=गुज़रती जाती है
सरे=सिर के ऊपर, स्पष्टतया
जा बजा=जगह जगह से

एतस्मिन्नश्वरे विश्वे परिवर्त्तिनि मा मदः।
जगत्क्राम्यति साक्षाद्धि स्तोकं स्तोकं शनैः शनैः ॥१२६॥

इस नाशवान सराय (रूपी दुनियाँ) से तू ग़ाफ़िल (प्रमत्त) मत हो क्योंकि जगत् निरन्तर गुज़ारता जा रहा है।

**Be not remiss in this Transient Serai,**
**For the world is all over in a flux.**

कुजा शाहे कैखुसरोओ जामे जम ।
कुजा शाहे आदम सुपुर्दे अदम ॥१२७॥

कुजा=कहाँ (संस्कृत–क्व च=फ़ारसी–कुजा)
शाह कख़ुसरो=कैख़ुसरो नामक ईरान का एक प्रसिद्ध राजा
ओ=और
जामे जम=जमशेद का प्याला (जिसमें त्रिकाल की घटनाएं दिखलाई पड़ती थीं)
कुजा=कहाँ
शाहे आदम=आदम राजा (संभवतः यहाँ हजरत आदम को शाहे आदम कहा गया हैं जोकि यहूदी, ईसाई और इस्लामी पुराण के अनुसार सृष्टि के आदि पुरुष थे।)
सुपुर्दे अदम=मौत को सौंपे हुए

क्वास्ति कैकुसरो राजा यमसेधः स पात्रवान् ।
आदिमः स नृपः क्वास्ति यश्च मृत्युमुपागतः ॥१२७॥

कैखुसरो राजा कहाँ है, जमशेद राजा का प्याला कहाँ है । हज़रत आदम कहाँ है जोकि मौत को सुपुर्द कर दिये गये ।

**Where is king Kaikhusro and bowl of Jamshed.**
**Where doth king Adam rest plucked by the Death.**

(۱۲۸) فریدوں کجا بہمن اسفندیار
نہ انقلابِ دارا در آمد شمار

फ़रेदूँ कुजा बहमन इस्फ़न्दयार ।
न इन्क़लाबे दारा दरामद शुमार ॥१२८॥

फ़रेदूँ=फ़रेदूँ नाभक ईरानी राजा

कुजा=कहाँ (है)

बहमन=एक पहलवान

अस्फ़न्दयार=एक और ऐतिहासिक राजा

न=नहीं

इन्क़लाब=क्रान्ति, उत्थान और पतन

ए दारा=दारा का

दरामद=आती है

शुमार=गणना (में)

क्वास्ति राजा परेधूनः, ब्राह्मणः स्पन्दहारकः ।
नोत्थान-पतनं दारा राजस्याङ्कितुमर्हति ।।१२८।।

फ़रेदूँ कहाँ है, बहमन और इस्फ़न्दयार कहाँ है, (समय के इस आवर्त्त में) दारा का उत्थान पतन किसी गिनती में नहीं आता ।

**Where is Faredoon, Bahman or 'Sfandiar ?**
**The Rise and Fall of Darius's to no 'count.**

(۱۲۹) کجا شاہ اسکندرو شیر شاہ
کہ یک ہم نماند است زندہ بجاہ

कुजा शाह इस्कन्दरो शेरशाह ।
कि यक हम न माँदस्त ज़िन्दा बजाह ॥१२६॥

कुजा=कहाँ

शाह इस्कन्दर=सिकन्दर महान (मेसीडोनिया का राजा)
(संस्कृत में अलक्षेन्द्र, अलक सुन्दर, असिकन्दर, यूनानी में ऐलेक्ज़ेन्डर)

ओ=और

शेरशाह=शेरशाह सूरी

कि=कि

यक=एक

हम=भी

न माँदस्त्=नहीं रहा है

ज़िन्दा=जीवित

बजाह=अपनी जगह पर, अस्खलित

क्व चास्ति सम्राडलक्षेन्द्रः शेरशाहः क्व वा गतः ।
एकोऽपि जीवितो नास्ति ह्यासनाच्चापरिच्युतः ॥१२६॥

सिकन्दर बादशाह कहाँ है, शेरशाह कहाँ है । एक भी जीवित और स्थान पर अच्युत नहीं है ।

**Where is king Alexander and Shershah Soor?**
**Ah ! not the one is left alive, in place.**

(۱۳۰) کجا شاہِ تیمور و بابر کجاست
ہمایوں کجا، شاہِ اکبر کجاست

कुजा शाहे तैमूरो बाबर कुजास्त ।
हुमायूँ कुजा, शाह अकबर कुजास्त ॥१३०॥

कुजा=कहाँ

शाह तैमूर=मुग़लवंश का संस्थापक तैमूर लंग

बाबर=हिन्दुस्तान में मुग़लवंश का संस्थापक बाबर

कुजास्त=कहाँ है (संस्कृत–क्व चास्ति=फ़ारसी कुजास्त)

हुमायूँ=हुमायूँ बादशाह, बाबर का पुत्र, अकबर का पिता

शाहे अकबर=अकर महान्

कुजास्त=कहाँ है

तैमूरः पङ्गलः क्वास्ति क्वास्ति बर्बरको नृपः ।
हुमायूँ नृपतिः क्वास्ति नृपो ह्यकबरः क्व च ॥१३०॥

आज तैमूर लंग कहाँ है, बाबर कहाँ है, हुमायूँ कहाँ है और अकबर बादशाह कहाँ है ।

**Where is king Taimur, Where is king Babar.**
**Where is Humayan, or Akbar the great.**

(۱۳۱) ببیں گردشِ بےوفائے زماں
کہ برہر بگذرد مکین و مکاں

बिबीं गर्दिशे बेवफ़ाए ज़माँ ।
कि बर हर बिगुज़रद मकीनो मकाँ ॥१३१॥

बिबीं=देख

गर्दिशे=चक्कर

बेवफ़ाए ज़माँ=क्रूरकाल (का)

कि=कि

बर हर=हर एक पर

बिगुज़रद=गुज़रता है

मकीन=मकान का निवासी, जीव

मकाँ=मकान, शरीर

पश्य निर्घृण कालस्य चक्रं भ्रमति चानिशम् ।
अवश्यं परिवर्तेत जीवो देहं गृही गृहम् ॥१३१॥

ज़माने (समय) की बेवफ़ाई का चक्कर देख कि हर एक पर (समय समय पर) जीव (गृही) और देह (गृह) बदलते जाते हैं ।

**Behold the rotation of Faithless Time,**
**For changeth all o'er th' dweller and the home.**

(۱۳۲) تو گر جبر عاجز خراشی کنی
قسم را بہ تیشہ تراشی کنی

तु गर जब्र आजिज़ ख़राशी कुनी ।
क़सम रा बतेशा तराशी कुनी ॥१३२॥

तु=तू

गर=अगर, यदि

जब्र आजिज़=अत्याचार से दुर्बल

ख़राशी=सताना

कुनी=करता है

क़सम रा=क़सम को

ब तेशा=आरी से

तराशी=चीरना

कुनी=करता है

अथवा त्वं हि दीनस्य कुर्वीथाः पीडनं यदि ।
स्वयमेव छिनत्सि त्वं शपथं परमात्मनः ॥१३२॥

और तू यदि दीन दुर्बल को सताता है तो भगवान की क़सम को आरी से चीरता है ।

If molest'st thou the depressed and despised.
Thou art using a saw against thy oath.

(۱۳۳) حقے یار باشد چہ دشمن کند
اگر دشمنی را بصد تن کند

हक़े यार बाशद चि दुश्मन कुनद ।
अगर दुश्मनी रा ब सद तन कुनद ॥१३३॥

हक़=सत्य, अधिकार, न्याय (स्वरूप परमात्मा)

यार=मित्र

बाशद=हो

चि=क्या (संस्कृत-किम्)

दुश्मन=शत्रु

कुनद=करता है, कर सकता है

अगर=यदि

दुश्मनीरा=शत्रुता के लिये

ब सद तन=सौ शरीरों से

कुनद=करे

भगवान यदि मित्रं स्याच्छत्रुः किं कर्त्तुमर्हति ।
अपि चेत् सशतैर्देहैः शत्रुतां च समाचरेत् ॥१३३॥

यदि भगवान् मित्र हो तो दुश्मन क्या कर सकता है । भले ही वह सौ शरीरों से दुश्मनी करले ।

**If Truth is friend what can the enemy do,**
**E'en if he falls out with a hundred ways**

(۱۳۴) عدو دشمنی گر ہزار آورد
نہ یک موئے اورا نزار آورد

उदू दुश्मनी गर हज़ार आवरद ।
न यक मूए ऊरा नज़ार आवरद ॥१३४॥

उदू=शत्रु
दुश्मनी=शत्रुता
गर=यदि
हज़ार=सहस्र
आवरद=लाता है, लावे (संस्कृत–आवहति=फ़ारसी–आवरद)
न=नहीं
यक=एक
मू=बाल
ऊरा=उसका
नज़ार=कमज़ोर
आवरद=लाता है ।
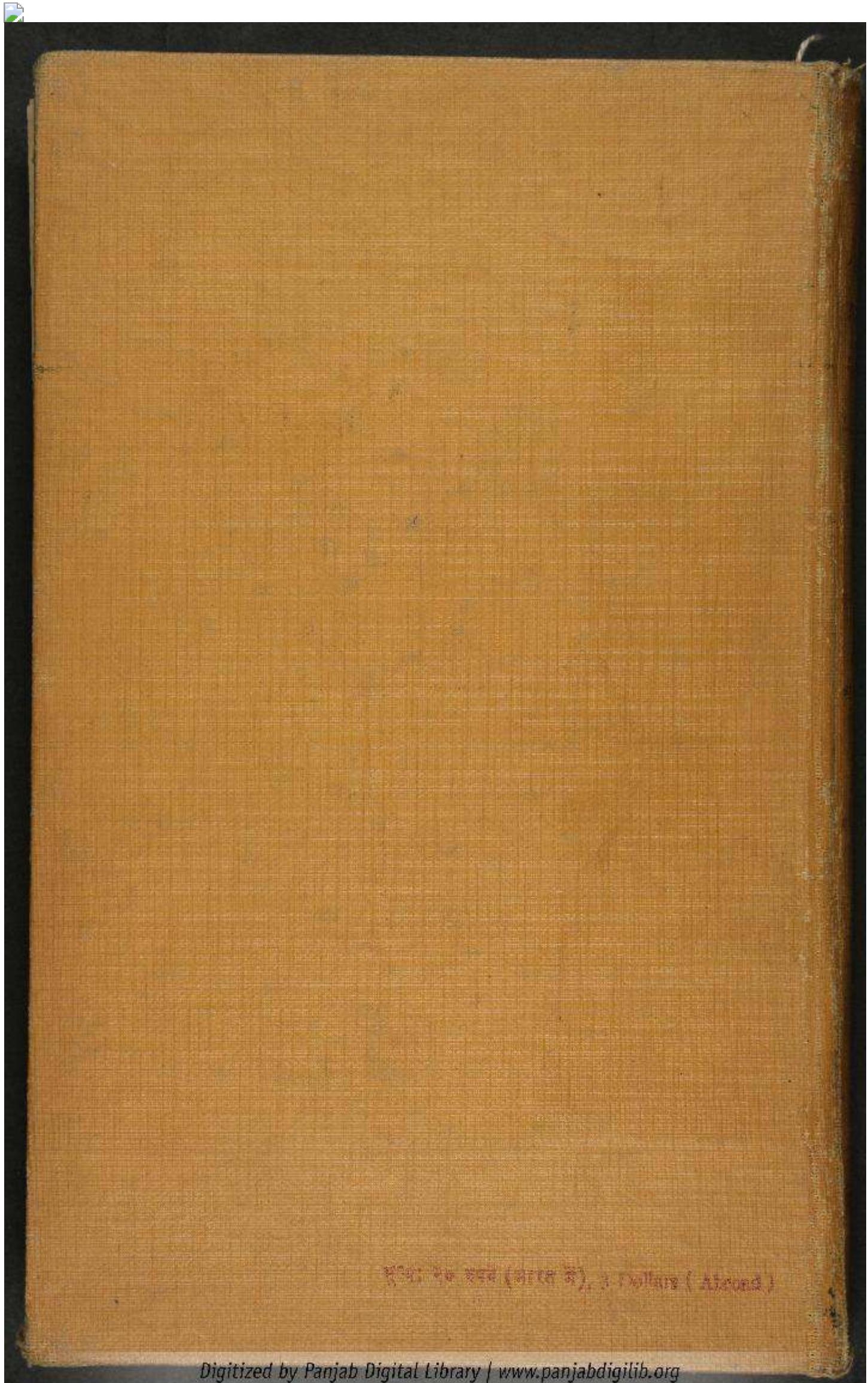
अमित्रं यदि विद्वेषमावहेत सहस्रधा ।
केशमेकं न वा तस्य शक्नोति कोऽपि खण्डितुम् ॥१३४॥

शत्रु यदि हज़ार (तरह से) दुश्मनी करे तो भी उसका (ईश्वर की कृपा से युक्त व्यक्ति का) एक भी बाल कोई नहीं कमज़ोर कर सकता ।

**Th' Enemy may bear malice in a thousand ways.**
**Yet not a hair of** his **is put to twitch.**

( his=**that of the votary of The Truth** )